जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर

चित्र केवल परिचयार्थ : 14 पूर्व रूप समुद्र के महामंथन से प्रकट नमस्कार महामंत्र की स्तुति एवं गुण कीर्तन करते हुए देवेन्द्र आदि अपने को धन्य मान रहे हैं।

2024 जनवरी JANUARY

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY, CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत्: 2080 | वीर निर्वाण संवत्: 2550 | जय संवत्: 228 | जैन पंचमाहक संवत्: 2546

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	पुष्य नक्षत्र 25 जनवरी, गुरुवार, प्रातः 8.15 बजे से 26 जनवरी, शुक्रवार, प्रातः 10.27 बजे तक	विशाखा २२/०६ वृश्चिक १५/५९ **7** पौष वद ११-२४/४६	धनिष्ठा १०/२० कुम्भ **14** पौष सुद ३/४-८/००-२९/००	रोहिणी २७/४९ वृषभ **21** पौष सुद ११-१९/२७	मघा १५/४९ सिंह **28** माघ वद ३-३०/०९
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	मघा ८/३३ सिंह **1** पौष वद ५-१४/२८	अनुराधा २२/०१ वृश्चिक **8** पौष वद १२-२३/५९	शतभिषा ८/०५ मीन २४/३५ **15** पौष सुद ५-२६/१७	मृगसिरा २८/५६ मिथुन १६/२० **22** पौष सुद १२-१९/५२	पूर्वा फाल्गुनी १८/५२ कन्या २५/३९ **29** माघ वद ४
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	पूर्वा फाल्गुनी ११/४० कन्या १८/२७ **2** पौष वद ६-१७/११	ज्येष्ठा २१/०९ धनु २१/०९ **9** पौष वद १३-२२/२५	उत्तरा भाद्रपद २८/३६ मीन **16** पौष सुद ६-२३/५९	आर्द्रा ३०/२४ मिथुन **23** पौष सुद १३-२०/४०	उत्तरा फाल्गुनी २२/०१ कन्या **30** माघ वद ४-०८/५२
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	उत्तरा फाल्गुनी १४/४५ कन्या **3** पौष वद ७-१९/५०	मूल १९/३८ धनु **10** पौष वद १४-२०/१२	रेवती २७/३२ मेष २७/३२ **17** पौष सुद ७-२२/०८	पुनर्वसु कर्क २५/४५ **24** पौष सुद १४-२१/५२	हस्त २५/०३ कन्या **31** माघ वद ५-११/३५
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	हस्त १७/३२ तुला ३०/५५ **4** पौष वद ८-२२/०७	पूर्वाषाढ़ा १७/३७ मकर २३/०४ **11** पौष वद ३०-१७/२८	अश्विनी २६/५६ मेष **18** पौष सुद ८-२०/४६	पुनर्वसु ८/१५ कर्क **25** पौष सुद १५-२३/२५	**पंचक** 13 जनवरी, शनिवार, रात्रि 11.33 बजे से 17 जनवरी, बुधवार, अर्धरात्रि उपरान्त 3.32 बजे तक
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	चित्रा १९/४८ तुला **5** पौष वद ९-२३/४८	उत्तराषाढ़ा १५/१७ मकर **12** पौष सुद १-१४/२४	भरणी २६/४८ मेष **19** पौष सुद ९-१९/५२	पुष्य १०/२७ कर्क **26** माघ वद १-२५/२१	**शुभ दिन** 3, 6, 8, 9, 12, 13, 16, 17, 18, 22, 23, 25, 26, 31 **अशुभ दिन** 2, 4, 5, 7, 11, 14, 19, 20, 21
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	स्वाती २१/२१ तुला **6** पौष वद १०-२४/४३	श्रवण १२/४८ कुम्भ २३/३३ **13** पौष सुद २-११/१२	कृतिका २७/०६ वृषभ ८/५० **20** पौष सुद १०-१९/२६	आश्लेषा १२/५९ सिंह १२/५९ **27** माघ वद २-२७/३७	**अमृत सिद्धि योग** 22 जनवरी, सोमवार, मृगसिरा नक्षत्र, सूर्योदय से अर्धरात्रि उपरान्त 4.56 बजे तक; 25 जनवरी, गुरुवार, पुष्य नक्षत्र, प्रातः 8.15 बजे से आगामी सूर्योदय तक

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

जनवरी	1	6	11	16	21	26	31
सूर्योदय	6.32	6.33	6.35	6.36	6.36	6.36	6.36
सूर्यास्त	5.54	5.56	5.59	6.02	6.05	6.07	6.09
नवकारसी	7.20	7.21	7.23	7.24	7.24	7.24	7.24
पोरसी	9.22	9.23	9.26	9.27	9.28	9.28	9.29

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

6. पार्श्व जिन जन्म, 7. पार्श्व जिन दीक्षा, 8. चन्द्रप्रभ जिन जन्म, 9. चन्द्रप्रभ जिन दीक्षा, 10. शीतल जिन केवल, 16. विमल जिन केवल, 19. शांति जिन केवल, 21. अजित जिन केवल, 24. अभिनन्दन जिन केवल, आचार्य श्री पार्श्वचन्द्रजी म. सा. का 75वाँ जन्म-दिवस, मरुधर केसरी स्मृति दिवस, आचार्य श्री हस्तीमल जी म. सा. का जन्म-दिवस, 25. धर्म जिन केवल।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. नववर्ष प्रारम्भ, 7. सफला एकादशी व्रत, 9. प्रदोष, 12. स्वामी विवेकानन्द जयंती, 13. पंचक प्रारम्भ, लोहडी (पंजाब), 14. मकर संक्रान्ति प्रवेश, 15. मकर संक्रान्ति पुण्य, पोंगल, 17. पंचक समाप्ति, 21. पुत्रदा एकादशी व्रत, 23. प्रदोष, नेताजी सुभाषचंद्र बोस जयंती, 25. माघ स्नानारम्भ, 26. गणतंत्र दिवस, 28. सौभाग्य सुंदरी व्रत, 30. गांधी पुण्यतिथि।

अवकाश

1. नववर्ष प्रारम्भ (ऐं), 13. लोहड़ी (पंजाब) (ऐं), द्वितीय शनिवार, 15. मकर संक्रान्ति, पोंगल, 17. गुरु गोविंद सिंह जयंती, 26. गणतंत्र दिवस, 27. चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

10. पाक्षिक पर्व, 25. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रातः											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रातः											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30	31		
प्रातः											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

2024 का वार्षिक राशिफल

1. मेष लग्न राशि (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। घर परिवार में मांगलिक, शुभ कार्य व धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। राजनीतिज्ञों को अपने-अपने क्षेत्र में पूर्ण समर्थन तथा उच्च पद की प्राप्ति संभव है।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: परिवर्तनकारी रह सकता है। आय तथा लाभ की स्थितियों में सुधार हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग को इच्छित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। राजनीतिज्ञों के लिए अच्छे अवसर तथा पद की प्राप्ति संभव है। व्यवसायियों में उच्च उद्यमियों को कार्य विस्तार का अवसर मिल सकता है।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: उच्च उपलब्धियों तथा सफलता का रह सकता है। राजकीय अधिकारियों को पद विशेष की प्राप्ति तथा उच्च व महत्वाकांक्षी पद पर नियुक्ति संभव है। विद्यार्थी वर्ग को अपने उद्देश्यों में उच्च सफलता की प्राप्ति हो सकती है।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: अनुकूल तथा सहायक रह सकता है। विवाह योग्य जातकों के विवाह तथा सगाई आदि की सम्भावनाएँ हैं। भौतिक सुख-सुविधाओं व संसाधनों की प्राप्ति संभव हो सकती है। राजकीय सेवा में नियुक्ति तथा कार्य करने का अवसर मिल सकता है।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सुविधाजनक तथा सकारात्मक रह सकता है। राजकीय अधिकारियों तथा कर्मियों को अपने कार्य क्षेत्र में अतिरिक्त अधिकार तथा सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है। विवाह योग्य जातकों के विवाह सगाई आदि शुभ तथा मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—इस काल में आपको सामान्य सावधानी तथा पारदर्शिता से काम लेना होगा। औद्योगिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में किसी बहुराष्ट्रीय संस्था से सम्बन्ध तथा साझेदारी संभव हो सकती है। आप जो भी निर्णय लें, उसमें बहुत सोच-विचार से सहमति प्रदान करें। आर्थिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में संतान पक्ष का पूर्ण सकारात्मक सहयोग प्राप्त हो सकता है।

उपाय व सुझाव—इस वर्ष राहु-केतु की स्थिति आपके विपरीत है। अत: इन ग्रहों की विधिवत् शांति जप व दानादि उपाय से करें-करावें तथा साथ ही उन्नत किस्म का सिंदूरी मूँगा तथा सफेद मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ नमो अरिष्टनेमि जिनाय नम: तथा ॐ ह्रीँ श्रीँ पार्श्व जिनाय नम: का नित्य जाप करें।

2. वृषभ लग्न राशि (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आय तथा लाभ की स्थितियों में आकस्मिक रूप से वृद्धि तथा विस्तार हो सकता है। आकस्मिक स्रोतों से धन की प्राप्ति हो सकती है। घर-परिवार में शुभ तथा मांगलिक व धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। इस काल में आपको भूमि, भवन व सम्पत्तियों के लेन-देन में सुविधा रह सकती है। व्यवसाय की स्थितियों में सुधार तथा भागीदारी की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। विवादास्पद मामलों में आपको सफलता मिल सकती है।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्य सुखद तथा संतोषप्रद रह सकता है। घर परिवार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिल सकता है तथा घरेलू स्तर पर अतिरिक्त जिम्मेदारी तथा दायित्व का निर्वहन करना पड़ सकता है। आर्थिक स्तर पर प्रयासों से बड़ी उपलब्धि मिल सकती है।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक रह सकता है। भूमि, भवन तथा अन्य सम्पत्तियों के मामलों में आपको सुविधा रह सकती है। नव वाहन तथा अन्य भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है। विवाह योग्य जातकों की वैवाहिक गतिविधियों मे आपसी बातचीत तथा सहमति बन सकती है।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर शुभ, मांगलिक तथा धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। बड़े उद्योगपतियों तथा व्यवसायियों की किसी बहुराष्ट्रीय प्रतिष्ठित संस्थान से जुड़ने तथा नव अनुबंध, समझौता आदि के प्रस्ताव पर सहमति बन सकती है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्य से सुखद तथा संतोषप्रद रह सकता है। आपको अपने कारोबारी, व्यावसायिक तथा आजीविका के क्षेत्र में अनेक अवसर मिल सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में लगे जातकों को अपेक्षित सफलता के साथ ही पद विशेष पर नियुक्ति संभव हो सकती है। विवाह योग्य जातकों के विवाह की सम्भावनाएँ बन सकती हैं।

उपाय व सुझाव—इस वर्ष आपके लिए राहु व गुरु की स्थिति नकारात्मक बनी है, अत: इन ग्रहों की शांति जप व दानादि उपाय से करें-करावे तथा साथ ही उन्नत किस्म का पन्ना तथा सफेद मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ ऋषभ जिनाय नम: का जाप करें।

3. मिथुन लग्न राशि (का, की, कू, के, को, घ, ङ, छ, ह)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सामान्यत: सुखद तथा संतोषप्रद रह सकता है। राजकीय सेवा में पद विशेष पर सेवा कार्य करने का अवसर मिल सकता है। आय तथा लाभ के क्षेत्र में आपको अपने प्रयासों से सफलता मिल सकती है। कार्य विस्तार तथा किसी महत्वाकांक्षी जिम्मेदारी को निभाने का अवसर मिल सकता है।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—इस काल में आपको सामान्यत: परिस्थितियों के साथ तालमेल बनाकर चलना होगा। उद्यमियों तथा उद्योगपतियों को अपने व्यवसाय तथा उद्योग को विस्तार देने के प्रयासों में सफलता तथा अपेक्षित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। विद्यार्थी वर्ग को अपने लक्ष्य की प्राप्ति तथा प्रतियोगी परीक्षा व साक्षात्कार में सफलता मिल सकती है।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आपको अपने प्रयासों से आर्थिक क्षेत्र में उच्च परिणाम तथा सफलता की प्राप्ति हो सकती है। अदालती मामलों में आपको अपेक्षित परिणाम मिल सकते हैं। किसी व्यक्ति विशेष का सहयोग कार्य सिद्धि में सहायक बन सकता है। व्यावसायिक प्रयोजनों से दूरस्थ तथा विदेश यात्राएँ संभव हो सकती हैं।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सुविधाजनक तथा सम्मानजनक रह सकता है। आपको आर्थिक प्रबंधन, उपायों तथा समायोजन में सफलता मिल सकती है। राजकीय उच्च अधिकारियों तथा राजनीतिज्ञों को अपने-अपने क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम तथा सफलताएँ मिल सकती हैं।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। संतान की शिक्षा-दीक्षा तथा संस्कारों पर ध्यान देना होगा। संतान-विषयक समस्याओं का सूझ-बूझ से निराकरण करें। भूमि, भवन व अन्य सम्पत्तियों का लेन-देन संभव हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सुविधा हो सकती है। भौतिक सुख-सुविधाओं का विस्तार हो सकता है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—इस काल में भाग्य पक्ष की अनुकूलता से आपको अपने आवश्यक कार्यों में सफलता मिल सकती है। पारिवारिक बुजुर्गों का सहयोग व समर्थन मिलने से आपकी बात को सुना जा सकता है। दूरस्थ तथा विदेश यात्राओं की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। यात्रादि में विशेष सावधानी व सतर्कता रखें।

उपाय व सुझाव—इस वर्ष आपके लिए गुरु व राहु की स्थिति नकारात्मक और बाधक बनी है। अत: इन ग्रहों की विधिवत् शांति जप व दानादि उपायों से करें-करावें, साथ ही उन्नत किस्म का मोती तथा सिंदूरी मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ ऋषभ जिनाय नम: तथा ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नम: का जाप करें।

4. कर्क लग्न राशि (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए आर्थिक प्रयोजन, उपायों व समायोजना में सहायक तथा सफलतादायक रह सकता है। पूँजीगत मामलों में आपको निरन्तर उच्चता की प्राप्ति हो सकती है। भौतिक सुख-सुविधाओं तथा संसाधनों पर व्यय हो सकता है। किसी निकट परिजन के उत्तराधिकारी के रूप में धन-सम्पत्ति तथा सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सुविधाजनक तथा सकारात्मक रह सकता है। अन्य स्रोतों से आय तथा लाभ की प्राप्ति हो सकती है। भाग्य पक्ष की अनुकूलता से आपके अब तक अटके कार्यों में सफलता मिल सकती है। घर-परिवार में शुभ, मांगलिक तथा धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—इस काल में आपको सामान्यत: आर्थिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में अपेक्षित तथा इच्छित परिणाम की प्राप्ति हो सकती है। राजकीय सेवा की तैयारी करने वाले जातकों को प्रतियोगी परीक्षा में इच्छित परिणामों की प्राप्ति तथा साक्षात्कार में सफलता के साथ-साथ नवनियुक्ति संभव हो सकती है।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—किसी निकट तथा मित्र के सहयोग से आर्थिक सुविधाओं का विस्तार हो सकता है तथा अतिरिक्त लाभ की प्राप्ति का योग बन सकता है। पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर किसी महत्वपूर्ण भूमिका को निभाने का अवसर मिल सकता है। सामाजिक स्तर पर सम्मानित किया जा सकता है।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—धार्मिक तथा आध्यात्मिक प्रयोजनों से दूरस्थ यात्राएँ तथा तीर्थाटन, पर्यटन आदि का अवसर मिल सकता है। धार्मिक, आध्यात्मिक महापुरुषों का संग-सान्निध्य तथा दर्शन लाभ का अवसर मिल सकता है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आकस्मिक स्रोतों से धन-लाभ की प्राप्ति हो सकती है। भौतिक सुख-सुविधाओं तथा संसाधनों की प्राप्ति का योग बन सकता है। विद्यार्थी वर्ग को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में किसी व्यक्ति विशेष का सहयोग सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। राजकीय विवादों तथा अदालती मामलों में आपके पक्ष को सुना जा सकता है।

उपाय व सुझाव—इस वर्ष आपके लिए शनि व राहु की स्थिति विशेष रूप से नकारात्मक बनी है। इन ग्रहों की विधिवत् शांति जप व दानादि उपाय से करें-करावें तथा साथ ही उन्नत किस्म का मोती तथा सिंदूरी मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ मुनिसुव्रत जिनाय नम: तथा ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नम: का जाप करें।

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम **जैन कैलेण्डर**

2024 फरवरी FEBRUARY

चित्र केवल परिचयार्थ : आचार्य श्री जयमल जी म. सा. आठ उपमाओं से उपमित श्री संघ की स्तुति करते हुए।

पद्मोदय जैन कैलेण्डर
JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY, CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत्:	वीर निर्वाण संवत्:	जय संवत्:	जैन पंचमारक संवत्:
2080	2550	228	2546

वार					
रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 21 फरवरी, बुधवार, मध्याह्न 2.16 बजे से 22 फरवरी, गुरुवार, सायं 4.43 बजे तक	अनुराधा वृश्चिक **4** माघ वद ९-१७/५१	शतभिषा १७/३६ कुम्भ **11** चन्द्र दर्शन माघ सुद २-२१/०९	रोहिणी ९/१९ मिथुन २१/५० **18** माघ सुद ९-०८/१५	पूर्वा फाल्गुनी २५/२० सिंह **25** फाल्गुन वद १-२०/३६
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	**पंचक** 10 फरवरी, शनिवार, प्रात: 9.58 बजे से 14 फरवरी, बुधवार, प्रात: 10.42 बजे तक	अनुराधा ७/५२ वृश्चिक **5** माघ वद १०-१७/२६	पूर्वा भाद्रपद १४/५४ मीन ९/३३ **12** माघ सुद ३- १७/४५	मृगसिरा १०/२९ मिथुन **19** माघ सुद १०-०८/४९	उत्तरा फाल्गुनी २८/२४ कन्या ८/०६ **26** फाल्गुन वद २-२३/१४
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	**शुभ दिन** 5, 7, 13, 15, 17, 19, 21, 22, 27, 28, 29 **अशुभ दिन** 4, 6, 9, 20, 23, 24, 25, 26	ज्येष्ठा ७/३३ धनु ७/३३ **6** मूल ३०/२४ माघ वद ११- १६/०८	उत्तरा भाद्रपद १२/३४ मीन **13** माघ सुद ४- १४/४४	आर्द्रा १२/१० मिथुन **20** माघ सुद ११-०९/५६	हस्त कन्या **27** फाल्गुन वद ३-२५/५०
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे		पूर्वाषाढ़ा २८/३४ धनु **7** माघ वद १२- १४/०२	रेवती १०/४२ मेष १०/४२ **14** माघ सुद ५- १२/१२	पुनर्वसु १४/१६ कर्क ७/४३ **21** माघ सुद १२-११/२९	हस्त ७/२६ तुला २०/५३ **28** फाल्गुन वद ४-२८/१६
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	चित्रा २७/४६ तुला १४/२८ **1** माघ वद ६-१४/०३	उत्तराषाढ़ा २६/१० मकर १०/०० **8** माघ वद १३- ११/१६	अश्विनी ९/२५ मेष **15** माघ सुद ६- १०/१५	पुष्य १६/४३ कर्क **22** माघ सुद १३-१३/२५	चित्रा १०/१६ तुला **29** फाल्गुन वद ५-३०/२१
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	स्वाती २९/५४ तुला **2** माघ वद ७-१६/०३	श्रवण २३/२५ मकर **9** अमावस्या पाक्षिक पर्व माघ वद १४/३०-०८/०१, २८/२७	भरणी ८/४५ वृषभ १४/४१ **16** माघ सुद ७-०८/५६	आश्लेषा १९/२५ सिंह ११/२५ **23** पाक्षिक पर्व माघ सुद १४-१५/३७	**अमृत सिद्धि योग** 17 फरवरी, शनिवार, रोहिणी नक्षत्र, प्रात: 8.43 बजे से आगामी सूर्योदय तक; 19 फरवरी, सोमवार, मृगसिरा नक्षत्र, सूर्योदय से प्रात: 10.29 बजे तक
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	विशाखा ३१/१९ वृश्चिक २५/०२ **3** माघ वद ८-१७/२२	धनिष्ठा २०/३० कुम्भ ९/५८ **10** माघ सुद १- २४/४६	कृतिका ८/४३ वृषभ **17** माघ सुद ८-०८/१६	मघा २२/१८ सिंह **24** पूर्णिमा माघ सुद १५-१८/०२	**अमृत सिद्धि योग** 22 फरवरी, गुरुवार, पुष्य नक्षत्र, सूर्योदय से सायं 4.43 बजे तक

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

फरवरी	1	6	11	16	21	26	29
सूर्योदय	6.36	6.35	6.33	6.32	6.29	6.27	6.26
सूर्यास्त	6.10	6.12	6.13	6.15	6.16	6.17	6.18
नवकारसी	7.24	7.23	7.21	7.20	7.17	7.15	7.14
पोरसी	9.29	9.29	9.28	9.27	9.25	9.24	9.24

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

1. पद्मप्रभ जिन च्यवन, 7. शीतल जिन जन्म, शीतल जिन दीक्षा, 8. ऋषभ जिन मोक्ष, 9. श्रेयांस जिन केवल, खद्दरधारी गुरु गणेश पुण्यतिथि, 11. अभिनन्दन जिन जन्म, वासुपूज्य जिन केवल, 12. धर्म जिन जन्म, विमल जिन जन्म, 13. विमल जिन दीक्षा, 17. अजित जिन जन्म, 18. अजित जिन दीक्षा, 21. अभिनन्दन जिन दीक्षा, 22. धर्म जिन दीक्षा, 27. आचार्य जीत स्मृति दिवस।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

6. षट्तिला एकादशी व्रत, 7. प्रदोष, 9. मौनी अमावस्या, 10. पंचक प्रारम्भ, 13. कुंभ संक्रान्ति, 14. बसंत पंचमी, पंचक समाप्ति, 20. जया एकादशी व्रत, 21. प्रदोष, 24. माघ स्नान पूर्ति।

अवकाश

10. द्वितीय शनिवार, 14. बसंत पंचमी, 24. गुरु रविदास जयंती, चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

9. पाक्षिक पर्व, 23. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रात:											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रात:											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29				
प्रात:											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

2024 का वार्षिक राशिफल

5. सिंह लग्न राशि (म, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सामान्यत: सुखद तथा सकारात्मक रह सकता है। आपको अपने आर्थिक प्रयोजनों, समायोजनों तथा उपायों में अपेक्षित सफलता मिल सकती है। विवाह योग्य जातकों के सगाई–विवाह सम्बन्ध आदि कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। बड़े उद्योगपतियों तथा उद्यमियों को अपने–अपने क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से साझेदारी कार्य–विस्तार का अवसर मिल सकता है।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: संतोषप्रद तथा सकारात्मक रह सकता है। राजकीय उच्च अधिकारियों तथा राज्यकर्मियों को अपने कार्यों के लिए पुरस्कृत तथा सम्मानित किया जा सकता है। आपसी सहमति बनने–बनाने के लिए सामान्य प्रयास करने पड़ सकते हैं।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—इस काल में आपको सामान्यत: अपने सभी प्रकार के कार्यों तथा निर्णय में विशेष सावधानी तथा सतर्कता से काम लेना होगा। राज्यकर्मियों तथा अधिकारियों को सामान्य असुविधाओं तथा अव्यवस्थाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपनी कार्य व्यवस्थाओं तथा योजनाओं में बदलाव करना पड़ सकता है।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आपको अपनी आर्थिक तथा सम्पत्तिजन्य प्रयोजना में इच्छित तथा अपेक्षित सफलता मिल सकती है। राज्यकर्मियों तथा उच्च अधिकारियों को प्रमोशन तथा अन्य आर्थिक तथा विभागीय सुविधाओं के लाभ प्राप्ति की संभावना है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आपको अपने कार्यों तथा योजनाओं में किसी व्यक्ति विशेष का सहयोग प्राप्त होने से लगातार सफलताएँ मिल सकती हैं। किसी पारिवारिक सदस्य के उत्तराधिकारी के रूप में धन–सम्पत्ति की प्राप्ति का योग बन सकता है। राज्यकर्मियों तथा अधिकारी वर्ग को अतिरिक्त कार्यभार मिलने की सम्भावनाएँ हैं।

उपाय व सुझाव—इस वर्ष आपके लिए गुरु व राहु की स्थिति नकारात्मक व बाधक बनी है तथा इन ग्रहों की विधिवत् शांति जप व दानादि उपाय से करें–करावें तथा साथ ही उन्नत किस्म का नीलम व सफेद मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ ऋषभ जिनाय नमः तथा ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नमः का जाप करें।

6. कन्या लग्न राशि (टो, पा, पी, पू, पे, पो, ष, ण, ठ)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुखद रह सकता है। भौतिक सुख–सुविधाओं व संसाधनों की प्राप्ति तथा बड़ी रकम की प्राप्ति का योग बन सकता है। भूमि, भवन व अन्य सम्पत्ति सम्बन्धी मामलों के निपटारे तथा लेन–देन में अपेक्षित सुविधा तथा सफलता प्राप्त हो सकती है। संतान–सुख की प्राप्ति का योग है। आजीविका तथा रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्य सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आपको अपने विवादास्पद मामलों में किसी व्यक्ति विशेष के सहयोग से सफलता की प्राप्ति हो सकती है। निकट सम्बन्धों में किसी प्रकार के लेन–देन तथा व्यवहार में सावधानी व सतर्कता आवश्यक है। स्वास्थ्य–विषयक समस्याएँ बनी रह सकती हैं।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। उच्च व्यवसायियों तथा उद्यमियों को बहुराष्ट्रीय संस्थान से व्यावसायिक स्तर पर जुड़ने का अवसर मिल सकता है तथा अपने व्यापार को विस्तार देने की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। भौतिक सुविधाओं तथा संसाधनों का विस्तार हो सकता है।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। धार्मिक तथा आध्यात्मिक व्यक्तियों, गुरु भगवंतों से धर्म–चर्चा तथा दर्शन का लाभ मिल सकता है। व्यावसायिक स्तर पर सामान्यत: किसी प्रकार के प्रस्ताव पर सहमति न देना ही उचित रहेगा।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक— यह काल आपके लिए सामान्यत: सुखद तथा संतोषप्रद रह सकता है। आर्थिक मामलों में आपको अपेक्षित व इच्छित सफलता की प्राप्ति हो सकती है। भूमि, भवन व अन्य सम्पत्तियों के लेन–देन में सुविधा रह सकती है। अधिकारी वर्ग तथा कर्मचारी वर्ग को अतिरिक्त कार्य का दायित्व मिल सकता है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—यह काल आपको आर्थिक तथा सम्पत्तिजन्य मामलों में सकारात्मक परिणाम दे सकता है। पारिवारिक परिसम्पत्तियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्णय तथा बातचीत के साथ ही सम्पत्तियों पर अधिकार प्राप्ति का योग बन सकता है। संतान–विषयक चिंताओं से मुक्ति मिल सकती है। किसी कार्य विशेष में साझेदारी कार्य–व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं। राज्यकर्मियों तथा अधिकारियों को उच्च पद पर पदोन्नति व अन्य आर्थिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है।

उपाय व सुझाव—इस वर्ष आपके लिए गुरु तथा मंगल की स्थिति नकारात्मक तथा बाधक बनी है। अत: इन ग्रहों की विधिवत् शांति जप व दानादि उपाय से करें–करावें तथा साथ ही उन्नत किस्म का सफेद मूँगा तथा नीलम चाँदी में धारण करें।

ॐ ऋषभ जिनाय नमः तथा ॐ वासुपूज्याय नमः का जाप करें।

7. तुला लग्न राशि (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सर्वाधिक सुखद, सुविधाजनक तथा संतोषप्रद रह सकता है। भूमि, भवन, वाहन व अन्य सम्पत्तियों के विस्तार की सम्भावनाएँ हैं। संतान पक्ष की किसी प्रतिष्ठित संस्थान में नियुक्ति तथा पद विशेष की प्राप्ति हो सकती है।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—इस काल में आपको कार्य–व्यापार तथा आजीविका के क्षेत्र में अनेक अवसर मिल सकते हैं। बेरोजगार जातकों को अपनी योग्यता क्षमता तथा प्रतिभा के अनुसार रोजगार का अवसर मिल सकता है।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—इस काल में राजकीय अधिकारियों तथा राजनीतिज्ञों को अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का अवसर मिल सकता है। राजकीय उच्च अधिकारियों को तथा राज्यकर्मियों को अतिरिक्त कार्यभार संभालने का अवसर मिल सकता है।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। स्थानांतरण तथा स्थान परिवर्तन का योग बन सकता है। राज्यकर्मियों को अपनी सुविधा अनुसार स्थान परिवर्तन तथा स्थानांतरण का लाभ मिल सकता है। धार्मिक आध्यात्मिक तथा सामाजिक गतिविधियों में सक्रियता बनी रह सकती है।

17 सितंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सुविधाजनक तथा सकारात्मक रह सकता है। भविष्य की सम्भावनाओं को देखते हुए आप अपनी व्यावसायिक तथा आर्थिक कार्य योजनाओं तथा व्यवस्थाओं में बड़ा परिवर्तन तथा बदलाव कर सकते हैं। नव संपत्ति की प्राप्ति का योग है।

उपाय व सुझाव—इस वर्ष आपके लिए सामान्यत: राहु व गुरु की स्थिति नकारात्मक तथा बाधक बनी है। अत: इन ग्रहों की विधिवत् शांति करें–करावें तथा साथ ही उन्नत किस्म का मोती तथा सिंदूरी मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नमः तथा ॐ ऋषभ जिनाय नमः का जाप करें।

8. वृश्चिक लग्न राशि (तो, न, ना, नी, नू, ने, नो, य, या, यी, यू)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सामान्यत: सुखद तथा सकारात्मक रह सकता है। आपको आर्थिक, सम्पत्तिजन्य तथा पूँजीगत मामलों में सफलता मिल सकती है। व्यावसाय में नई पूँजी का आगमन संभव है। व्यापार विस्तार तथा कार्य विस्तार की संभावना बन सकती है।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा संतोषप्रद रह सकता है। आर्थिक तथा आय–लाभ के क्षेत्र में आपको बड़ी उपलब्धियों की प्राप्ति हो सकती है। पारिवारिक संपत्तियों के सम्बन्ध में आपसी बातचीत तथा आवश्यक विचार–विमर्श हो सकता है।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: संतोषप्रद तथा सुखद रह सकता है। घर–परिवार में मांगलिक, शुभ तथा धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। संतान सुख की प्राप्ति का योग बन सकता है। भौतिक सुख–सुविधाओं की प्राप्ति का योग बन सकता है। राजकीय सेवा की तैयारी करने वालों को सफलता मिल सकती है।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक रह सकता है। अपने किसी भी कार्य में अतिरिक्त सावधानी तथा सजगता बनाए रखना आवश्यक है। अपने सम्बन्धों में, सामान्य तालमेल में विश्वसनीयता बनाए रखने का प्रयास करें। व्यावसायिक विस्तार तथा साझेदारी कार्य–व्यापार की सम्भावनाओं पर ध्यान दे सकते हैं।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आर्थिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में आपको बड़ी सफलता की प्राप्ति हो सकती है। किसी गुप्त व अज्ञात स्रोत से बड़ी रकम तथा साधन–सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—इस काल में आपको सामान्य धैर्य तथा संयम से काम लेना होगा। व्यावसायिक क्षेत्र में किसी बड़े परिवर्तन तथा स्थानांतरण की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। भूमि, भवन व अन्य सम्पत्तियों के लेन–देन में सामान्य सावधानी तथा सतर्कता रखें। किसी के बहकावे में तथा प्रभाव में आकर जोखिम न उठाएँ।

उपाय व सुझाव—इस वर्ष आपके लिए शनि व राहु की स्थिति नकारात्मक बनी है। अत: इन ग्रहों की विधिवत् शांति जप व दानादि उपाय से करें–करावें तथा साथ ही उन्नत किस्म का पुखराज तथा मोती चाँदी में धारण करें।

ॐ मुनिसुव्रत जिनाय नमः तथा ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नमः का जाप करें।

9. धनु लग्न राशि (ये, यो, भा, भी, भू, भे, धा, फा, ढा)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रहेगा। संतान–विषयक मामलों में आपको अपेक्षित तथा इच्छित परिणाम की प्राप्ति हो सकती है। संतान को रोजगार तथा आजीविका की दिशा में किए प्रयासों का पूर्ण लाभ मिल सकता है। भावी योजनाओं को ध्यान में रख व्यावसायिक क्षेत्र में तात्कालिक परिस्थितिजन्य परिवर्तन कर सकते हैं।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सुविधाजनक तथा सकारात्मक रह सकता है। भूमि, भवन, वाहन तथा अन्य सम्पत्तियों की प्राप्ति

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम
जैन कैलेण्डर

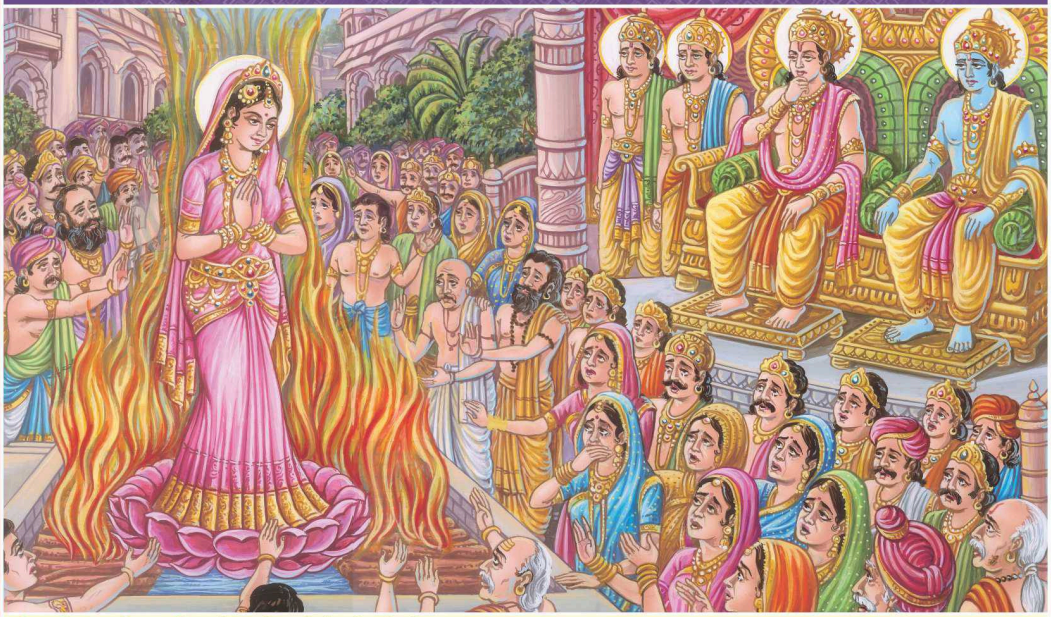

चित्र केवल परिचयार्थ : अग्नि परीक्षा देती हुई सती सीता।

2024
मार्च
MARCH

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY,
CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत्: 2080 | वीर निर्वाण संवत्: 2550 | जय संवत्: 228 | जैन पंचमाहक संवत्: 2546

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	ज्येष्ठा २२/५८ धनु २२/५८ **31** चैत्र वद ६-२१/३७	अनुराधा १५/५४ वृश्चिक **3** फाल्गुन वद ७-०८/४८	पूर्वा भाद्रपद २५/५२ मीन २०/३७ **10** अमावास्या फाल्गुन वद ३०-१४/२९	मृगसिरा १६/४३ मिथुन **17** फाल्गुन सुद ८-२१/५२	पूर्वा फाल्गुनी ७/३२ कन्या १४/१८ **24** पूर्णिमा फाल्गुन सुद १४-०९/५७
सोम MON प्रात: 7.30 से 9.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 19 मार्च, मंगलवार, रात्रि 8.08 बजे से 20 मार्च, बुधवार, रात्रि 10.38 बजे तक	ज्येष्ठा १६/२१ धनु १६/२१ **4** फाल्गुन वद ८-०८/५३	उत्तरा भाद्रपद २३/०१ मीन **11** अष्टमी पक्ष फाल्गुन सुद १-१०/४६	आर्द्रा १८/०७ मिथुन **18** फाल्गुन सुद ९-२२/४९	उत्तरा फाल्गुनी १०/३३ कन्या **25** पूर्णिमा फाल्गुन सुद १५-१२/२९
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	**पंचक** 8 मार्च, शुक्रवार, रात्रि 9.16 बजे से 12 मार्च, मंगलवार, रात्रि 8.29 बजे तक	मूल १५/५९ धनु **5** फाल्गुन वद १/१०-८/८-३०/३३	रेवती २०/२९ मेष २०/२९ **12** फाल्गुन सुद २/३-०७/१५,२८/०७	पुनर्वसु २०/०८ कर्क १३/३४ **19** फाल्गुन सुद १०-२४/२४	हस्त १३/२७ तुला १६/५० **26** चैत्र वद १-१४/५३
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	**शुभ दिन** 1, 8, 9, 14, 15, 16, 19, 20, 24, 27 **अशुभ दिन** 5, 7, 10, 12, 21, 26, 29, 30, 31	पूर्वाषाढ़ा १४/५० मकर २०/२६ **6** फाल्गुन वद ११-२८/१४	अश्विनी १८/२५ मेष **13** फाल्गुन सुद ४-२५/२९	पुष्य २२/३८ कर्क **20** फाल्गुन सुद ११-२६/२७	चित्रा १६/०९ तुला **27** चैत्र वद २-१७/०३
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	**अमृत सिद्धि योग** 16 मार्च, शनिवार, रोहिणी नक्षत्र, सूर्योदय से सायं 4.02 बजे तक	उत्तराषाढ़ा १३/०० मकर **7** फाल्गुन वद १२-२५/१९	भरणी १६/५५ वृषभ २२/३९ **14** फाल्गुन सुद ५-२३/२९	आश्लेषा २५/२८ सिंह २५/२८ **21** फाल्गुन सुद १२-२८/५०	स्वाती १८/३३ तुला **28** चैत्र वद ३-१८/५५
शुक्र FRI प्रात: 10.30 से 12.00 बजे	स्वाती १२/४४ तुला **1** फाल्गुन वद ६	श्रवण १०/३७ कुम्भ २१/१६ **8** फाल्गुन वद १३-२१/५६	कृतिका १६/०७ वृषभ **15** फाल्गुन सुद ६-२२/११	मघा २८/२९ सिंह **22** फाल्गुन सुद १३	विशाखा २०/३३ वृश्चिक २४/०६ **29** चैत्र वद ४-२०/२२
शनि SAT प्रात: 9.00 से 10.30 बजे	विशाखा १४/४० वृश्चिक ८/१५ **2** फाल्गुन वद ६-०७/५५	धनिष्ठा ७/५० कुम्भ **9** पाक्षिक पर्व फाल्गुन वद १४-१८/१६	रोहिणी १६/०२ मिथुन २८/१७ **16** फाल्गुन सुद ७-२१/३८	पूर्वा फाल्गुनी सिंह **23** फाल्गुन सुद १३-०७/२३	अनुराधा २२/०३ वृश्चिक **30** चैत्र वद ५-२१/१८

पच्चक्खाण चंत्र (चेन्नई समयानुसार)

मार्च	1	6	11	16	21	26	31
सूर्योदय	6.25	6.22	6.19	6.16	6.13	6.09	6.06
सूर्यास्त	6.18	6.18	6.19	6.19	6.20	6.20	6.20
नवकारसी	7.13	7.10	7.07	7.04	7.01	6.57	6.54
पोरसी	9.23	9.21	9.19	9.16	9.14	9.11	9.09

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

1. सुपार्श्व जिन केवल, 3. सुपार्श्व जिन मोक्ष, चन्द्रप्रभ जिन केवल, 5. सुविधि जिन च्यवन, 6. ऋषभ जिन केवल, 7. मुनिसुव्रत जिन केवल, श्रेयांस जिन जन्म, 8. श्रेयांस जिन दीक्षा, 9. वासुपूज्य जिन जन्म, 10. वासुपूज्य जिन दीक्षा, 12. अरह जिन च्यवन, 13. मल्ली जिन च्यवन, 17. सम्भव जिन च्यवन, 21. मुनिसुव्रत जिन दीक्षा, मल्ली जिन मोक्ष, 29. पार्श्व जिन च्यवन, पार्श्व जिन केवल, 30. चन्द्रप्रभ जिन च्यवन।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

5. रामदास नवमी, 6. विजया एकादशी व्रत, 8. पंचक प्रारम्भ, प्रदोष, महाशिवरात्रि व्रत, 12. पंचक समाप्ति, श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती, 14. याज्ञवल्क्य जयंती, मीन संक्रान्ति, 17. होलाष्टक प्रारम्भ, 20. आमलकी एकादशी व्रत, 21. मेला श्यामजी (खाटू), 22. प्रदोष, 24. होलिका दहन, 25. छारेंडी, खंड उपछाया युक्त चन्द्र ग्रहण (भारत में नहीं)।

अवकाश

8. महाशिवरात्रि व्रत, 9. द्वितीय शनिवार, 23. चतुर्थ शनिवार, 24. होलिका दहन, 25. छारेंडी, 29. गुड फ्राइडे।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

9. पाक्षिक पर्व, 24. चातुर्मासिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रात:											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रात:											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30	31		
प्रात:											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

2024 का वार्षिक राशिफल

तथा लेन-देन संभव हो सकता है। घर-परिवार में मांगलिक, शुभ तथा धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक तथा आध्यात्मिक गतिविधियों में सक्रियता बनी रह सकती है।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—इस काल में आपके लिए उच्च तथा महत्वाकांक्षी सम्भावनाएँ प्रतीत हो रही हैं। किसी बहुराष्ट्रीय व्यावसायिक संस्थान से सम्बन्ध तथा अनुबंध, समझौता आदि संपन्न हो सकता है। विवाह योग्य जातकों के विवाह की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। रोजगार तथा व्यापार के नये अवसर मिल सकते हैं।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक रह सकता है। साथ ही आपको घरेलू तथा पारिवारिक स्तर पर अव्यवस्थाओं तथा असुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। व्यवसाय तथा आजीविका के क्षेत्र में आपको विस्तार करने का अवसर मिल सकता है। नया कार्य प्रारम्भ करने का योग बन सकता है। इंजीनियरिंग, मार्केटिंग, ट्रेडिंग, स्टेशनरी तथा एजेंसी का कार्य करने वाले जातकों को अपने-अपने क्षेत्र में उच्च अवसर तथा आजीविका प्राप्ति की सम्भावना है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्य सुविधाजनक तथा संतोषप्रद रह सकता है। राजकीय मामलों में आपको सामान्य परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। पारिवारिक परिसम्पत्तियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्णय तथा अधिकार की प्राप्ति हो सकती हैं। किसी आर्थिक विवाद के सुलझने से राहत मिल सकती है।

उपाय-सुझाव—इस वर्ष आपके लिए शनि व राहु की स्थिति जरा-सी ठीक नहीं बनी है। अत: इन ग्रहों की विधिवत् शांति जप व दानादि उपायों से करें-करावें तथा साथ ही उन्नत किस्म का पुखराज तथा सफेद मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ मुनिसुव्रत जिनाय नम: तथा ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नम: का जाप करें।

10. मकर लग्न राशि (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सर्वाधिक सुखद तथा सकारात्मक रह सकता है। आपको विभिन्न स्रोतों से आय तथा लाभ की प्राप्ति हो सकती है। भौतिक सुख-सुविधाओं व संसाधनों का विस्तार हो सकता है। भूमि, भवन, वाहन आदि की प्राप्ति का योग बन सकता है। कार्य-व्यापार के क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम मिलते रह सकते हैं।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: संतोषप्रद तथा सुखद रह सकता है। कार्य-व्यापार तथा आजीविका के क्षेत्र में भावी सम्भावनाओं को देखते हुए परिवर्तन तथा बदलाव सम्भव है। आर्थिक क्षेत्र में आपको अपेक्षित तथा निरंतर सफलता मिल सकती है।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके व्यापार तथा रोजगार के क्षेत्र में सफलतादायक रह सकता है। आजीविका के क्षेत्र में आपको अनेक अवसर मिल सकते हैं। अपनी योग्यता क्षमता तथा प्रतिभा के अनुसार जॉब की प्राप्ति हो सकती है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में लगे जातकों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त हो सकती है।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आजीविका, कामकाज तथा रोजगार के क्षेत्र में आपको अपनी क्षमता योग्यता तथा प्रतिभा के अनुसार नए-नए अवसर मिल सकते हैं। संतान-विषयक मामलों में सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—इस काल में आपको सामान्य प्रयासों से बड़ी उपलब्धियों की प्राप्ति हो सकती है। आय तथा लाभ की स्थिति में गुणात्मक सुधार की सम्भावनाएँ हैं। अदालती तथा विवादास्पद मामलों में आपके पक्ष में निर्णय संभव हो सकता है। आकस्मिक तथा गुप्त स्रोतों से आय, लाभ तथा सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—इस काल में आपको अपने विवेक, धैर्य तथा संयम से काम लेना होगा तथा अपने प्रत्येक कार्य व निर्णय की समीक्षा अवश्य करें। व्यावसायिक पूँजीगत प्रस्ताव प्राप्त हो सकते हैं।

उपाय-सुझाव—इस वर्ष आपके लिए गुरु व राहु की स्थिति नकारात्मक तथा बाधक बनी है। अत: इन ग्रहों की विधिवत् शांति करें-करावें तथा उन्नत किस्म का सफेद मूँगा तथा सिंदूरी मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ ऋषभ जिनाय नम: तथा ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नम: का जाप करें।

11. कुंभ लग्न राशि (गू, गे, स, सा, सी, सू, से, सो, द, दा)

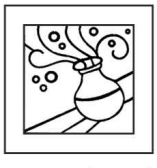

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारंभिक काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। आर्थिक तथा पूँजीगत मामलों में आपको सफलता मिल सकती है। भाग्य पक्ष की अनुकूलता से आपके अब तक टलते आ रहे कार्य सहजता से पूर्ण हो सकते हैं। भूमि-भवन व अन्य सम्पत्तियों के लेन-देन तथा व्यवहार में लाभप्रद स्थितियाँ बनी रहेगी।

8 मार्च 2024 से 24 अप्रैल 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सुखद तथा सुविधाजनक रह सकता है। कार्य-व्यापार तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ बड़े व महत्वाकांक्षी प्रस्तावों पर आपसी सहमति बन सकती है। कार्य तथा व्यापार विस्तार की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। घर-परिवार में मांगलिक, शुभ तथा धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। विवाह योग्य जातकों के विवाह की सर्वाधिक सम्भावनाएँ बन सकती हैं।

25 अप्रैल 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्य सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। राजकीय अधिकारियों तथा कर्मियों को प्रमोशन के साथ उच्च पद की प्राप्ति तथा इच्छित स्थान पर स्थानांतरण का योग बन सकता है। राजनीतिज्ञों के अधिकार क्षेत्र में विस्तार संभव है। बड़े उद्योगपतियों तथा उद्यमियों को बहुराष्ट्रीय व्यावसायिक प्रतिष्ठित संस्थान से जुड़ने तथा साथ कार्य करने का प्रस्ताव प्राप्त हो सकता है।

13 जुलाई 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। कार्य-व्यापार रोजगार तथा कैरियर के क्षेत्र में आपको नए प्रस्ताव तथा अवसर मिल सकते हैं। संतान-विषयक शुभ कार्यों की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सुखद तथा सुविधाजनक रह सकता है। कार्य-व्यापार, आजीविका तथा करियर के क्षेत्र में उच्च सम्भावनाएँ तथा परिवर्तन का योग बन सकता है। आय तथा लाभ की स्थितियों में सुधार हो सकता है। आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति का योग बन सकता है। व्यावसायिक गतिविधियों में सामान्य सतर्कता तथा सावधानी से काम लें।

उपाय-सुझाव—इस वर्ष आपके लिए राहु तथा बुध की स्थिति नकारात्मक बनी है। इन ग्रहों की विधिवत् शांति करें-करावें तथा उन्नत किस्म का सफेद मूँगा तथा सिंदूरी मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नम: तथा ॐ वर्धमान जिनाय नम: का जाप करें।

12. मीन लग्न राशि (दी, दू, दे, दो, थ, झ, भ, च, चा, ची)

1 जनवरी 2024 से 7 मार्च 2024 तक—नववर्ष का प्रारम्भिक काल आपके लिए सर्वाधिक सुखद तथा संतोषप्रद रह सकता है। आर्थिक तथा संपत्तिजन्य मामलों में आपको उच्च सफलता मिल सकती है तथा महत्वाकांक्षी सौदे व समझौते सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में शुभ, मांगलिक तथा धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

8 मार्च 2024 से 12 जुलाई 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। राज्यकर्मियों को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से आर्थिक तथा अन्य सुविधाओं की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक तथा पूँजीगत सुविधाओं का विस्तार हो सकता है। घर-परिवार में मांगलिक शुभ तथा धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

13 जुलाई 2024 से 16 सितंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा संतोषप्रद रह सकता है। संतान के करियर के विषय में किये गए प्रयासों में सफलता मिल सकती है। संतान सुख की प्राप्ति का योग बन सकता है। विवाह योग्य जातकों के विवाह की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। भूमि-भवन व अन्य सम्पत्तियों के लेन-देन तथा व्यवहार में सुविधा रह सकती है।

17 सितंबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सकारात्मक तथा सुविधाजनक रह सकता है। भूमि-भवन व अन्य संपत्तियों का लेन-देन सुविधाजनक रह सकता है। पारिवारिक परिसम्पत्तियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्णय तथा अधिकार की प्राप्ति संभव है। विवाह योग्य जातकों के विवाह की सम्भावनाएँ बन सकती हैं। घर-परिवार में मांगलिक तथा शुभ कार्य संपन्न हो सकते हैं।

7 नवंबर 2024 से 31 दिसम्बर 2024 तक—यह काल आपके लिए सामान्यत: सुखद तथा सुविधाजनक रह सकता है। बड़े व्यवसायियों एवं उद्योगपतियों को प्राप्त व्यवसाय प्रस्ताव पर बहुत सोच-विचार के बाद ही कोई निर्णय लेना उचित रहेगा। नवीन साझेदारी के प्रस्ताव को फिलहाल टाल देना ही उचित रहेगा। किसी निकट व्यक्ति के सहयोग से आपका अटका हुआ कोई आवश्यक कार्य पूर्ण हो सकता है। राजकीय सेवा के क्षेत्र में संभावित अभ्यर्थियों को पद विशेष पर नियुक्ति तथा कार्य करने का अवसर मिल सकता है।

उपाय-सुझाव—इस वर्ष आपके लिए शनि तथा राहु की स्थिति नकारात्मक व बाधक बनी है। अत: इन ग्रहों की विधिवत् शांति करें-करावें तथा साथ ही उन्नत किस्म का पुखराज तथा सिंदूरी मूँगा चाँदी में धारण करें।

ॐ मुनिसुव्रत जिनाय नम: तथा ॐ अरिष्टनेमि जिनाय नम: का जाप करें।

पं. प्रेमकुमार शर्मा (खगोल ज्योतिष केन्द्र)
4, पल्ली वालों का बास, सत्यनारायण मंदिर के पास,
पानी दरवाजा, पाली-मारवाड़-306 401 (राज.)
मो. : 9352928420, 8003341593 (Whatsapp)

पद्मोदय जैन कैलेण्डर MOBILE APP पर भी

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर 'पद्मोदय जैन कैलेण्डर' अत्यधिक लोकप्रिय हो चुका है। इसी को ध्यान में रखते हुए MOBILE APP तैयार किया गया है। PLAY STORE से 'PADMODAYA JAIN CALENDAR' FREE DOWNLOAD किया जा सकता है। RATING में 5 STAR देवें।

धन्यवाद!

For Android	:	https://play.google.com/store/apps/details?id=com.bion.jain.padmodayacalendar&hl=en
For iphone	:	https://appsto.re/in/7T934.i
Connect on facebook	:	https://www.facebook.com/padmodaya.jain.calendar

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम **जैन कैलेण्डर**

चित्र केवल परिचयार्थ : भ. महावीर का जन्म कल्याणक—56 दिक्कुमारियों द्वारा सूतिका कर्म, देवेन्द्र द्वारा मेरूपर्वत पर जलाभिषेक।

2024

अप्रैल APRIL

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY,
CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत्ः 2080-81 | वीर निर्वाण संवत्ः 2550 | जय संवत्ः 228 | जैन पंचमारक संवत्ः 2546

वार					
रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे		पूर्वा भाद्रपद १२/५७ मीन ७/३८ **7** चैत्र वद १३/१४-०६/५६, २७/२४	आर्द्रा २५/३१ मिथुन **14** चैत्र सुद ६-११/४४	उत्तरा फाल्गुनी १७/०८ कन्या **21** चैत्र सुद १३-२५/१४	मूल २८/५२ धनु **28** वैशाख वद ४-८/२८
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	मूल २३/१४ धनु **1** चैत्र वद ७-२१/१६	उत्तरा भाद्रपद १०/१३ मीन **8** पाक्षिक पर्व अमावस्या चैत्र वद ३०-२३/५४	पुनर्वसु २७/०२ कर्क २०/३५ **15** चैत्र सुद ७-१२/११	हस्त १९/५७ कन्या **22** चैत्र सुद १४-२७/२६	पूर्वाषाढ़ा २८/४६ धनु **29** वैशाख वद ५- ८/०५
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	पूर्वाषाढ़ा २२/५० मकर २८/३८ **2** चैत्र वद ८-२०/१४	रेवती ७/३३ मेष ७/३३ **9** चन्द्र दर्शन अश्विनी २९/०७ चैत्र सुद १-२०/३६	पुष्य २९/१४ कर्क **16** चैत्र सुद ८-१३/२५	चित्रा २२/२७ तुला ९/१५ **23** पाक्षिक पर्व पूर्णिमा चैत्र सुद १५-२९/१७	उत्तराषाढ़ा २८/१२ मकर १०/४० **30** वैशाख वद ६/७-७/१२,२९/५२
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	उत्तराषाढ़ा २१/४८ मकर **3** चैत्र वद ९-१८/३३	भरणी २७/०७ मेष **10** चैत्र सुद २-१७/३७	आश्लेषा कर्क **17** चैत्र सुद ९-१५/१७	स्वाती २४/३६ तुला **24** वैशाख वद १	**पुष्य नक्षत्र** 16 अप्रैल, मंगलवार, सूर्योदय से 17 अप्रैल, बुधवार, प्रातः 5.14 बजे तक
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	श्रवण २०/११ मकर **4** चैत्र वद १०-१६/१७	कृतिका २५/३८ वृषभ ८/४२ **11** चैत्र सुद ३-१५/०८	आश्लेषा ७/५७ सिंह ७/५७ **18** चैत्र सुद १०-१७/३७	विशाखा २६/२१ वृश्चिक २१/५७ **25** वैशाख वद १-६/४५	**पंचक** 5 अप्रैल, शुक्रवार, प्रातः 7.11 बजे से 9 अप्रैल, मंगलवार, प्रातः 7.33 बजे तक
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	धनिष्ठा १८/०५ कुम्भ ७/११ **5** चैत्र वद ११-१३/३१	रोहिणी २४/४९ वृषभ **12** चैत्र सुद ४-१३/१५	मघा १०/५९ सिंह **19** चैत्र सुद ११-२०/१२	अनुराधा २७/३९ वृश्चिक **26** वैशाख वद २-७/४७	**शुभ दिन** 2, 4, 9, 10, 16, 18, 19, 21, 26, 28 **अशुभ दिन** 1, 5, 7, 8, 12, 13, 14, 15, 30
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	शतभिषा १५/३८ कुम्भ **6** चैत्र वद १२-१०/२१	मृगसिरा २४/४६ मिथुन १२/४२ **13** चैत्र सुद ५-१२/०५	पूर्वा फाल्गुनी १४/०६ कन्या २०/५३ **20** चैत्र सुद १२-२२/४७	ज्येष्ठा २८/३० धनु २८/३० **27** वैशाख वद ३- ८/२२	**अमृत सिद्धि योग** 9 अप्रैल, मंगलवार, अश्विनी नक्षत्र, प्रातः 7.33 बजे से अर्धरात्रि उपरान्त 5.08 बजे तक; 21 अप्रैल, रविवार, हस्त नक्षत्र, सायं 5.08 बजे से आगामी सूर्योदय तक

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

अप्रैल	1	6	11	16	21	26	30
सूर्योदय	6.05	6.02	5.59	5.56	5.53	5.51	5.49
सूर्यास्त	6.20	6.21	6.21	6.22	6.22	6.23	6.24
नवकारसी	6.53	6.50	6.47	6.44	6.41	6.39	6.37
पोरसी	9.08	9.06	9.04	9.02	9.00	8.59	8.57

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

2. ऋषभ जिन जन्म, ऋषभ जिन दीक्षा, वर्षीतप प्रारम्भ, 11. कुन्थु जिन केवल, 13. अनंत जिन मोक्ष, अजित जिन मोक्ष, 14. सम्भव जिन मोक्ष, 15. ओली तप प्रारम्भ, 17. सुमति जिन मोक्ष, 19. सुमति जिन केवल, 21. महावीर जिन जन्म, 23. पद्मप्रभ जिन केवल, ओली तप समाप्त, 24. कुन्थु जिन मोक्ष, 26. शीतल जिन मोक्ष, 29. कुन्थु जिन दीक्षा, 30. शीतल जिन च्यवन।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. शीतला सप्तमी, 2. शीतला अष्टमी (जोधपुर), 5. पंचक प्रारम्भ, पापमोचनी एकादशी व्रत, 6. प्रदोष, 8. सोमवती अमावस्या, पूर्ण सूर्य ग्रहण (भारत में नहीं), 9. पंचक समाप्ति, नवरात्रारम्भ (घटस्थापना), संवत्सरारंभ, 11. गणगौरी पूजा, 13. मेष संक्रान्ति, बैसाखी, 14. डॉ. अंबेडकर जयंती, 16. दुर्गाष्टमी, 17. रामनवमी, 19. कामदा एकादशी व्रत, 21. प्रदोष, भगवान महावीर जन्म जयंती, 23. हनुमान जयंती, वैशाख स्नानारंभ, 28. अनुसूया जयंती।

अवकाश

9. झूलेलाल जयंती, 11. रमजान (ईद), 13. द्वितीय शनिवार, बैसाखी, 14. डॉ. अंबेडकर जयंती, 17. रामनवमी, 21. महावीर जयंती, 23. हनुमान जयंती, 27. चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

8. पाक्षिक पर्व, 23. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रातः											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रातः											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30			
प्रातः											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समापित काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

तीर्थंकर परिचय

क्र.सं.	तीर्थंकर	माता का नाम	पिता का नाम	लांछन	वर्ण	जन्म	यक्ष	जिनशासन देवी	प्रमुख गणधर	गणधरों की सं.	प्रमुख साध्वी
1.	श्री ऋषभ जिन जी	श्री मरुदेवी	श्री नाभि	वृषभ	पीला	इक्ष्वाकुभूमि	गौमुख	चक्रेश्वरी	उषभसेण जी	84	ब्राह्मीसुन्दरी जी
2.	श्री अजित जिन जी	श्री विजयादेवी	श्री जितशत्रु	गज	पीला	अयोध्या	महायक्ष	रोहिणी	सिंहसेण जी	95	फागुणी जी
3.	श्री संभव जिन जी	श्री सेना	श्री जितारि	अश्व	पीला	श्रावस्ती	श्रीमुख	प्रज्ञप्ति	चारु जी	102	सामा जी
4.	श्री अभिनंदन जिन जी	श्री सिद्धार्था	श्री संवर	वानर	पीला	अयोध्या	यक्षेश्वर	वज्रशृंखला	बजरनाथ जी	116	अजियां जी
5.	श्री सुमति जिन जी	श्री मंगला	श्री मेष	क्रोंच	पीला	अयोध्या	तुंबरु	पुरुषदत्ता	चिमर जी	100	काचवा जी
6.	श्री पद्म जिन जी	श्री सुसीमा	श्री धर	पद्म	पीला	कौशाम्बी	पुष्प (कुसुम)	मनोवेगा	सुव्रत जी	107	रतियां जी
7.	श्री सुपार्श्व जिन जी	श्री पृथ्वी	श्री प्रतिष्ठ	स्वस्तिक	लाल	वाराणसी	नंदी	कालीदेवी	विदर्भ जी	95	सोभा जी
8.	श्री चन्द्रप्रभ जिन जी	श्री लक्ष्मी	श्री महासेन	चन्द्र	सफेद	चन्द्रपुरी	शाम (विजय)	ज्वालामालिनी	दीनकरण जी	93	सोहनी जी
9.	श्री सुविधि जिन जी	श्री रामा	श्री सुग्रीव	मकर	सफेद	काकंदी	अजित	महाकाली	बारु जी	88	वांरनी जी
10.	श्री शीतल जिन जी	श्री नन्दा	श्री दृढ़रथ	श्रीवत्स	पीला	भद्दिलपुर	ब्रह्मयक्ष	मानवी	आनन्द जी	81	सुलसा जी
11.	श्री श्रेयांस जिन जी	श्री विष्णुदेवी	श्री विष्णु	गेंडा	पीला	सिंहपुर	ईश्वर (यक्षराष्ट्र)	गौरी	गौतम जी	76	धारणी जी
12.	श्री वासुपूज्य जिन जी	श्री जया	श्री वासुदेव	महिष	लाल	चम्पापुर	कुमार	गांधारी	सोम जी	66	धनधारणी जी
13.	श्री विमल जिन जी	श्री श्यामा	श्री कृतवर्मा	सूअर	पीला	कपिलपुर	चतुर्मुख	वैरोटीदेवी	मिन्दर जी	57	धारणी जी
14.	श्री अनन्त जिन जी	श्री सुयशा	श्री सिंहसेन	बाज	पीला	अयोध्या	पाताल	अनन्तमती	जसोधर जी	50	पद्मावती जी
15.	श्री धर्म जिन जी	श्री सुव्रता	श्री भानु	वज्र	पीला	रत्नपुर	किन्नर	मानसी	अरिष्ठ जी	43	शिवा जी
16.	श्री शान्ति जिन जी	श्री अचिरा	श्री विश्वसेन	मृग	पीला	हस्तिनापुर	गरुड़ यक्ष	महामानसी	चकू जी	36	सुइ जी
17.	श्री कुंथु जिन जी	श्री श्रीदेवी	श्री सूरसेन	बकरा	पीला	हस्तिनापुर	गंधर्व	जया, गंधारी	संभु जी	35	अज्यां जी
18.	श्री अर जिन जी	श्री महादेवी	श्री सुदर्शन	नंदावर्त	पीला	हस्तिनापुर	खगेंद्र	तारावती	कुम्भकरण जी	33	रखीया जी
19.	श्री मल्लि जिन जी	श्री प्रभावती	श्री कुम्भ	कलश	नीला	मिथिला	कुबेर	अपराजिता	अमीर जी	28	बुद्धवन्ता जी
20.	श्री मुनिसुव्रत जिन जी	श्री पद्मावती	श्री सुमित्र	कछुआ	काला	राजगृह	वरुण	बहुरूपिणी	इन्द्रकुम्भ जी	18	पुष्पचूला जी
21.	श्री नमि जिन जी	श्री वप्रा	श्री विजयसेन	कमल	पीला	मिथिला	भृकुटी	चामुण्डी	कुम्भ जी	17	अनिला जी
22.	श्री नेमि जिन जी	श्री शिवादेवी	श्री समुद्रविजय	शंख	काला	शोर्यपुर	गोमेद (सर्वाण्ह)	कुष्माण्डिणी	बरदत्त जी	11	यक्षणी जी
23.	श्री पार्श्व जिन जी	श्री वामा	श्री अश्वसेन	सर्प	नीला	वाराणसी	धरणेन्द्र	पद्मावती	दीनकर्ण जी	10	पुष्पचूला जी
24.	श्री वर्द्धमान जिन जी	श्री त्रिशला	श्री सिद्धार्थ	सिंह	पीला	कुण्डलपुर	मातंग	सिद्धायनी	इन्द्रभूति जी	11	चन्दनबाला जी

चौदह नियम

त्याग व्रत मर्यादा का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इहलोक व परलोक दोनों सुखमय बनाने का एकमात्र साधन ही त्याग व मर्यादा है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए श्रावक ही क्या प्रत्येक धर्मप्रेमी सद्गृहस्थ को चाहिए कि वह प्रतिदिन प्रातः निम्न चौदह नियमों को ग्रहण करे एवं आवश्यकता के अनुसार मर्यादा करके उपरान्त त्याग कर ले, जितना त्याग उतनी ही शान्ति। चौदह नियम धारण करने से समुद्र जितना पाप घटकर बूँद के बराबर रह जाता है।

1. **सचित्त**—कच्चा पानी, हरी वनस्पति, फल, सचित्त नमक, कच्चा पूरा धान आदि सचित्त वस्तुओं का परिमाण करना।
2. **द्रव्य**—रोटी, दाल, शाक, पूड़ी, पापड़, पान, सुपारी, इलायची, लौंग आदि द्रव्यों की मर्यादा करना।
3. **विगय**—घी, तेल, दूध, दही व मीठा—इन पाँचों विगय का परिमाण करना।
4. **उपानह**—जूते, चप्पल, मोजे आदि की मर्यादा करना।
5. **ताम्बूल**—पान, सुपारी, इलायची, लौंग, चूर्ण आदि मुखवास की मर्यादा करना।
6. **वस्त्र**—पहनने, ओढ़ने के सारे वस्त्रों की मर्यादा करना।
7. **कुसुम**—सूँघने की वस्तु (फूल, इत्र की मर्यादा करना)।
8. **वाहन**—साइकिल, स्कूटर, मोटर, रेल, हाथी, घोड़ा आदि वाहनों की मर्यादा करना।
9. **शयन**—पलँग, खाट, बिछौने आदि की मर्यादा करना।
10. **विलेपन**—केसर, चन्दन, तेल, उबटन आदि की मर्यादा करना।
11. **अब्रह्म**—मैथुन-सेवन का त्याग करना या मर्यादा करना।
12. **दिशा**—ऊँची, नीची, तिरछी दिशा में जाने की मर्यादा करना।
13. **स्नान**—स्नान एवं स्नान के लिए जल की मर्यादा करना।
14. **भक्त**—भोजन (कितने समय व कितना प्रमाण) की मर्यादा करना।

तीन मनोरथ

प्रातःकाल उठकर तीन नवकार का ध्यान करें तथा फिर निम्न तीन मनोरथ का चिन्तन करें। पश्चात् तीन बार 'तिक्खुत्तो' के पाठ से देव-गुरु-धर्म को नमस्कार करें।

1. वह दिन मेरा धन्य होगा, जब मैं आरम्भ-परिग्रह को तजकर निवृत्ति को धारण करूँगा।
2. वह दिन मेरा धन्य होगा, जब मैं आगारधर्म को छोड़कर अणगारधर्म को धारण करूँगा।
3. वह दिन मेरा धन्य होगा, जब मैं संथारा-संलेखना करके पण्डितमरण को प्राप्त होऊँगा।

कलयुग का कल्पवृक्ष

इस कलिकाल में लोगस्स रूपी कल्पवृक्ष तत्काल वांछित फल देने वाला है। साधक धैर्य एवं निष्ठा से आराधना करें।

प्रथम मण्डल

ॐ ऐं औं ह्रीं श्रीं लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली, मम मनोतुष्टिं कुरु कुरु ॐ स्वाहा।

विधि—प्रथम मण्डल को पूर्व दिशा सन्मुख खड़े होकर 14 दिन तक काउस्सग्ग में 108 बार जपें। साधनाकाल में ब्रह्मचर्य-पालन करते हुए भूमि या पाट पर शयन करें। मान-सम्मान, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होवे, चोर-भय दूर होवे। इति सत्यम्॥

द्वितीय मण्डल

ॐ क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं उसभमजियं च वन्दे सम्भवमभिनन्दणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपास, जिणं च चन्दप्पहं वन्दे स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को पद्मासन में उत्तर दिशा सन्मुख प्रतिदिन 108 बार 7 दिन जपें। सोमवार से प्रारम्भ करें। एक समय भोजन तथा ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि शयन करें। भोजन सफेद वस्तु का ही करें। कलह मिटे, मैत्रीभाव बढ़े, सुख-सम्पत्ति मिले।

तृतीय मण्डल

ॐ ऐं ह्रीं झूँ झ्रीं सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि स्वाहा।

विधि—तृतीय मण्डल को लाल रंग की माला से 21 दिन तक 108 बार जपें। शत्रु-भय मिटे तथा संग्राम या मुकद्दमे में जीत होवे।

चतुर्थ मण्डल

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुं अरं च मल्लिं वन्दे मुणिसुव्वयं नमजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च मम मनोवांछित पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को पीले रंग की माला से पूर्व दिशा की ओर मुँह करके 11,000 बार जपें अथवा प्रतिदिन एक माला फेरें। भूत-प्रेत बाधा दूर हो, अष्टगंध या केसर से लिखकर गले में बाँधने से ज्वर पीड़ा मिटे।

पंचम मण्डल

ॐ ह्रीं ह्रां एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीण जर मरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को पूर्व दिशा की ओर हाथ जोड़कर खड़े-खड़े मुख आकाश की तरफ रखते हुए 5,500 बार जपें अथवा प्रतिदिन एक माला फेरें। सभी सुख प्राप्त होवें, सभी का प्रिय बनें।

षष्ट मण्डल

ॐ अम्बराय कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को उत्तर दिशा की ओर मुँह करके 15,000 बार जपें अथवा प्रतिदिन एक माला फेरें। देवगण भी प्रसन्न हों, जय-जयकार एवं सुख मिले, अन्त में समाधिमरण (संथारा) होवे।

सप्तम मण्डल

ॐ ह्रीं ऐं ओं झौं चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु। मम मनोवांछितं पूरय पूरय स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को पूर्व दिशा की ओर मुख करके 1,000 बार जप करने से अथवा प्रतिदिन एक माला फेरने से मन की आशा पूर्ण होती है एवं यश-प्रतिष्ठा बढ़े तथा सभी का पूजनीय बनें।

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर

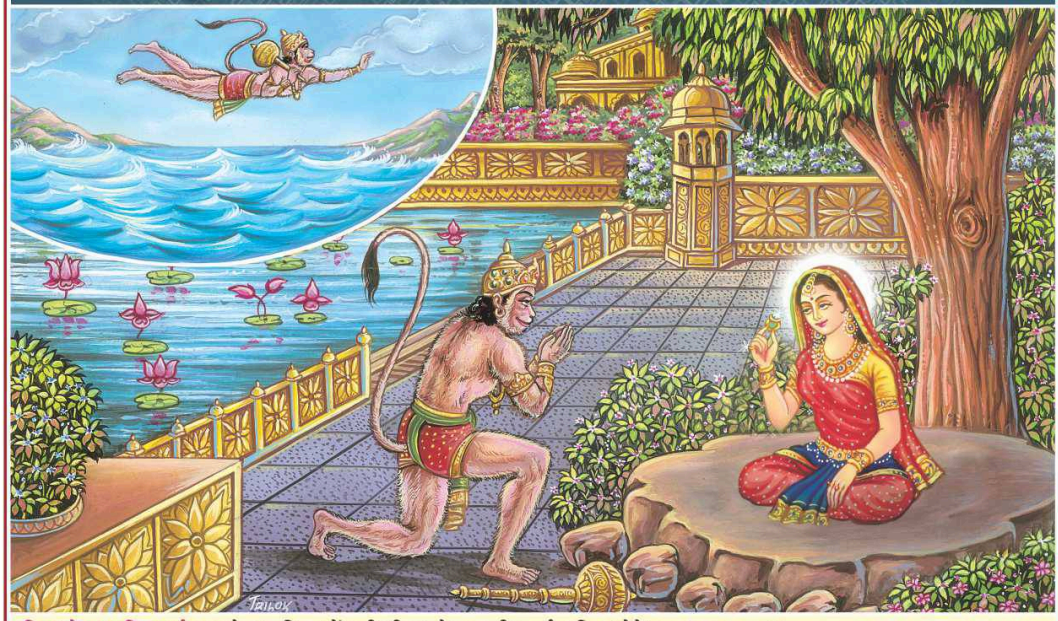

चित्र केवल परिचयार्थ : अशोक वाटिका में सती सीता को राम की स्वर्ण-मुद्रिका देते पवन पुत्र हनुमान।

2024

मई MAY

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY,
CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत्: 2081 | वीर निर्वाण संवत्: 2550 | जय संवत्: 228-29 | जैन पंचमाक संवत्: 2546

रविवार SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	पुष्य नक्षत्र 13 मई, सोमवार, प्रात: 11.20 बजे से 14 मई, मंगलवार, मध्याह्न 1.02 बजे तक	उत्तरा भाद्रपद १९/५९ मीन **5** वैशाख वद १२-१७/४७	आर्द्रा १०/२४ कर्क २९/०२ **12** वैशाख सुद ५-२६/०४	हस्त २७/१७ कन्या **19** वैशाख सुद ११-१३/५५	मूल १०/३८ धनु **26** ज्येष्ठ वद ३-१८/१२
सोमवार MON प्रात: 7.30 से 9.00 बजे	पंचक 2 मई, गुरुवार, मध्याह्न 2.33 बजे से 6 मई, सोमवार, सायं 5.46 बजे तक; 29 मई, बुधवार, रात्रि 8.07 बजे से 2 जून, रविवार, मध्यरात्रि उपरान्त 1.41 बजे तक	रेवती १७/४६ मीन १७/५६ **6** वैशाख वद १३-१४/४६	पुनर्वसु ११/२० कर्क **13** वैशाख सुद ६-२६/५०	चित्रा तुला १६/३४ **20** वैशाख सुद १२-१६/०२	पूर्वाषाढ़ा १०/१६ मकर १६/०८ **27** ज्येष्ठ वद ४-१७/००
मंगलवार TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	शुभ दिन 7, 13, 14, 19, 21, 23, 26 अशुभ दिन 1, 5, 8, 9, 15, 17, 18, 24, 30	अश्विनी १५/३६ मेष **7** वैशाख वद १४-११/४७ पाक्षिक पर्व	पुष्य १३/०२ कर्क **14** वैशाख सुद ७-२८/२०	चित्रा ५/४५ तुला **21** वैशाख सुद १३-१७/४१	उत्तराषाढ़ा ९/३६ मकर **28** ज्येष्ठ वद ५-१५/२९
बुधवार WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	श्रवण २७/१२ मकर **1** वैशाख वद ८-२८/०६	भरणी १३/३७ वृषभ ११/१० **8** वैशाख वद ३०-८/५८ अमावस्या	आश्लेषा १५/२४ सिंह १५/२४ **15** वैशाख सुद ८	स्वाती ७/४४ वृश्चिक २६/५३ **22** वैशाख सुद १४-१८/४८ पाक्षिक पर्व	श्रवण ८/४० कुम्भ २०/०७ **29** ज्येष्ठ वद ६-१३/४४
गुरुवार THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	धनिष्ठा २५/४९ कुम्भ १४/३३ **2** वैशाख वद ९-२५/५७	कृतिका ११/५८ वृषभ **9** वैशाख सुद १/२-६/२७, २८/२३ चन्द्र ग्रहण	मघा १८/१४ सिंह **16** वैशाख सुद ८-६/२६	विशाखा ९/१२ वृश्चिक **23** वैशाख सुद १५-१९/२४ पूर्णिमा	धनिष्ठा ७/३१ कुम्भ **30** ज्येष्ठ वद ७-११/४७
शुक्रवार FRI प्रात: 10.30 से 12.00 बजे	शतभिषा २४/०६ कुम्भ **3** वैशाख वद १०-२३/२८	रोहिणी १०/४८ मिथुन २२/२६ **10** वैशाख सुद ३-२६/५३	पूर्वा फाल्गुनी २१/२० कन्या २४/०७ **17** वैशाख सुद ९-८/५४	अनुराधा १०/०९ वृश्चिक **24** ज्येष्ठ वद १-१९/२८	शतभिषा ६/१३ मीन २३/१० **31** ज्येष्ठ वद ८-९/४१ पाक्षिक पर्व २२/२४
शनिवार SAT प्रात: 9.00 से 10.30 बजे	पूर्वा भाद्रपद २२/०८ मीन १६/३९ **4** वैशाख वद ११-२०/४३	मृगसिरा १०/१४ मिथुन **11** वैशाख सुद ४-२६/०५	उत्तरा फाल्गुनी २४/२५ कन्या **18** वैशाख सुद १०-११/२९	ज्येष्ठा १०/३७ धनु १०/३७ **25** ज्येष्ठ वद २-१९/०३	अमृत सिद्धि योग 7 मई, मंगलवार, अश्विनी नक्षत्र, सूर्योदय से मध्याह्न 3.36 बजे तक; 19 मई, रविवार, हस्त नक्षत्र, सूर्योदय से अर्धरात्रि उपरान्त 3.17 बजे तक

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

मई	1	6	11	16	21	26	31
सूर्योदय	5.48	5.46	5.45	5.44	5.43	5.42	5.42
सूर्यास्त	6.24	6.25	6.26	6.27	6.29	6.30	6.32
नवकारसी	6.36	6.34	6.33	6.32	6.31	6.30	6.30
पोरसी	8.57	8.55	8.55	8.54	8.54	8.54	8.54

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

3. नेमि जिन मोक्ष, 6. अनंत जिन जन्म, 7. अनंत जिन दीक्षा, अनंत जिन केवल, कुन्थु जिन जन्म, 10. अक्षय तृतीया, आचार्य जय पद प्रदान दिवस एवं जयगच्छीय दशम पट्टधर आचार्य लाल स्मृति दिवस, 11. अभिनन्दन जिन च्यवन, 14. धर्म जिन च्यवन, 15. अभिनन्दन जिन मोक्ष, सुमति जिन जन्म, आचार्य हस्ती पुण्यतिथि, 17. सुमति जिन दीक्षा, 18. महावीर जिन केवल, 19. स्वामी हरक-रावत गुरु स्मृति दिवस, 20. विमल जिन च्यवन, 21. अजित जिन च्यवन, 22. एकभवावतारी आचार्य सम्राट् श्री जयमल जी म. सा. का 228वाँ स्मृति दिवस, 29. श्रेयांस जिन च्यवन, 31. मुनिसुव्रत जिन जन्म।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. मजदूर दिवस, 2. पंचक प्रारम्भ, 4. वरुथिनी एकादशी व्रत, 5. प्रदोष, 6. पंचक समाप्ति, 7. टैगोर जयंती, 9. शिवाजी जयंती, 10. परशुराम जयंती, अक्षय तृतीया, 12. आद्यशंकराचार्य जयंती, रामानुज जयंती, 14. गंगोत्पत्ति, वृषभ संक्रान्ति, 19. मोहिनी एकादशी व्रत, 20. प्रदोष, 22. नृसिंह चतुर्दशी, 23. वैशाख स्नान पूर्ति, बुद्ध पूर्णिमा, 25. नारद जयंती, 29. पंचक प्रारम्भ।

अवकाश

1. मजदूर दिवस, 11. द्वितीय शनिवार, 23. बुद्ध पूर्णिमा, 25. चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

7. पाक्षिक पर्व, 22. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रात:											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रात:											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30	31		
प्रात:											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

पद्मोदय स्वर विज्ञान

नासिका के भीतर से जो श्वांस निकलता है, उसका नाम स्वर है। चित्त को अति स्थिर करके स्वर को पहचानना चाहिए और स्वर को पहचान कर भविष्य में होनहार के शुभाशुभ का विचार करना चाहिए।

स्वर का सम्बन्ध नाड़ियों से है। यद्यपि शरीर में नाड़ियाँ बहुत हैं तथापि इनमें से चौबीस नाड़ियाँ प्रधान हैं और इन चौबीस नाड़ियों में से दस नाड़ियाँ अति प्रधान हैं एवं उन दस नाड़ियों में से भी तीन नाड़ियाँ अतिशय प्रधान मानी हैं। जिनके नाम इंगला, पिंगला और शुषुम्ना हैं।

दोनों भौंओं के बीच में जो स्थान है, वह आज्ञा चक्र है। वहाँ से श्वांस का प्रकाश होता है तथा पिछली बंकनाल में से होकर नाभी में जाकर ठहरता है, वहाँ से फिर श्वांस इंगला और पिंगला द्वारा निकलता है। शरीर में मेरुदंड के दक्षिण (दाहिनी) दिशा की तरफ पिंगला (सूर्य) नाड़ी है तथा वाम (बायीं) तरफ इंगला (चन्द्र) नाड़ी है। इन दोनों नाड़ियों के मध्य में शुषुम्ना नाड़ी रहती है। शुषुम्ना नाड़ी के प्रकाश से नाक के दोनों नथुनों से स्वर (श्वांस) चलता है। इनमें से जब (इंगला नाड़ी द्वारा) बांया (डावा) स्वर चलता है तब चन्द्र का उदय जानना चाहिए तथा जब (पिंगला नाड़ी द्वारा) दाहिना (जीमना) स्वर चलता है तब सूर्य का उदय जानना चाहिए।

प्रत्येक मनुष्य जब नाक द्वारा श्वांस लेता है, तब उसकी नासिका के दोनों छिद्रों में से कभी तो नासिका के एक छिद्र में से श्वांस निकलता है और दूसरा छिद्र बन्द रहता है। जब जिस छिद्र से श्वांस निकलता हो, उसी स्वर को चलता समझना चाहिए तथा कभी-कभी एक छिद्र से तेजी के साथ श्वांस निकलता है और एक छिद्र से धीमा स्वर निकलता है अर्थात् दोनों छिद्रों में से स्वर तो निकलता है परन्तु समान स्वर नहीं निकलता। जिस तरफ का श्वांस तेजी के साथ निकलता है, उसी स्वर को चलता हुआ समझना चाहिए। दाहिने छिद्र से यदि वेग से स्वर निकले तो उसे सूर्य स्वर कहते हैं। बाएँ छिद्र से यदि वेग से स्वर निकले तो चन्द्र स्वर समझना चाहिए। दोनों छिद्रों में से श्वांस निकलता हो तो उसे शुषुम्ना स्वर कहते हैं। शुषुम्ना स्वर प्राय: उस समय चलता है जब एक स्वर से दूसरा स्वर बदलना चाहता है अथवा जप-जाप-ध्यानादि करते हैं।

सौम्य (शीतल और स्थिर) कार्यों को चन्द्र स्वर में करना शुभ है, क्रूर और चर कार्यों के लिए सूर्य स्वर शुभ है। जब दोनों स्वर समान चलते हों, उसे शुषुम्ना स्वर कहते हैं। इस स्वर में प्रभु भजन और ध्यान के सिवाय अन्य कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। क्योंकि इस स्वर में किसी कार्य को करने से वह निष्फल होता है तथा उससे क्लेश भी उत्पन्न होता है। इसलिए चन्द्र स्वर के चलते समय शीतल और स्थिर कार्यों को तथा सूर्य स्वर के चलते समय क्रूर और चर कार्यों को करना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से कार्य की सिद्धि तत्काल होती है।

कृष्ण (वदि) पक्ष का स्वामी सूर्य है और शुक्ल (सुदि) पक्ष का स्वामी चन्द्र है। इसलिए तिथियों के विभाग (हिसाब) से उस-उस काल में कार्य करने से आनन्द की प्राप्ति होती है। चन्द्र सम है, रवि विषम है, चन्द्र स्त्री है, सूर्य पुरुष है, चन्द्र गौर वर्ण है, सूर्य असित (काला) है।

शुषुम्ना नाड़ी में अग्नि का वास है, काल रूपिणी है, विष रूप है और सर्व कार्यों का नाश करने वाली है, इसलिए इस स्वर में कोई कार्य नहीं करना चाहिए।

कृष्ण पक्ष की १५ तिथियों में से क्रम-क्रम से तीन-तीन तिथियाँ सूर्य और चन्द्र की हैं। जैसे प्रतिपदा, दूज, तीज–ये तीन तिथियाँ सूर्य की हैं। चौथ, पंचमी, छठ–ये तीन तिथियाँ चन्द्र की हैं। इसी प्रकार अमावस्या तक शेष तिथियों में भी क्रमश: समझना चाहिए। इनमें जब अपनी-अपनी तिथियों में दोनों (सूर्य और चन्द्र) स्वर चलते हों, तब वे कल्याणकारी होते हैं।

शुक्ल पक्ष की १५ तिथियों में से क्रम-क्रम से तीन-तीन तिथियाँ चन्द्र और सूर्य की होती हैं, अर्थात् प्रतिपदा, दूज, तीज–ये तीन तिथियाँ चन्द्र की हैं तथा चौथ, पंचमी, छठ–ये तीन तिथियाँ सूर्य की हैं। इसी प्रकार पूर्णमासी तक शेष तिथियों में भी क्रमश: समझना चाहिए। इनमें भी इन दोनों (चन्द्र और सूर्य स्वरों) का अपनी-अपनी तिथियों में प्रात:काल चलना शुभकारी है।

मंगल, शनि और रवि इन वारों का स्वामी सूर्य है और सोम, बुध, गुरु, शुक्र–इन वारों का स्वामी चन्द्र है। इस प्रकार स्वर, तिथि, वार तथा नक्षत्र को जानकर कार्य की सफलता के लिए इन सबका सूक्ष्म रीति से विचार करना चाहिए।

स्वर विचार में निर्गुण, सगुण, उदय, अस्त आदि को भी देखना चाहिए, जिससे आप सर्व प्रकार की सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

❊ स्वरों का नाम और गुण

निर्गुण स्वर–जब स्वर नाक के छिद्र में से बाहर निकले तब निर्गुण होता है। निर्गुण और अस्त स्वर में कोई प्रश्न करे तो उसका कार्य सिद्ध न हो।

सगुण स्वर–जब स्वर नाक के छिद्र में प्रवेश करे, उसे सगुण स्वर कहते हैं। सगुण और उदय स्वर हो, तब जो प्रश्न करे वह अपनी आशा पावे।

उदय स्वर–स्वर जब दूसरे स्वर से बदलकर नया चलना शुरू होता है, उसे उदय स्वर कहते हैं।

अस्त स्वर–जब स्वर बदलने को होता है, उसे अस्त स्वर कहते हैं।

कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (एकम) के दिन यदि प्रात:काल सूर्य स्वर चले तो वह पक्ष बहुत आनन्द से बीतता है।

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (एकम) के दिन यदि प्रात:काल चन्द्र स्वर चले तो वह पक्ष भी बहुत सुख और आनन्द से बीतता है।

इसी प्रकार चन्द्र तिथि में चन्द्र स्वर तथा सूर्य तिथि में सूर्य स्वर चले तो काया को स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है, बहुत सुख और आनन्द को देने वाला है।

यदि चन्द्र की तिथि में सूर्य स्वर चले तो क्लेश और पीड़ा होती है तथा कुछ द्रव्य की भी हानि होती है।

यदि सूर्य की तिथि में प्रतिपदा आदि को प्रात:काल चन्द्र स्वर चले तो पीड़ा, कलह तथा राजा से किसी प्रकार का भय होता है और चित्त में चंचलता उत्पन्न होती है।

यदि कदाचित इन दोनों पक्षों में (कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष) पड़वा के दिन प्रात:काल शुषुम्ना स्वर चले तो उस मास में हानि और लाभ समान ही होते हैं।

वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ–ये चार राशियाँ चन्द्र स्वर की हैं तथा चन्द्र स्वर के मिलने से ये राशियाँ स्थिर कार्यों में श्रेष्ठ हैं।

मेष, कर्क, तुला और मकर–ये चार राशियाँ सूर्य स्वर की हैं। यदि इन राशियों में सूर्य स्वर चलता हो तो ये चर कार्यों में श्रेष्ठ हैं।

मिथुन, कन्या, धनु और मीन–ये राशियाँ द्विस्वभाव (शुषुम्ना स्वर) की हैं। यदि इन राशियों में शुषुम्ना स्वर चलता हो तो कोई कार्य करने से अवश्य ही हानि होती है।

उक्त बारह राशियों से बारह महीने भी जान लेना चाहिए अर्थात् ऊपर लिखी जो संक्रांति लगे वही चन्द्र, सूर्य और शुषुम्ना के महीने भी समझना चाहिए।

सूर्य संक्रांति के हिसाब से राशियों से महीने इस प्रकार समझने चाहिए–

(अ) चन्द्र स्वर के महीने–वृष से जेठ, सिंह से भादवा, वृश्चिक से मिगसर और कुम्भ से फाल्गुन। (आ) सूर्य स्वर के महीने–मेष से वैशाख, कर्क से श्रावण, तुला से कार्तिक तथा मकर से माघ। (इ) शुषुम्ना स्वर के महीने–मिथुन से आषाढ़, कन्या से आसोज, धनु से पौष एवं मीन से चैत्र मास जान लेना चाहिए।

यदि पृच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने सामने, बाँये अथवा ऊपर (ऊँचे) रहकर प्रश्न करे और उत्तरदाता का चन्द्र स्वर चलता है तो कह देना चाहिए कि तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा।

यदि पृच्छक नीची दिशा, पीछे अथवा दाहिने तरफ खड़ा रहकर कोई प्रश्न पूछे और उस समय उत्तरदाता का सूर्य स्वर चलता हो तो भी कह देना चाहिए कि तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा।

यदि कोई दाहिनी (जीमनी) तरफ खड़ा होकर प्रश्न करे और उस समय अपना सूर्य स्वर चलता हो तथा लग्न वार और तिथि के योग भी मिल जावे तो कह देना चाहिए कि तुम्हारा कार्य अवश्य सिद्ध होगा।

बायीं (डावी) तरफ रहकर कोई प्रश्न पूछे तो उस समय यदि अपना चन्द्र स्वर चलता हो और लग्न, तिथि, वार के भी सब योग मिल जावे तो कह देना चाहिए कि तुम्हारा कार्य अवश्य सिद्ध होगा।

यदि प्रश्नकर्ता दाहिनी (जीमनी) तरफ से प्रश्न करे और उस समय अपना चन्द्र स्वर चलता हो तो सूर्य की तिथि और वार के बिना वह शून्य (खाली) दिशा का प्रश्न कदापि सिद्ध न होगा।

यदि नीचे और पीछे रहकर प्रश्न करे तथा उस समय अपना चन्द्र स्वर चलता हो तो कह देना चाहिए कि कार्य नहीं होगा।

यदि कोई बायीं (डावी) तरफ से प्रश्न करे तथा उस समय अपना सूर्य स्वर चलता हो तो चन्द्र स्वर के बिना उसे कह देना चाहिए कि तुम्हारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।

इसी प्रकार यदि कोई अपने सामने अथवा ऊपर (ऊँचे) रहकर प्रश्न पूछे तथा उस समय अपना सूर्य स्वर चलता हो तो चन्द्र स्वर के योग मिले बिना कार्य कदापि सिद्ध न होगा।

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम
जैन कैलेण्डर

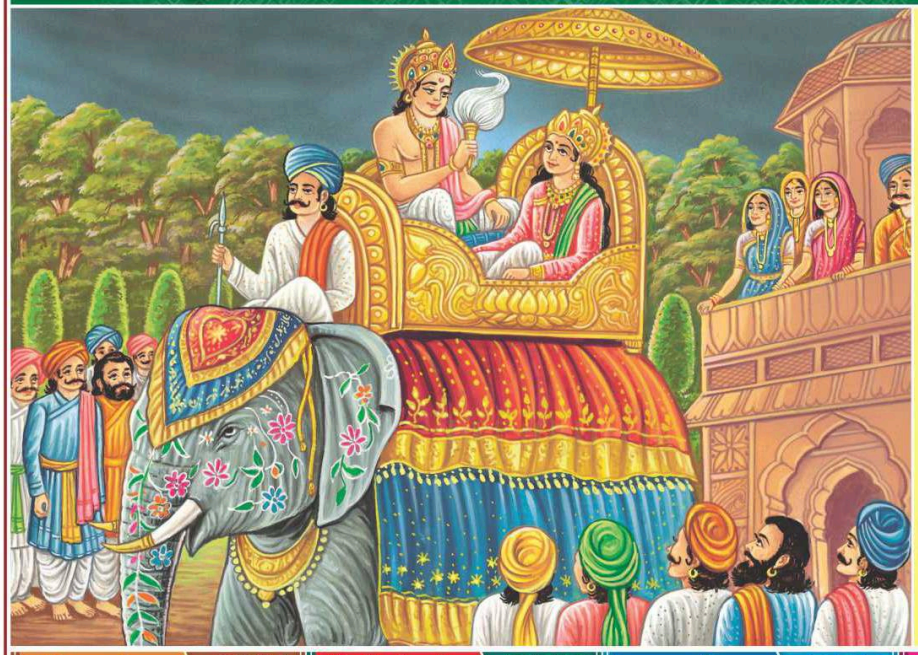

चित्र केवल परिचयार्थ : गज पर सवार महारानी पद्मावती को चामर ढुलाते राजा दधिवाहन। रानी का विचित्र दोहद पूर्ण किया।

2024

जून JUNE

पद्मोदय जैन कैलेण्डर
JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY, CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत: 2081 | वीर निर्वाण संवत: 2550 | जय संवत: 229 | जैन पंचमारक संवत: 2546

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	रेवती ७/३३ **30** मेष ७/३३ आषाढ़ वद ९-१२/२०	रेवती २५/४१ **2** मेष २५/४१ ज्येष्ठ वद ११-२६/४५	पुनर्वसु २०/१८ **9** कर्क १४/०५ ज्येष्ठ सुद ३-१५/४५	हस्त ११/१३ **16** तुला २४/३५ ज्येष्ठ सुद १०-२८/४७	पूर्वाषाढ़ा १७/०३ **23** मकर २२/४७ आषाढ़ वद २-२७/२८
सोम MON प्रात: 7.30 से 9.00 बजे	पुष्य नक्षत्र 9 जून, रविवार, रात्रि 8.18 बजे से 10 जून, सोमवार, रात्रि 9.36 बजे तक	अश्विनी २४/०६ **3** मेष ज्येष्ठ वद १२-२४/२३	पुष्य २१/३६ **10** कर्क ज्येष्ठ सुद ४-१६/१४	चित्रा १३/५० **17** तुला ज्येष्ठ सुद ११	उत्तराषाढ़ा १५/५४ **24** मकर आषाढ़ वद ३-२५/२५
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	पंचक 25 जून, मंगलवार, मध्यरात्रि उपरान्त 1.49 बजे से 30 जून, रविवार, प्रात: 7.33 बजे तक	भरणी २२/३७ **4** वृषभ २८/१६ ज्येष्ठ वद १३-२२/०६	आश्लेषा २३/३५ **11** सिंह २३/३५ ज्येष्ठ सुद ५-१७/२६	स्वाती १५/५५ **18** तुला ज्येष्ठ सुद ११-६/२७	श्रवण १४/३२ **25** कुम्भ २५/४१ आषाढ़ वद ४-२३/१३
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	शुभ दिन 5, 7, 9, 10, 11, 16, 19, 20, 24, 30 अशुभ दिन 1, 2, 3, 6, 13, 18, 21, 22, 23	कृतिका २१/१८ **5** वृषभ ज्येष्ठ वद १४-२०/००	मघा २६/०९ **12** सिंह ज्येष्ठ सुद ६-१९/१६	विशाखा १७/२१ **19** वृश्चिक ११/०३ ज्येष्ठ सुद १२-७/२९	धनिष्ठा १३/०४ **26** कुम्भ आषाढ़ वद ५-२०/५७
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	अमृत सिद्धि योग 16 जून, रविवार, हस्त नक्षत्र, सूर्योदय से प्रात: 11.13 बजे तक; 19 जून, बुधवार, अनुराधा नक्षत्र, सायं 5.21 बजे से आगामी सूर्योदय तक	रोहिणी २०/१८ **6** वृषभ अमावस्या पाक्षिक पर्व ज्येष्ठ वद ३०-१८/१२	पूर्वा फाल्गुनी २९/०७ **13** सिंह ज्येष्ठ सुद ७-२१/३४	अनुराधा १८/०८ **20** वृश्चिक ज्येष्ठ सुद १३-७/५०	शतभिषा ११/३६ **27** मीन २८/३१ आषाढ़ वद ६-१८/४१
शुक्र FRI प्रात: 10.30 से 12.00 बजे	卐	मृगसिरा १९/४३ **7** मिथुन ७/५७ चन्द्र दर्शन ज्येष्ठ सुद १-१६/४८	उत्तरा फाल्गुनी **14** कन्या ११/५३ ज्येष्ठ सुद ८-२४/०६	ज्येष्ठा १८/१७ **21** धनु १८/१७ पाक्षिक पर्व ज्येष्ठ सुद १४-७/३२	पूर्वा भाद्रपद १०/०९ **28** मीन आषाढ़ वद ७- १६/२८
शनि SAT प्रात: 9.00 से 10.30 बजे	उत्तरा भाद्रपद २७/१६ **1** मीन ज्येष्ठ वद ९/१०-७/२७,२९/०८	आर्द्रा १९/४१ **8** मिथुन ज्येष्ठ सुद २-१५/५७	उत्तरा फाल्गुनी ८/१३ **15** कन्या ज्येष्ठ सुद ९-२६/३६	मूल १७/५३ **22** धनु पूर्णिमा ज्येष्ठ सुद १५/१-६/३१,२९/१५	उत्तरा भाद्रपद ८/४८ **29** मीन आषाढ़ वद ८- १४/२१

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

जून	1	6	11	16	21	26	30
सूर्योदय	5.42	5.42	5.42	5.43	5.44	5.45	5.46
सूर्यास्त	6.32	6.34	6.35	6.36	6.38	6.38	6.39
नवकारसी	6.30	6.30	6.30	6.31	6.32	6.33	6.34
पोरसी	8.54	8.55	8.55	8.56	8.57	8.58	8.59

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

1. मुनिसुव्रत जिन मोक्ष, वासुपूज्य जिन च्यवन, 4. शांति जिन जन्म, शांति जिन मोक्ष, 5. शांति जिन दीक्षा, 11. धर्म जिन मोक्ष, 19. सुपार्श्व जिन जन्म, 20. सुपार्श्व जिन दीक्षा, 21. आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ (गाज बीज होने पर अस्वाध्याय नहीं), 24. जयगच्छाधिपति बारहवें पट्टधर आचार्य प्रवर श्री पार्श्वचंद्र जी म. सा. का 64वाँ दीक्षा दिवस, 25. ऋषभ जिन च्यवन, 28. विमल जिन मोक्ष, 30. नेमि जिन दीक्षा।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

2. अपरा एकादशी व्रत, पंचक समाप्ति, 4. प्रदोष, 6. शनैश्चर जयंती, वट पूजनम्, 9. प्रताप जयन्ती, 14. दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, मिथुन संक्रान्ति, 16. गंगा दशहरा व्रत, 18. निर्जला एकादशी व्रत, 19. प्रदोष, वट सावित्री व्रत, 20. सूर्य दक्षिणायन प्रारम्भ, 21. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 22. कबीर जयंती, 25. पंचक प्रारम्भ, 30. पंचक समाप्ति।

अवकाश

8. द्वितीय शनिवार, 17. ईद, 22. चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

6. पाक्षिक पर्व, 21. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रात:											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रात:											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30			
प्रात:											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

J.P.P. JAIN PRAKASHAN, CHENNAI®
।। पूज्य प्रवर जयमल्लजी, राय आस सबलेश। नमो हीर कस्तूर, भीष्म कानमल्लेश।।

पद्मोदय यंत्र विज्ञान

लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं

विधि—शुद्ध एवं पवित्र होकर ब्रह्मचर्य पालन के साथ दीपावली की मध्यरात्रि में अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख विधिपूर्वक पास रखें। लक्ष्मी प्राप्ति होवे, आनन्द मंगल वर्ते।

गया व्यक्ति घर लौटे यंत्र

७२	७९	२	७
६	३	७६	७५
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

विधि—मार्ग की बालू पर लिख ऊपर से कोड़े मारे। गया व्यक्ति पुनः घर लौट आये।

सम्मान प्राप्ति यंत्र

१६	२९	२६	२३
२७	२२	१७	२८
२१	२४	३१	१८
३०	१९	२०	२५

विधि—शुभ दिन शुभ मुहूर्त्त में भोजपत्र या शुद्ध सफेद कागज पर अष्टगंध से लिखकर भुजा में या जेब में धारण करके जहाँ जाए, वहाँ उसे सम्मान मिले। उसकी प्रतिष्ठा बढ़े।

पति-पत्नि प्रेम वृद्धि यंत्र

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

विधि—शुद्ध एवं पवित्र होकर भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से यंत्र लिखें। अगर पत्नी नाराज हो तो पति यंत्र के नीचे अपनी पत्नी का नाम और उसकी माँ का नाम लिखे। अगर पति नाराज हो तो पत्नी पति का नाम एवं पति की माँ का नाम लिख विधिपूर्वक यंत्र को अपने पास रखे। दोनों में परस्पर प्रेम वृद्धि हो।

चेचक रक्षा यंत्र

१४८८९	१४८८४	१४८९१
१४८९०	१४८८८	१४८८६
१४८८५	१४८९२	१४८८७

विधि—यंत्र लिखकर विधिपूर्वक बच्चे के गले में धारण करावें। बच्चा चेचक से बचा रहेगा।

अकाल मृत्यु निवारण यंत्र

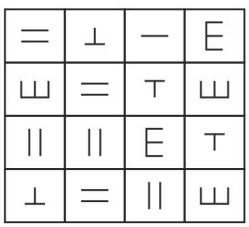

विधि—अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख यंत्र को विधिपूर्वक ताबीज में डाल गले में बाँधें। अकाल मृत्यु नहीं होवे।

कामण टूमण निवारण यंत्र

४५	५२	२	८
७	३	४९	४८
५१	४६	९	१
४	६	४७	५०

विधि—शुद्धता से दीपावली की रात्रि में भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से यंत्र लिखा विधिपूर्वक गले में धारण करे तो उसके ऊपर कामण–टूमण परकृत जादू–टोना का असर नहीं होवे।

मसान रोग उपशमन यंत्र (सर्पिणी रोगनाशक)

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

विधि—पवित्रतापूर्वक भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र लिख गले में बाँधें। मसान रोग शांत होवे।

मनोकामना पूरक यंत्र

१६५६१८	१६५६२१	१६५६२५	१६५६११
१६५६२४	१६५६१२	१६५६१७	१६५६२२
१६५६१३	१६५६२७	१६५६१९	१६५६१६
१६५६२०	१६५६१५	१६५६१४	१६५६२६

विधि—शुद्ध एवं पवित्र होकर भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र लिख विधिपूर्वक चाँदी के मादलिये में डालकर पुरुष दायीं भुजा में और स्त्री बायीं भुजा में बाँधे तो जहाँ जाये वहाँ सम्मान पावे। हर मकसद पूर्ण होवे। खून–खराबा हो रहा हो और यंत्र धारणकर्त्ता वहाँ से गुजरेगा तो भी उसे कुछ नहीं होगा। दुश्मन दबा रहता है। हर आने वाली परेशानी में यंत्र के प्रभाव से कोई न कोई मददगार मिल ही जाता है। बड़ा प्रभावशाली यंत्र है।

दरिद्रता निवारण यंत्र

३१	३६	२५	३८
२६	३७	३२	३५
४०	२७	३४	२९
३३	३०	३९	२८

विधि—अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर विधिपूर्वक पास में रखें। दरिद्रता–गरीबी मिटे।

बार-बार गर्भपात होने पर यंत्र

७२	७५	७८	६५
७७	६६	७१	७६
६७	८०	७३	७०
७४	६९	६८	७९

विधि—जिस औरत के बार–बार गर्भपात होता हो, यह यंत्र गर्भावस्था में उसके कमर में बाँधे। स्तंभन हो।

गर्भ रहे यंत्र

२३	३०	२	७
६	३	२७	२६
२९	२४	८	१
४	५	२५	२८

विधि—अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख विधिपूर्वक नारी कमर में बाँधे तो गर्भ रहे। भुजा में बाँधे तो राजसभा में जीत होवे।

आधा सिर दर्द निवारण यंत्र

२३	२६	२९	१६
२८	१७	२२	२७
१८	३१	२४	२१
२५	२०	१९	३०

विधि—भोजपत्र पर अष्टगंध से लिख गले में बाँधें। आधा सिर दर्द का निवारण होवे।

चोरीगत वस्तु अभिज्ञान

अंधलो	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	मिले पूर्वे
मंदलो	मृ.	आ.	ह.	ज्ञु.	उ.	श.	अ.	प्राप्ति दक्षिणे
मध्यलो	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	प्राप्ति पश्चिमे
सुलोचन	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	कुयोग उत्तरे
लापता अथवा चोरी गये नक्षत्रों से मिलान करें।								

विधि—लापता अथवा चोरी गये समय को कैलेण्डर में नक्षत्रों से मिलान करें। नक्षत्रों को 4 में वर्गीकृत किया गया है—

अंधलोचन—पूर्व दिशा में शीघ्रातिशीघ्र मिले।

मंदलोचन—दक्षिण दिशा में मिले।

मध्यलोचन—पश्चिम दिशा में मिल सकता है।

सुलोचन—कठिन परिश्रम करने पर मिले या न भी मिले।

कार्य सिद्धि गौतम लब्धि यंत्र

ॐ	न	मो	भ	ग	व	ओ
म	म	म	नो	वां	छि	गो
स्स	द्धि	स	र्व	सि	त	य
ण	वृ	हा	ह्रीं	द्धिं	आ	म
मा	द्धि	स्वा	रु	कु	ण	स्स
ण	ऋ	य	र	पू	य	सि
क्खी	अ	स्स	द्ध	बु	स्स	द्ध

विधि—दीपावली के तीन दिनों में तेला तप करके साढ़े बारह हजार बार जपे, मंत्र सिद्धि हो। पश्चात् यंत्र लिखकर विधिपूर्वक गल्ले में रखें। सर्वकार्य सिद्ध होवे। व्यापार बढ़े, आनन्द मंगल रहे।

लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

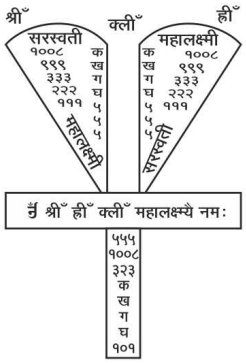

विधि—इस यंत्र को दीपावली के दिन रोहिणी नक्षत्र में अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र अथवा श्वेत कागज पर लिखकर भंडार में रखने से श्री लक्ष्मी की प्राप्ति होवे।

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चाँद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम
जैन कैलेण्डर

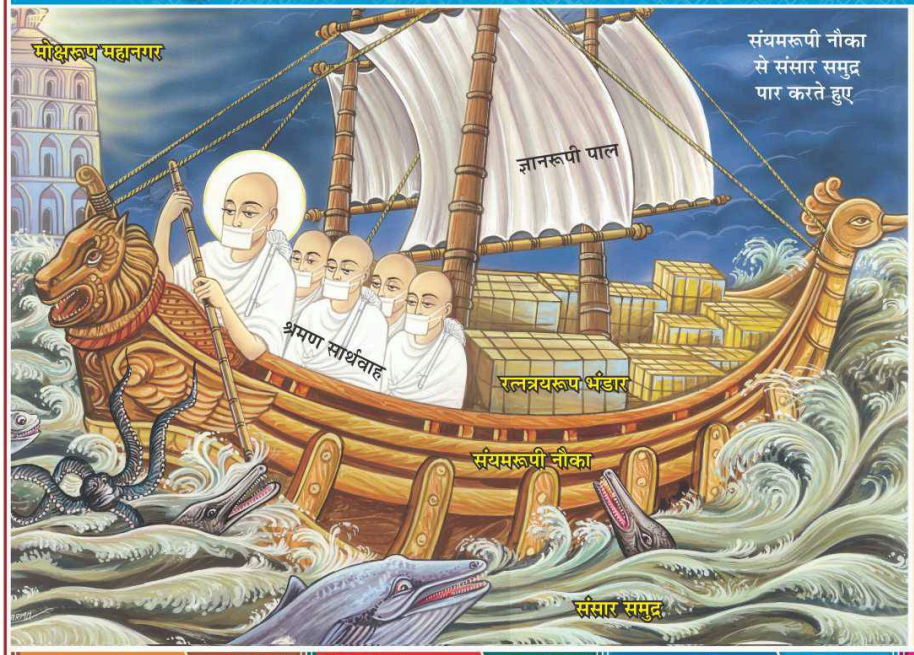

चित्र केवल परिचयार्थ : संसाररूपी समुद्र को संयमरूपी नौका से पार करते श्रमणरूपी सार्थवाह। इस नौका पर ज्ञानरूपी पाल लगा है। रत्नत्रयरूपी भंडार भरा है। यह नौका मोक्षरूप महानगर की ओर जा रही है। संसार समुद्र में अज्ञानरूपी मगरमच्छ आर्त्त और रौद्र ध्यानरूपी भयंकर जलजीव भरे पड़े हैं।

2024
जुलाई JULY

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY,
CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत्ः 2081 | वीर निर्वाण संवत्ः 2550 | जय संवत्ः 229 | जैन पंचमारक संवत्ः 2546-47

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 7 जुलाई, रविवार, सूर्योदय से अहोरात्रि तक	पुष्य कर्क **7** चन्द्र दर्शन आषाढ़ सुद २-२८/५९	चित्रा २२/०४ तुला ८/४० **14** आषाढ़ सुद ८-१७/२५	उत्तराषाढ़ा २४/१० मकर ७/२४ **21** पूर्णिमा आषाढ़ सुद १५-१५/४५	अश्विनी ११/४५ मेष **28** श्रावण वद ८-१९/२७
सोम MON प्रात: 7.30 से 9.00 बजे	अश्विनी ६/२४ मेष **1** भरणी २९/२५ आषाढ़ वद १०-१०/२७	पुष्य ६/०० कर्क **8** आषाढ़ सुद ३	स्वाती २४/२८ तुला **15** आषाढ़ सुद ९-१९/१९	श्रवण २२/१७ मकर **22** श्रावण वद १-१३/०९	भरणी १०/५२ वृषभ १६/४२ **29** श्रावण वद ९-१७/५४
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	कृतिका २८/३७ वृषभ ११/१२ **2** आषाढ़ वद ११-८/४२	आश्लेषा ७/४९ सिंह ७/४९ **9** आषाढ़ सुद ३-६/०७	विशाखा २६/१२ वृश्चिक १९/५० **16** आषाढ़ सुद १०-२०/३४	धनिष्ठा २०/१५ कुम्भ ९/१६ **23** श्रावण वद २-१०/२२	कृतिका १०/१९ वृषभ **30** श्रावण वद १०-१६/४२
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	रोहिणी २८/०५ वृषभ **3** आषाढ़ वद १२-७/११	मघा १०/१० सिंह **10** आषाढ़ सुद ४-७/४९	अनुराधा २७/१० वृश्चिक **17** आषाढ़ सुद ११-२१/०३	शतभिषा १८/११ कुम्भ **24** श्रावण वद ३/४-७/२९,२८/३९	रोहिणी १०/०७ मिथुन २२/१० **31** श्रावण वद ११-१५/५२
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	मृगसिरा २७/५२ मिथुन १५/५६ **4** आषाढ़ वद १३/१४-५/५४, २६/५८	पूर्वा फाल्गुनी १२/५८ कन्या १९/४४ **11** आषाढ़ सुद ५-१०/००	ज्येष्ठा २७/२२ धनु २७/२२ **18** आषाढ़ सुद १२-२०/४४	पूर्वा भाद्रपद १६/१४ मीन १०/४२ **25** श्रावण वद ५- २५/५८	**पंचक** 23 जुलाई, मंगलवार, प्रात: 9.16 बजे से 27 जुलाई, शनिवार, मध्याह्न 12.58 बजे तक
शुक्र FRI प्रात: 10.30 से 12.00 बजे	आर्द्रा २८/०४ मिथुन **5** पाक्षिक पर्व अमावस्या आषाढ़ वद ३०-२८/२७	उत्तरा फाल्गुनी १६/०३ कन्या **12** आषाढ़ सुद ६-१२/२९	मूल २६/५२ धनु **19** आषाढ़ सुद १३-१९/४०	उत्तरा भाद्रपद १४/२८ मीन **26** श्रावण वद ६-२३/३१	**शुभ दिन** 2, 3, 7, 9, 11, 12, 17, 20, 21, 22, 25, 26, 27, 28, 30, 31 **अशुभ दिन** 4, 5, 18, 24
शनि SAT प्रात: 9.00 से 10.30 बजे	पुनर्वसु २८/४६ कर्क २२/३३ **6** आषाढ़ सुद १- २८/२७	हस्त १९/११ कन्या **13** आषाढ़ सुद ७-१५/०४	पूर्वाषाढ़ा २५/४५ धनु **20** चातुर्मासिक पर्व आषाढ़ सुद १४-१७/५८	रेवती १२/५८ मेष १२/५८ **27** श्रावण वद ७-२१/२०	**अमृत सिद्धि योग** 17 जुलाई, बुधवार, अनुराधा नक्षत्र, सूर्योदय से अर्धरात्रि उपरान्त 3.10 बजे तक; 26 जुलाई, शुक्रवार, रेवती नक्षत्र, मध्याह्न 2.28 बजे से आगामी सूर्योदय तक

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

जुलाई	1	6	11	16	21	26	31
सूर्योदय	5.47	5.48	5.49	5.51	5.52	5.53	5.54
सूर्यास्त	6.39	6.40	6.40	6.39	6.39	6.38	6.36
नवकारसी	6.35	6.36	6.37	6.39	6.40	6.41	6.42
पोरसी	9.00	9.01	9.01	9.03	9.03	9.04	9.04

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

8. जयगच्छीय श्रुताचार्य स्वामी चौथ जन्म-स्मृति दिवस, 12. महावीर जिन च्यवन, 14. अरिष्टनेमि जिन मोक्ष, 20. वासुपूज्य जिन मोक्ष, चातुर्मास प्रारम्भ, 21. जैन पंचमारक का 2546वाँ संवत्सर समाप्त, 22. जैन पंचमारक का 2547वाँ संवत्सर प्रारम्भ, 24. श्रेयांस जिन मोक्ष, 27. अनंत जिन च्यवन, आचार्य श्री जीतमलजी म. सा. का जन्म दिवस, 28. नेमि जिन जन्म, 29. कुन्थु जिन च्यवन।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

2. योगिनी एकादशी व्रत, 3. प्रदोष, 16. कर्क संक्रान्ति, 17. देवशयनी एकादशी व्रत, 19. प्रदोष, 20. वायु परीक्षा, 21. व्यास पूजा, गुरु पूर्णिमा, 23. पंचक प्रारम्भ, 27. पंचक समाप्ति, 31. कामिका एकादशी व्रत।

अवकाश

13. द्वितीय शनिवार, 17. मोहर्रम, 21. गुरु पूर्णिमा, 27. चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

5. पाक्षिक पर्व, 20. चातुर्मासिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रात:											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रात:											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30	31		
प्रात:											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

पद्मोदय महामंत्र विज्ञान

● सर्वकार्यकारी पद्मावती साबर मंत्र ●

ॐ पद्महस्ति पद्मासणि सिन्दुरवर्णी त्रैलोक्य प्यारी हृदय समरूँ आदि कुमारी पद्मावती पद्म गजनी मम वांछितं पूरय पूरय।

विधि—इस मंत्र का शुद्ध एवं पवित्र होकर नित्य 500 बार जप करें, कामना पूरी होवे। नित्य नियत समय नियत स्थान पर जपें। इच्छानुसार सारा कार्य होवे। मंत्र अद्‌भुत शक्तिशाली है, श्रद्धा रखें।

● स्वप्न में प्रश्न का उत्तर मिले मंत्र ●

ॐ ऐं क्लीं कामेश्वरी पद्मावत्यै स्वाहा।

विधि—शुक्रवार से प्रारम्भ करके अगले शुक्रवार पर्यंत नित्य विधिपूर्वक 113 माला फेरें। मन में जिस काम के लिये पूछना हो, उसका दृढ़ संकल्प लेकर माला फेरें। सात दिन यदि अखण्ड मौन रखे तो शीघ्र लाभ होवे। साधना के बाद रात में स्वप्न में प्रत्युत्तर मिलता है। व्यापार में भी लाभ होता है।

● सर्वदोष निवारिणी मंत्र ●

ॐ ह्रीं अप्रतिचक्राय स्वाहा।

विधि—एक माला फेरकर चावल को अभिमंत्रित करके प्रहार करें, फेंके। सामने वाले के सर्व दोषों का निवारण होवे।

● लक्ष्मी प्रसन्न होवे मंत्र ●

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम गृहं तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

विधि—एक हजार आठ बार नित्य जपें। लक्ष्मी प्रसन्न होवे और धन देवे।

● सर्वसिद्धिदायक मंत्र ●

ॐ ह्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणप्रिये पद्मावती श्रीयं मम कुरु कुरु दुरितानि हर सर्व दुष्टानां मुखं बंधय बंधय ह्रीं स्वाहा।

विधि—12,500 जप करके मंत्र सिद्ध करें। पश्चात् नित्य एक माला जपें। सभी कार्यों में सहायक होवे। अर्थात् कार्य पूर्ण होता है।

● सर्वरक्षा मंत्र ●

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष-रक्ष हुं फट् स्वाहा।

विधि—पीली सरसों को इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर चारों दिशाओं में फेंके साथ ही ये मंत्र बोलते हुए सब दिशाओं में ताली बजावें एवं तीन बार चुटकी बजावें। सर्वरक्षा होवे।

● प्रवचन मंत्र ●

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं हं सौ नमः।

विधि—व्याख्यान, भाषण के समय 21 बार जपें। सभा प्रभावित होवे। एक लाख जपे तो वचन सिद्धि होवे।

● बप्पभट्टी सूरी का सरस्वती मंत्र ●

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं श्रीं हसकल ह्रीं ऐं नमः।

विधि—नित्य प्रातःकाल एक माला फेरें। सरस्वती प्रसन्न होवे। बुद्धि निर्मल एवं तेज होवे।

● ज्वर निवारण मंत्र ●

श्रीकृष्ण बल भद्रश्च, प्रद्युम्न अनिरुद्धक।
ऊषा स्मरण मात्रेण, ज्वर व्याधि विमुच्यते॥

विधि—शुद्ध होकर इस श्लोक का मन ही मन ज्वर वाला व्यक्ति जाप करता रहे तो सभी प्रकार के ज्वर का निवारण होता है।

● व्यापार वृद्धि मंत्र ●

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमल दल निवासे श्री महालक्ष्मी नमो नमः। लक्ष्मी माई सत्त की सवाई, आओ चेतो करो भलाई। ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई, ऋद्धि सिद्धि खगे तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

विधि—दुकान खोलते समय गद्दी में बैठकर सबसे पहले इस मंत्र की एक माला फेरकर फिर लेन-देन करे तो व्यापार एवं धन की वृद्धि हो।

● बुद्धि वृद्धि मंत्र ●

ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनी
बुद्धि वर्द्धीनि ॐ ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि—सूर्य या चंद्र गहण के दिन से प्रारम्भ करें। प्रातःकाल एक माला फेरें। विद्या बढ़े, बुद्धि तेज होवे।

● रोजगार प्राप्ति मंत्र ●

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहिनी सर्व कार्य करनी मम विकट संकट हरणी मम मनोरथ पूरणी मम चिंता चूरणी ॐ नमो पद्मावती नमः स्वाहा।

विधि—त्रिकाल अर्थात् तीनों समय प्रातः सूर्योदय के वक्त, दोपहर बारह बजे, सायं संध्याकाल में एक-एक माला फेरे तो बेरोजगारी मिटे।

● रोग निवारण मंत्र ●

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा नमः सर्व विघ्न रोग उपद्रव विनाशनाय शांति कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—रोग निवारणार्थ नित्य 108 बार जपें।

● लक्ष्मी प्राप्ति गौतम स्वामी का मंत्र ●

ॐ नमो गोयम स्वामी भगवउ ऋद्धि समो अक्खीण समो आण आण भरि भरि पुरि पुरि कुरु कुरु ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—नित्य प्रातःकाल शुद्ध होकर एक माला फेरें। लक्ष्मी की प्राप्ति होवे। सुपारी को 21 बार अथवा 108 बार मंत्रित कर जिस वस्तु में डाले वो वस्तु अक्षय होवे।

● संतान प्राप्ति मंत्र ●

ॐ नमो भगवते पुत्रार्थ सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ह्रीं नमः।

विधि—शुद्ध एवं पवित्र हो नये वस्त्र धारण कर पूनम के दिन 10 माला फेरें। पश्चात् शुक्लपक्ष के दिनों में 3 माला और कृष्णपक्ष के दिनों में नित्य निरंतर 1 माला फेरना। पश्चात् 9 बार नवकार मंत्र जपना। श्रद्धा रखें।

● बुद्धि विकास मंत्र ●

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं नमः।

विधि—नित्य प्रातःकाल एक माला जपें। बुद्धि का विकास हो। ज्ञान शीघ्र चढ़े।

● भूत बाधा निवारण मंत्र ●

ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा सर्वभूतादिक स्तंभय स्तंभय मोहय-मोहय अंधय अंधय मूकवत् कारय कुरु कुरु ह्रीं भूतान् ठः ठः ठः।

विधि—जिसे भी भूत-प्रेत-पिशाच-डाकन आदि सतावे उसे मुट्ठी बाँध 108 बार पढ़ उसे झाड़े। सुबह-शाम दो वक्त झाड़े, ठीक होवे।

● उपद्रव निवारण रक्षा मंत्र ●

ॐ णमो अरिहंताणं ह्रां हृदयं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
ॐ णमो आयरियाणं ह्रूं शिखां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रों एहि एहि भगवति वज्र कवचं वज्रिणि रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
ॐ णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः क्षिप्रं साधय-साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्टान् रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

विधि—कहीं भी, कभी भी, किसी भी प्रकार का उपद्रव, संकट क्यों न आये, खाते-पीते-सोते-जागते-चलते-फिरते, घर में, बाहर में, सफर में तत्काल इसका स्मरण करना प्रारम्भ करें। सर्व उपद्रव मिटे, संकट टले, जान-माल बचे।

● धन-लाभ प्राप्ति मंत्र ●

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मीं पूरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—धनतेरस को 40 माला, रूप चौदस को 42 माला तथा दीपावली को 43 माला का जाप करें। वह वर्ष निश्चय ही लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए उत्तम होगा। उत्तर की ओर मुँह करके जाप करना चाहिए। सफेद वस्त्र, सफेद ऊनी आसन, लाल माला का उपयोग करना चाहिए।

● भोजन पचाने का मंत्र ●

ॐ नमो आदेश गुरु को अगस्त्यं कुंभकरणं च शतिं च वडवानलः आहार पाचनार्थाय स्मरत भीमस्य पंचकम् स्फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि—खाना खाने के बाद सात बार मंत्र पढ़कर पेट पर हाथ फेरें तो अधिक खाया हुआ खाना हजम हो जाता है।

● पेट दर्द दूर मंत्र ●

ॐ नमो इट्ठी मीट्ठी भस्म कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—12,500 जाप कर मंत्र सिद्ध कर लें। 21 बार पानी को अभिमंत्रित कर रोगी को पिलायें तो पेट का दर्द दूर हो।

नोट—मंत्र-सिद्धि व साधना के बाद भी आहार शुद्धि एवं आचरण शुद्धि का विशेष विवेक रखें। निर्व्यसनी जीवन जीने पर ही साधना फलीभूत होती है।

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

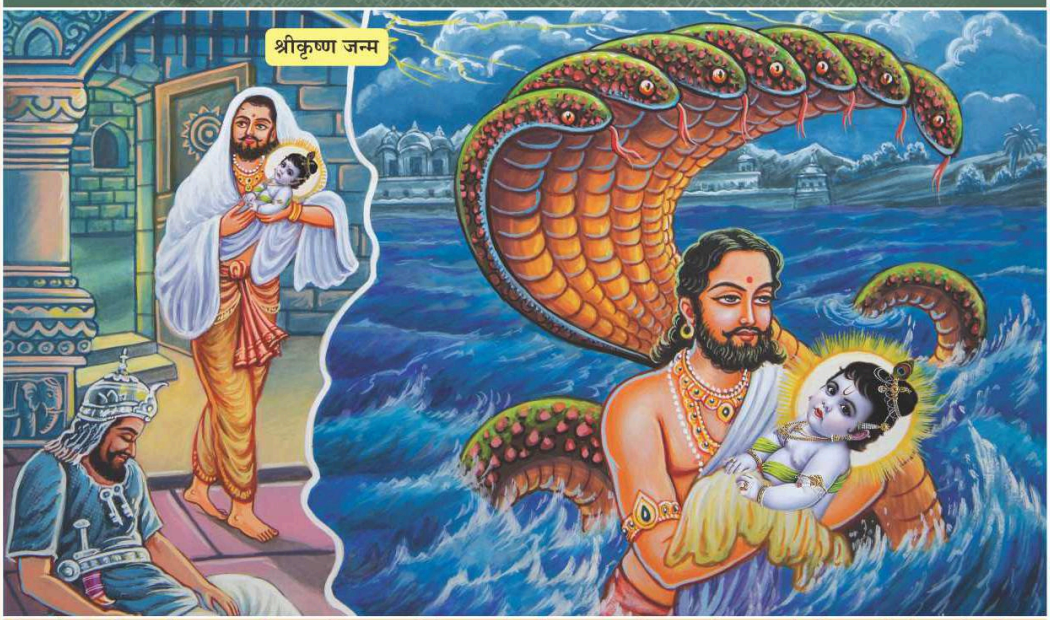

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर

2024

अगस्त AUGUST

चित्र केवल परिचयार्थ : नवजात श्रीकृष्ण को कारागार में से मथुरा ले जाते हुए। उफनती यमुना को पार करके श्रीकृष्ण को गोकुल ले जाते हुए।

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY,
CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत्ः 2081 | वीर निर्वाण संवत्ः 2550 | जय संवत्ः 229 | जैन पंचमारक संवत्ः 2547

वार	विशेष					
रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 3 अगस्त, शनिवार, प्रातः 11.56 बजे से 4 अगस्त, रविवार, मध्याह्न 1.24 बजे तक; 30 अगस्त, शुक्रवार, सायं 5.52 बजे से 31 अगस्त, शनिवार, सायं 7.38 बजे तक	पुष्य १३/२४ कर्क **4** पाक्षिक पर्व, अमावस्या श्रावण वद ३०-१६/४३	स्वाती तुला **11** श्रावण सुद ७	उत्तराषाढ़ा १०/१० मकर **18** श्रावण सुद १४-२७/०१	भरणी १६/४३ वृषभ २२/२७ **25** भाद्रपद वद ७-२७/३८
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	**पंचक** 19 अगस्त, सोमवार, सायं 6.55 बजे से 23 अगस्त, शुक्रवार, सायं 7.53 बजे तक	आश्लेषा १५/२० सिंह १५/२० **5** चन्द्र दर्शन श्रावण सुद १-१८/०३	स्वाती ८/२८ वृश्चिक २८/१२ **12** श्रावण सुद ७-७/५२	श्रवण ८/०६ कुम्भ १८/५५ **19** पाक्षिक पर्व, पूर्णिमा, धनिष्ठा २९/४२ श्रावण सुद १५-२३/५२	कृतिका १५/५२ वृषभ **26** भाद्रपद वद ८-२६/१७
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	**शुभ दिन** 2, 3, 13, 14, 15, 16, 18, 19, 21, 26, 28, 29, 30 **अशुभ दिन** 1, 4, 7, 12, 17, 20, 23, 24	मघा १७/४१ सिंह **6** श्रावण सुद २-१९/५१	विशाखा १०/४१ वृश्चिक **13** श्रावण सुद ८-९/३०	शतभिषा २७/०६ कुम्भ **20** भाद्रपद वद १-२०/३०	रोहिणी १५/३३ मिथुन २७/३६ **27** भाद्रपद वद ९-२५/३०
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	**अमृत सिद्धि योग** 14 अगस्त, बुधवार, अनुराधा नक्षत्र, सूर्योदय से मध्याह्न 12.11 बजे तक; 23 अगस्त, शुक्रवार, रेवती नक्षत्र, सूर्योदय से सायं 7.53 बजे तक	पूर्वा फाल्गुनी २०/२५ कन्या २७/०९ **7** श्रावण सुद ३-२२/०२	अनुराधा १२/११ वृश्चिक **14** श्रावण सुद ९-१०/२३	पूर्वा भाद्रपद २४/३० मीन १९/०९ **21** भाद्रपद वद २-१७/०५	मृगसिरा १५/४७ मिथुन **28** भाद्रपद वद १०-२५/१६
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	मृगसिरा १०/१८ मिथुन **1** श्रावण वद १२-१५/२५	उत्तरा फाल्गुनी २३/२७ कन्या **8** श्रावण सुद ४-२४/३१	ज्येष्ठा १२/५१ धनु १२/५१ **15** श्रावण सुद १०-१०/२६	उत्तरा भाद्रपद २२/०४ मीन **22** भाद्रपद वद ३-१३/४५	आर्द्रा १६/३४ मिथुन **29** भाद्रपद वद ११-२५/३४
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	आर्द्रा १०/५४ कर्क २१/३८ **2** श्रावण वद १३-१५/२४	हस्त २६/३७ कन्या **9** श्रावण सुद ५-२७/०८	मूल १२/४१ धनु **16** श्रावण सुद ११-९/३८	रेवती १९/५३ मेष १९/५३ **23** भाद्रपद वद ४-१०/३९	पुनर्वसु १७/५२ कर्क ११/३० **30** भाद्रपद वद १२-२६/२४
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	पुनर्वसु ११/५६ कर्क **3** श्रावण वद १४-१५/५०	चित्रा २९/४२ तुला १६/११ **10** श्रावण सुद ६-२९/४०	पूर्वाषाढ़ा ११/४५ मकर १७/२५ **17** श्रावण सुद १२/१३-८/०४,२९/४९	अश्विनी १८/०५ मेष **24** भाद्रपद वद ५/६-७/५३,२९/३१	पुष्य १९/३८ कर्क **31** भाद्रपद वद १३-२७/४२

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

अगस्त	1	6	11	16	21	26	31
सूर्योदय	5.55	5.56	5.56	5.57	5.58	5.58	5.58
सूर्यास्त	6.36	6.34	6.32	6.29	6.27	6.24	6.20
नवकारसी	6.43	6.44	6.44	6.45	6.46	6.46	6.46
पोरसी	9.05	9.05	9.05	9.05	9.05	9.04	9.03

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

6. सुमति जिन च्यवन, 9. अरिष्टनेमि जिन जन्म, 10. अरिष्टनेमि जिन दीक्षा, 13. पार्श्व जिन मोक्ष, 16. आचार्य श्री शुभचंद्रजी म. सा. की 85वीं जन्म जयन्ती, 18. जयगच्छीय सप्तम पट्टधर आचार्य श्री भीकमचंदजी म. सा. जन्म जयंती, स्वामी हरक स्वामी पद प्रदान दिवस, मरुधर केसरी जन्म जयंती, 19. मुनिसुव्रत जिन च्यवन, रक्षाबंधन, 25. शांति जिन च्यवन, चन्द्रप्रभ जिन मोक्ष, 26. सुपार्श्व जिन च्यवन।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. प्रदोष, 4. हरियाली अमावस्या, 7. श्रावण की तीज, 9. नाग पंचमी, 10. कल्की जयंती, 11. तुलसी जयंती, 15. स्वतंत्रता दिवस, 16. पवित्रा एकादशी व्रत, सिंह संक्रान्ति, 17. प्रदोष, 19. पंचक प्रारम्भ, रक्षा बंधन, 23. पंचक समाप्ति, 26. जन्माष्टमी, 27. गोगा नवमी, 29. कामिका एकादशी व्रत, 31. प्रदोष।

अवकाश

10. द्वितीय शनिवार, 15. स्वतंत्रता दिवस, 19. रक्षा बंधन, 24. चतुर्थ शनिवार, 26. जन्माष्टमी।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

4. पाक्षिक पर्व, 19. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रातः											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रातः											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30	31		
प्रातः											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

पद्मोदय आरोग्य विज्ञान

जहाँ यतना वहाँ पाप कर्मों का बंध नहीं!

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयं मासे जयं सए।
जयं भुंजंतो-भासंतो, पाव कम्मं न बंधइ॥

(–प्रभु महावीर वाणी, दशवैकालिक सूत्र 4/8)

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर प्रभु महावीर स्वामी ने फरमाया है कि यतनापूर्वक चले, यतनापूर्वक खड़ा हो, यतनापूर्वक बैठे, यतनापूर्वक सोए, यतनापूर्वक खाए और यतनापूर्वक बोले तो पाप कर्मों का बंध नहीं होता है।

दस प्रकार के सुख

विवेक (यतना) पूर्वक सभी प्रवृत्ति करने से साधक पाप कर्मों से भी बचता है और निम्न दस सुखों को भी प्राप्त करता है–

1. आरोग्य (शरीर की निरोगता-स्वस्थता)।
2. दीर्घ आयु (लम्बे काल तक का सुखी जीवन)।
3. आढ्यत्व (विपुल धन-सम्पत्ति का होना)।
4. काम (प्रीतिकारक शुभ शब्द-रूप की प्राप्ति)।
5. भोग (शुभ गंध-रस और स्पर्श की प्राप्ति)।
6. संतोष (इच्छाओं का अल्प होना)।
7. अस्ति (आवश्यकतानुसार उसी समय वस्तु की प्राप्ति)।
8. शुभ भोग (आनंदित प्रशस्त भोगों की प्राप्ति)।
9. निष्क्रमण (संसार के जंजाल से निकलकर संयममय जीवन प्राप्त करना, भागवती दीक्षा अंगीकार करना)।
10. अव्याबाध सुख (बाधा रहित मोक्ष के शाश्वत-सुख)।

(–प्रभु महावीर वाणी, ठाणांग सूत्र, ठाणा 10)

उक्त 10 सुखों में प्रथम सुख आरोग्यता बढ़ाना है। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व चिंतित है आरोग्यता के लिये। आरोग्यता पुण्यवानी के फलस्वरूप प्राप्त होती है लेकिन उसमें निमित्त आहार-विहार, चिंतन-मनन आदि बनते हैं।

रोग उत्पत्ति के नौ कारण

तीर्थंकर प्रभु महावीर ने ठाणांग सूत्र के नौवें स्थान के आठवें सूत्र में रोग उत्पत्ति के नौ कारण बताये हैं। रोग जिस कारण से आया है यदि उस कारण का निवारण कर दिया जाता है अथवा कारण से बचने का प्रयत्न किया जाता है तो आरोग्य सुख रह सकता है। रोग उत्पत्ति के नौ कारण निम्न हैं–

1. अत्यासन (अधिक बैठना या अधिक खाना)।
2. अहितासन (आरोग्य के प्रतिकूल आसन से बैठना या अपथ्यकारी भोजन करना)।
3. अति निद्रा (अधिक नींद लेना)।
4. अति जागरण (अधिक जागना)।
5. उच्चार निरोध (बड़ी नीत (मल) को रोकना)।
6. प्रस्रवण निरोध (लघु नीत (मूत्र) को रोकना)।
7. अध्व गमन (मार्ग में अधिक चलना)।
8. भोजन प्रतिकूलता (प्रकृति के प्रतिकूल भोजन करना)।
9. इन्द्रियार्थ विकोपन (काम-विकार का उत्पन्न होना, विषय-भोगों में अति गृद्ध रहना)।

(–प्रभु महावीर वाणी, ठाणांग सूत्र 9/8)

कारण–कार्य के सहचर सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए रोग उत्पत्ति के कारणों से यदि साधक बचता है तो आरोग्य सुख दीर्घ आयु तक बना रहता है।

भगवान महावीर के उपासक प्रमुख 10 श्रावकों के जीवन में यही बात मुख्य थी। वर्तमान में भोजन का विवेक रख लिया जाता है तो काफी रोगों से बच सकते हैं।

आहार विवेक

कब भोजन करना, कब भोजन छोड़ना, कैसे भोजन करना, कैसा भोजन करना, कितना भोजन करना, कहाँ भोजन करना, भोजन में सांयोगिक पदार्थ कैसे होना, विजातीय पदार्थों का त्याग कैसे करना और राग-द्वेष से मुक्त होकर रुचि-अरुचि से ऊपर उठकर भोजन करना। ये सारी बातें भोजन विवेक में आती हैं।

आहार करने और छोड़ने के कारण

तीर्थंकर प्रभु महावीर ने आहार करने के छह कारण बताए एवं आहार छोड़ने के छह कारण बताए–

आहार करने के छह कारण	आहार छोड़ने के छह कारण
1. वेदना–क्षुधा वेदना (भूख) की शांति के लिये।	1. आतंक–भयंकर रोग से ग्रस्त होने पर।
2. वैयावृत्य–सेवा करने के लिये।	2. उपसर्ग–आकस्मिक उपसर्ग आने पर।
3. ईर्यापथ–मार्ग में गमनागमन आदि सात्विक क्रिया (प्रवृत्ति) के लिये।	3. ब्रह्मचर्य गुप्ति–ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिये।
4. संयम–संयम की रक्षा के लिये।	4. प्राणीदया–जीवों की दया के लिये।
5. प्राणप्रत्ययार्थ–प्राणों की रक्षा के लिये।	5. तप–तपस्या करने के लिये।
6. धर्म चिंतन–शास्त्र-अध्ययन आदि धर्म प्रचार व धर्म चिंतन के लिये।	6. संलेखना–संथारा (अंतिम समय में) करने के लिये।

(–प्रभु महावीर वाणी, उत्तराध्ययन सूत्र 26)

इसके अतिरिक्त भी निम्न बातों का विवेक रखना चाहिए–

एक स्वस्थ व्यक्ति के लिये अनुमानित प्रतिदिन का भोजन

शरीर को पुष्ट और बलिष्ठ बनाये रखने के लिए सामान्यत: एक व्यक्ति को निम्नानुसार भोजन की मात्रा ग्रहण करनी चाहिए–

मिष्ठान्न	50 ग्राम
अनाज–गेहूँ, चावल, बाजरा	400 ग्राम
दालें–उड़द, मूँग, चना, अरहर आदि	100 ग्राम
चिकनाई–घी, तेल, मक्खन, पनीर	60 ग्राम
पेय–दूध, दही, मठा (छाछ) आदि	250 ग्राम
पानी	3,500 मि.ली.
फल–आम, सन्तरा, केला, सेब, पपीता, खरबूजा आदि	70 ग्राम
सब्जी–पत्ते वाली, बथुआ, मेथी, पालक, मूली, लौकी, भिंडी आदि	300 ग्राम
कुल भोजन	4,730 ग्राम

भोजन की उचित मात्रा

भोजन की उक्त तालिका वसा (चर्बी, फ़ैट), विटामिन, आयरन, केल्शियम आदि पौष्टिक तत्त्वों को दृष्टि में रखकर एक सामान्य व्यक्ति के लिए प्रस्तुत की गई है। तथापि जिस भोजन को करने के उपरान्त व्यक्ति में निम्न गुणों का बोध हो तो समझना चाहिए कि उसने भोजन आवश्यक और उचित मात्रा में ग्रहण किया है–

1. पेट में अधिक भारीपन न हो, 2. पसलियों में फटने की तरह व्यथा न हो, 3. हृदय में रुकावट व कुक्षि में कोई पीड़ा न हो, 4. इन्द्रियों में प्रसन्नता हो, 5. भूख और प्यास पूर्णत: शान्त हो जाये, 6. चलने-फिरने, उठने-बैठने, हँसने-बोलने, श्वास-प्रश्वास में सुख का बोध हो, 7. प्रात: व सायंकाल में भोजन के पच जाने की अनुभूति हो, 8. शक्ति, सामर्थ्य और बौद्धिक विकास उचित अनुपात में बढ़ता रहे तो समझना चाहिए कि जिस भोजन को जिस मात्रा में ले रहे हैं, वह पूर्णत: ठीक है।

भोजन कब करें?

कुछ स्थिति ऐसी भी होती है, जब भोजन करने से लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ती है, अत: इन निम्नलिखित परिस्थितियों में भोजन नहीं करना चाहिए–

1. अधिक प्यास बुझाने के लिए पर्याप्त पानी पीने के तुरन्त बाद।
2. जब व्यक्ति पसीने से लथपथ हो।
3. मल-मूत्र त्यागने की इच्छा होने की स्थिति में।
4. खड़े होकर भोजन कदापि नहीं करना चाहिए।
5. पैदल चलते-चलते भोजन करना हानिकारक है।
6. शारीरिक परिश्रम या कसरत के समय अथवा तुरन्त बाद।
7. शयन की वस्तु–चारपाई, बिस्तर आदि पर।
8. झूठे बर्तनों में भोजन करने से बुद्धि का नाश होता है।
9. लेटकर भोजन करने से आमाशय के विकार हो जाते हैं।
10. दुर्गन्धित व मैले-कुचेले स्थानों में भोजन करने से अनेक विषैले जीवाणु भोजन के साथ शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।
11. निद्रा के समय भोजन नहीं करना चाहिए।
12. औषध-सेवन नियमानुसार भोजन करना चाहिए।
13. शाकाहारी व्यक्तियों को माँसाहारियों के समीप बैठकर भोजन नहीं करना चाहिए क्योंकि उससे घृणा उत्पन्न होगी और उसका मन और बुद्धि पर विकृत प्रभाव पड़ेगा।

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चाँद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम
जैन कैलेण्डर

卐 चमत्कारी जय जाप 卐

पूज्य जयमल जी हुआ अवतारी, ज्यांरा नाम तणी महिमा भारी।
कष्ट टले मिटे ताव तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नामे सब कष्ट टले, वली भूत-प्रेत पिण नाय छले।
मिले न चोर हुवे गुप-चुपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
लक्ष्मी दिन-दिन बढ़ जावे, वली दुःख नेड़ो तो नहीं आवे।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
अड़ियो काम तो होय जावे, वली बिगड़यो काम भी बण जावे।
भूल-चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
राज-काज में तेज रहे, वली खमा-खमा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम तणो जो लियो ओटो, ज्यारे कदे नहीं आवे टोटो।
घर-घर बारणे काय तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
एक माला नित्त नेम रखो, किणी बात तणो नहीं होय धखो।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
स्वभक्त तणी प्रतिपाल करे, मुनिराम सदा तुम ध्यान धरे।
कोई परतिख बात मती उथपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम प्रताप इसो जबरो, दुःख कष्ट-रोग जावे सगरो।
केई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।

2024

सितम्बर
SEPTEMBER

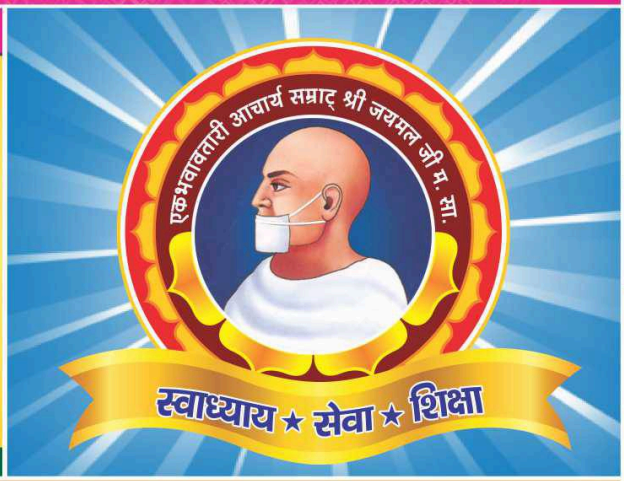

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY,
CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

एकभवावतारी आचार्य जय जीवन प्रकाश

● एक प्रवचन श्रवण मात्र से वैराग्य उत्पन्न होना। 3 घण्टे (1 प्रहर) में खड़े-खड़े प्रतिक्रमण कंठस्थ करना। ● 16 वर्ष एकान्तर ● 16 वर्ष बेले-बेले तप, 20 मासक्षमण तप, 10 द्वि-मासक्षमण तप, 40 अट्ठाई तप, 90 दिन अभिग्रहयुक्त तपस्या, एक बार चौमासी तप, एक बार छह मासी तप, 2 वर्ष तक तेले-तेले पारणा, 3 वर्ष 5 के पारणे 5 की तपस्या आदि अनेक तपस्या करना। ● 50 वर्ष तक आडा आसन नहीं करना वि. सं. 1804 से वि. सं. 1853 तक। ● 8 दिन तक निराहार रहते हुए बीकानेर में 500 यतियों को चर्चा में परास्त कर सदा के लिए जैन सन्तों हेतु सर्वप्रथम क्षेत्र खोला। ● पीपाड़, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, सांचौर, खींचन, फलोदी, सिरोही, जालोर आदि अनेकानेक क्षेत्रों में यतियों को चर्चा में परास्त कर क्षेत्र खोले। ● जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, नागौर, जैसलमेर आदि के राजा-महाराजाओं एवं दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह तथा उनके शहजादे को प्रतिबोध देकर सुमार्गी बनाया। ● 700 भव्यात्माओं को दीक्षा दी। 51 शिष्य, 200 प्रशिष्य, 449 साध्वी समुदाय। ● संथारे के सोलहवें दिन मध्य रात्रि में उदय (मुनि) केशव (मुनि) ने देव-पर्याय में से आकर वन्दन किया, पूर्ण प्रकाश को देखकर आचार्य श्री रायचन्द जी म. सा. आदि संतों के पूछने पर सीमन्धर स्वामी से समाधान पाया कि पूज्यश्री एकभवावतारी हैं। प्रथम कल्प देवलोक से च्यवकर महाविदेह क्षेत्र में जाकर मोक्ष में जायेंगे। ● वि. सं. 1807 में बड़ी साधु वन्दना की रचना की। इसके अतिरिक्त 250 से अधिक काव्य कृतियों का निर्माण किया।

विक्रम संवत्ः 2081 | वीर निर्वाण संवत्ः 2550 | जय संवत्ः 229 | जैन पंचमारक संवत्ः 2547

वार					
रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	आश्लेषा २१/४९ सिंह २१/४१ **1** पर्युषण प्रारम्भ भाद्रपद वद १४-२९/२५	स्वाती १५/२५ तुला **8** संवत्सरी महापर्व भाद्रपद सुद ५-१९/५४	श्रवण १८/४६ कुम्भ २१/४९ **15** भाद्रपद सुद १२-१८/१०	कृतिका २३/०२ वृषभ **22** आश्विन वद ५-१५/४५	मघा ३०/२२ सिंह **29** आश्विन वद १२-१६/५३
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	मघा २४/२१ सिंह **2** पाक्षिक पर्व अमावस्या भाद्रपद वद ३०	विशाखा १८/०० वृश्चिक ११/२४ **9** भाद्रपद सुद ६-२१/५१	धनिष्ठा १६/३० कुम्भ **16** भाद्रपद सुद १३-१५/०८	रोहिणी २२/०५ वृषभ **23** आश्विन वद ६-१३/५०	पूर्वा फाल्गुनी सिंह **30** आश्विन वद १३-१९/१२
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	पूर्वा फाल्गुनी २७/०९ सिंह **3** अमावस्या भाद्रपद वद ३०-७/२७	अनुराधा २०/०२ वृश्चिक **10** भाद्रपद सुद ७-२३/१२	शतभिषा १३/५१ मीन २१/४३ **17** पाक्षिक पर्व भाद्रपद सुद १४-११/४३	मृगसिरा २१/५० मिथुन ९/५२ **24** आश्विन वद ७-१२/३७	**पुष्य नक्षत्र** 27 सितंबर, शुक्रवार, सूर्योदय से मध्यरात्रि 1.19 बजे तक
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	उत्तरा फाल्गुनी ३०/१० कन्या ९/५३ **4** चन्द्र दर्शन भाद्रपद सुद १-९/४७	ज्येष्ठा २१/२१ धनु २१/२१ **11** भाद्रपद सुद ८-२३/४७	पूर्वा भाद्रपद १०/५९ मीन **18** पूर्णिमा भाद्रपद सुद १५/१-८/०४,२८/२१	आर्द्रा २२/१९ मिथुन **25** आश्विन वद ८-१२/०८	**पंचक** 16 सितंबर, सोमवार, प्रातः 5.41 बजे से 20 सितंबर, शुक्रवार, प्रातः 5.16 बजे तक
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	हस्त कन्या **5** भाद्रपद सुद २-१२/१८	मूल २१/५२ धनु **12** भाद्रपद सुद ९-२३/३४	उत्तरा भाद्रपद ८/०४ मेष २१/१६ **19** रेवती २९/१६ आश्विन वद २-२४/४३	पुनर्वसु २३/३१ कर्क १७/०९ **26** आश्विन वद ९-१२/२४	**शुभ दिन** 7, 19, 20, 21, 23, 26, 27 **अशुभ दिन** 2, 3, 5, 11, 18, 22, 25
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	हस्त ९/१८ तुला २२/५३ **6** भाद्रपद सुद ३-१४/५५	पूर्वाषाढ़ा २१/३४ मकर २७/२२ **13** भाद्रपद सुद १०-२२/३०	अश्विनी २६/४४ मेष **20** आश्विन वद ३-२१/१९	पुष्य २५/१९ कर्क **27** आश्विन वद १०-१३/२०	**अमृत सिद्धि योग** 23 सितंबर, सोमवार, मृगसिरा नक्षत्र, रात्रि 10.05 बजे से आगामी सूर्योदय तक
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	चित्रा १२/२७ तुला **7** भाद्रपद सुद ४-१७/३१	उत्तराषाढ़ा २०/३० मकर **14** भाद्रपद सुद ११-२०/४०	भरणी २४/३७ वृषभ ३०/१० **21** आश्विन वद ४-१८/१७	आश्लेषा २७/३९ सिंह २७/३९ **28** आश्विन वद ११-१४/५२	卐

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

सितम्बर	1	6	11	16	21	26	30
सूर्योदय	5.58	5.58	5.58	5.58	5.58	5.58	5.59
सूर्यास्त	6.20	6.16	6.13	6.09	6.06	6.02	5.59
नवकारसी	6.46	6.46	6.46	6.46	6.46	6.46	6.47
पोरसी	9.03	9.02	9.01	9.00	9.00	8.59	8.59

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

1. पर्युषण प्रारम्भ, 4. आचार्य सम्राट् श्री शुभचन्द्र जी म. सा. का 6वाँ स्मृति दिवस, 8. संवत्सरी महापर्व, 12. सुविधि जिन मोक्ष, 16. एकभवावतारी आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमल जी म. सा. का 317वाँ जन्म दिवस (तेले तप का आयोजन)।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

5. वराह जयन्ती, बाबा रामदेव दूज, 7. गणेश चतुर्थी, 8. ऋषि पंचमी, 11. दधीची जयंती, 13. रामदेवजी का मेला, 14. जलझूलनी एकादशी व्रत, 15. प्रदोष, वामन जयंती, 16. पंचक प्रारम्भ, कन्या संक्रान्ति, 17. अनंत चतुर्दशी, 18. आंशिक खण्डग्रास चंद्रग्रहण, 20. पंचक समाप्ति, 28. इंदिरा एकादशी व्रत, शहीद भगत सिंह जयन्ती, 30. प्रदोष।

अवकाश

7. गणेश चतुर्थी, 14. द्वितीय शनिवार, 16. मिलादुन्नबी, 28. चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

1. पर्युषण प्रारम्भ, 2. पाक्षिक पर्व, 8. संवत्सरी महापर्व
17. पाक्षिक पर्व।

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रातः											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रातः											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30			
प्रातः											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

पानी कब न पीएं?

1. व्यायाम (कसरत) करने के तुरन्त बाद या धूप में से आने के बाद पानी पीना वर्जित है।
2. जब पेट बिल्कुल खाली हो (प्रात:काल को छोड़कर)।
3. भोजन के आदि और अन्त में।
4. पके फल या खीरा, ककड़ी तथा मेवा खाने के उपरान्त।
5. सो कर जगने के तुरन्त बाद पानी पीने से जुकाम का भय रहता है।
6. चिकने और खट्टे पदार्थ खाने के उपरान्त।
7. चाय, दूध पीने या छींके लेने के उपरान्त, मल-त्याग व स्त्री-संसर्ग के तत्काल बाद पानी नहीं पीना चाहिए।
8. निद्रा आने के समय जल ग्रहण न करें।
9. बिना प्यास अधिक पानी न पीएं।
10. किसी दूसरे के झूठे बर्तनों में पानी पीना हानिकारक है।

पानी कब पीएं?

1. भोजन से तत्काल पूर्व पानी पिया जायेगा तो पाचन-शक्ति क्षीण हो जायेगी।
2. भोजन करने के एक घण्टे उपरान्त जल पीना चाहिए, इससे आमाशय शक्तिवान होगा। भोजन के तुरन्त बाद पानी पीने से पाचन-शक्ति क्षीण होने लगती है और शरीर स्थूल हो जाता है।
3. भोजन के मध्य में थोड़ा सा पानी पी लेने से भोजन जल्दी पच जाता है।
4. यदि भोजन के तत्काल बाद पानी पीना ही पड़े तो आधा गिलास गुनगुना पानी लेना चाहिए।

विरुद्ध आहार : एक साथ क्या न खायें?

जो पदार्थ शारीरिक धातुओं को दूषित करे, उसे विरुद्ध आहार कहा जाता है। शास्त्रों में इसके कई भेद-प्रभेद कहे गये हैं। संक्षिप्तत: इन्हें निम्न प्रकार समझना चाहिए–

1. नींबू, मूली, तोरई, बेल, नमक, दही, सत्तू आदि के साथ दूध नहीं पीना चाहिए।
2. केला, करेला, आम तथा गरम पदार्थों के साथ दही नहीं खाएं।
3. गरम जल, वर्षा का जल, गरम पदार्थ, मूली के साथ शहद (मधु) का सेवन अहितकर है।
4. खीर व खिचड़ी, छाछ तथा केला।
5. घी और मधु, जल और मधु, घी व पानी, मधु और किसी प्रकार के चिकने पदार्थ अथवा किसी भी प्रकार के दो चिकने पदार्थ बराबर-बराबर (सम मात्रा में) मिलाकर सेवन नहीं करने चाहिए।
6. दूध के साथ नींबू, कांजी, सिरका आदि खट्टे पदार्थ।
7. शर्बत, ठण्डाई या जल के उपरान्त चाय।
8. चाय पीने के उपरान्त ककड़ी, खरबूजा, ठण्डा जल या अन्य शीत-प्रधान पदार्थ।
9. खरबूजा, मूली के साथ मधु।
10. दही और खरबूजा।
11. दूध में गुड़ मिलाकर कदापि सेवन न करें।
12. खीरा, ककड़ी, तरबूज आदि जायद की ऋतु के फलों को खाने के डेढ़-दो घंटे पहले या पीछे तक दूध, पानी, शिकंजी, लस्सी, कोल्ड ड्रिंक्स आदि पेय नहीं लेने चाहिए।

और क्या जानें?

व्यक्ति को अपनी शारीरिक स्थिति, आयु, देश-काल आदि का ध्यान रखते हुए पूर्ण भूख का दो तिहाई भोजन करना चाहिए तथा जब तक पहले किया हुआ भोजन पूर्णत: न पच जाये, दुबारा भोजन कदापि नहीं करना चाहिए। आजकल देखा गया है कि प्राय: कुछ व्यक्ति कभी चाय, फल, चाट पकौड़ी, समोसे कुछ-न-कुछ पेट में डालते ही रहते हैं, जिसके कारण वे जठराग्नि व मन्दाग्नि, अपान-वायु दूषण, गैस-दूषण, थकान, सुस्ती आदि का शिकार हो जाते हैं और स्वास्थ्य से हाथ धो बैठते हैं। अत: जिह्वा और मन पर नियन्त्रण करके खान-पान में संयम से काम लेना चाहिए।

किस ऋतु में क्या खायें?

ऋतु के अनुसार आहार करने वाले व्यक्ति सर्वथा स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रहते हैं। उन्हें बीमार होने का भय नहीं रहता। अत: स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के अभिलाषी प्रत्येक व्यक्ति को ऋतु के अनुसार आहार-विहार पर ध्यान देकर अपनी दिनचर्या बना लेनी चाहिए। यहाँ पर किस ऋतु में कौन-सा पदार्थ हितकर और कौन-सा अपथ्य या त्याज्य है, इसका वर्णन किया गया है।

शिशिर (जनवरी से मार्च)

पथ्य—घी, सेंधा नमक, मूँग की दाल, दाल की खिचड़ी, अदरक, सामान्य गरम भोजन।

अपथ्य—कड़वे, तिक्त, चटपटे, ठण्डे तथा वादीकारक गरिष्ठ भोजन।

बसन्त (मार्च से मई)

पथ्य—जौ, चना, ज्वार, गेहूँ आदि अनाज। मूँग, अरहर, मसूर की दालें, मूली बथुआ, परवल, करेला, तोरई, अदरक आदि सब्जियाँ। केला पका, खीरा, संतरा, शहतूत आदि फल। हींग, मेथी, जीरा, हल्दी तथा आँवला आदि कफ नाशक पदार्थों का व्यवहार तथा कुएँ तथा झरने का ताजा जल पीना चाहिए।

अपथ्य—गन्ना, भैंस का दूध, उड़द, पानक, सिंघाड़े खिचड़ी तथा बहुत ठण्डे पदार्थों का सेवन हानिकारक है। खट्टे, मीठे, चिकने तथा भारी पदार्थों का सेवन हानिकारक है। खट्टे, मीठे, चिकने एवं भारी पदार्थों का सेवन एवं दही आदि अभिश्यन्दी पदार्थों का व्यवहार नहीं करना चाहिए। क्योंकि इनके सेवन से कफ की वृद्धि होती है।

ग्रीष्म (जून-जुलाई)

पथ्य—पुराने गेहूँ, जौ, सत्तू, भात, देशी खांड, खीर, ठण्डे पदार्थ, कच्चे आम का पना, आम, बथुआ, करेला, परवल, ककड़ी, कच्चा तरबूज, कुएँ का ताजा अथवा घड़े का ठण्डा जल।

अपथ्य—पका तरबूज, दही, चौलाई, उड़द, सरसों, राई, दही, खिचड़ी, दूध आदि अपथ्य हैं। कटु, तिक्त, नमकीन, चटपटे, गरम व रूखे पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।

वर्षा (अगस्त-सितम्बर)

पथ्य—पुराने शालि चावल, पुराना गेहूँ, खीर, खिचड़ी, मालपुआ, बथुआ, तोरई, खीरा, परवल, राई, सरसों, अलसी, तरबूज पका, उड़द आदि गरम पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

अपथ्य—शीतल व रूखे पदार्थ, नदी का जल, दही, चना, मटर, मसूर, अरहर, ज्वार, मूँग, मोंठ, करेला, पालक, सिंघाड़ा, खीरा, ककड़ी आदि।

बरसात में अग्नि व जल क्षीण हो जाने से त्रिदोष कुपित होता है, अत: त्रिदोष (कफ-वात-पित्त) नाशक विधि से दिनचर्या व्यतीत करनी चाहिए। इन दिनों में भोजन कम मात्रा में करने वाला व्यक्ति रोगों से बचा रहता है।

शरद (अक्टूबर-नवम्बर)

पथ्य—गरम दूध, गुड़, घी, मिश्री, चीनी, खीर, जलेबी, परवल, आँवला, अमचूर, धनिया, सिंघाड़ा, नींबू, तोरई, जामुन, अनार, नारियल, मुनक्का, गोभी, सेंधा नमक, नदी या सरोवर का मीठा-शीतल जल आदि पित्त-शान्तिकारक खाद्य पदार्थ लेने चाहिए।

अपथ्य—दही, तेल, कुँए का जल, करेला, काँजी, छाछ, खट्टे, चटपटे, गरम, खारी तथा रूखे पदार्थों का सेवन करने से पित्त की वृद्धि होती है, अत: इनका सेवन वर्जनीय है।

हेमन्त (दिसम्बर-जनवरी)

पथ्य—गिजा व बाजीकरण औषधियाँ, दूध व खोया से बने पदार्थ, पिट्ठी के पदार्थ, दूध, दही, जलेबी, गेहूँ, चावल, नया अन्न, छाछ, अनार, तिल, पीपल, सोंठ, मेथी, ईलायची, दाख, बथुआ, सेंधा नमक तथा स्वास्थ्यवर्द्धक अनेक योगों के सेवन का समय है।

अपथ्य—उड़द के बड़े, मोंठ, पुराना अन्न, भैंस का दूध आदि नहीं खाने चाहिए। कटु, कषैले, रूखे, शीतल व वातदोष-वर्द्धक खान-पान आदि अपथ्य है। भोजन आदि स्वल्प मात्रा में करने से भी क्षीणकायता, पीलिया, घुमेर आदि व्याधियाँ होने का भय रहता है। अत: पौष्टिक और विटामिन युक्त पर्याप्त भोजन लेना चाहिए।

कैलेण्डर में नक्षत्र, चन्द्रमा आदि देखने की विधि

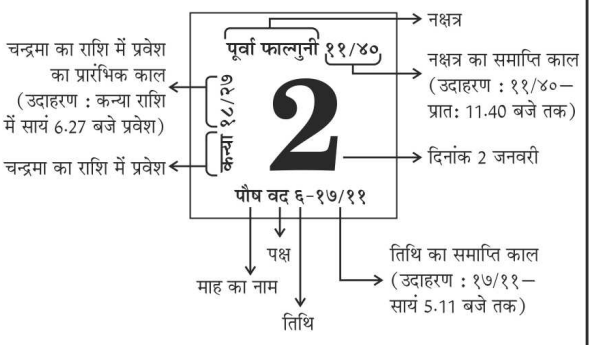

नोट—पंचांग के अनुसार वर्तमान दिन अर्धरात्रि को खत्म नहीं होता बल्कि अगले दिन सूर्योदय पर खत्म होता है। (उदाहरण—रोहिणी २७/४९ है यदि तो समझना रात्रि 3.49 बजे तक रोहिणी नक्षत्र है।) (उदाहरण—३०/१५ यानि प्रात: 6.15 बजे।)

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर

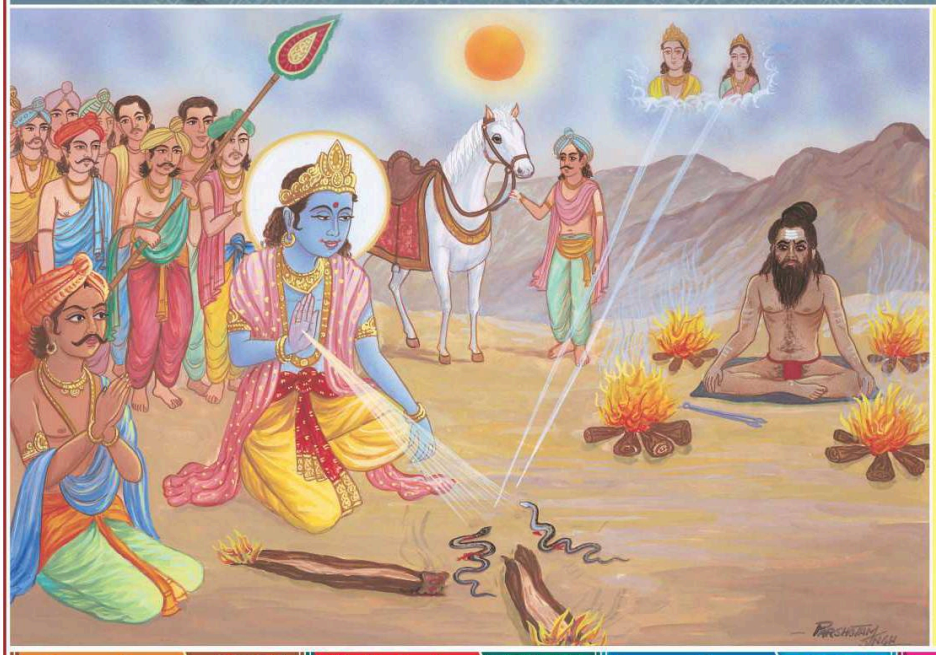

चित्र केवल परिचयार्थ :

भगवान पार्श्वनाथ ने गृहस्थावस्था में नाग-नागिन के जोड़े को अग्निकुण्ड से बाहर निकालकर उन्हें नवकार महामंत्र सुनाया, फलस्वरूप सर्प युगल धरणेन्द्र-पद्मावती बने।

2024

अक्टूबर OCTOBER

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY, CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत्: 2081 | वीर निर्वाण संवत्: 2550 | जय संवत्: 229 | जैन पंचमारक संवत्: 2547

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	पुष्य नक्षत्र 24 अक्टूबर, गुरुवार, सूर्योदय से अहोरात्रि तक	विशाखा २४/०७ **6** वृश्चिक १७/२९ आश्विन सुद ३-७/४६	धनिष्ठा २६/५० **13** कुम्भ १५/५३ आश्विन सुद १०-९/०९	कृतिका ८/३४ **20** वृषभ कार्तिक वद ३/४-६/५१,२८/२०	मघा १२/२६ **27** सिंह कार्तिक वद ११
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	पंचक 13 अक्टूबर, रविवार, मध्याह्न 3.43 बजे से 17 अक्टूबर, गुरुवार, अपराह्न 4.23 बजे तक	अनुराधा २६/२३ **7** वृश्चिक आश्विन सुद ४-९/४६	शतभिषा २४/४२ **14** कुम्भ आश्विन सुद ११/१२-६/४२,२७/४३	रोहिणी ६/५१ **21** मिथुन १८/१५ कार्तिक वद ५-२६/३१	पूर्वा फाल्गुनी १५/२७ **28** कन्या २२/१४ कार्तिक वद ११-७/५७
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	पूर्वा फाल्गुनी ९/१९ **1** कन्या १६/०४ आश्विन वद १४-२१/४३	ज्येष्ठा २८/०८ **8** धनु २८/०८ आश्विन सुद ५-११/१८	पूर्वा भाद्रपद २२/०९ **15** मीन १९/०९ आश्विन सुद १३-२४/२१	आर्द्रा २९/३६ **22** मिथुन कार्तिक वद ६-२५/२९	उत्तरा फाल्गुनी १८/३७ **29** कन्या कार्तिक वद १२-१०/३८
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	उत्तरा फाल्गुनी १२/२३ **2** कन्या अमावास्या पाक्षिक पर्व आश्विन वद ३०-२४/२०	मूल २९/१६ **9** धनु आश्विन सुद ६- १२/१७	उत्तरा भाद्रपद १९/२० **16** मीन आश्विन सुद १४-२०/४४	पुनर्वसु ३०/१३ **23** कर्क १३/५९ कार्तिक वद ७-२५/१८	हस्त २१/४४ **30** कन्या कार्तिक वद १३-१३/१९
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	हस्त १५/३० **3** तुला १९/०२ आश्विन सुद १-२६/५६	पूर्वाषाढ़ा २९/४२ **10** धनु आश्विन सुद ७-१२/३५	रेवती १६/२३ **17** मेष १६/२३ पूर्णिमा पाक्षिक पर्व आश्विन सुद १५-१७/०१	पुष्य **24** कर्क कार्तिक वद ८-२५/५९	चित्रा २४/४३ **31** तुला ११/१५ कार्तिक वद १४-१५/५४
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	चित्रा १८/३३ **4** तुला चतुर्दशी आश्विन सुद २-२९/२६	उत्तराषाढ़ा २९/२५ **11** मकर ११/४२ आश्विन सुद ८-१२/०९	अश्विनी १३/३० **18** मेष कार्तिक वद १-१३/२१	पुष्य ७/३८ **25** कर्क कार्तिक वद ९-२७/२५	**शुभ दिन** 5, 7, 12, 15, 17, 18, 21, 23, 24, 30 **अशुभ दिन** 2, 10, 14, 20, 22, 25, 26, 27
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	स्वाती २१/२८ **5** तुला आश्विन सुद ३	श्रवण २८/२७ **12** मकर आश्विन सुद ९-११/००	भरणी १०/५० **19** वृषभ १६/१४ कार्तिक वद २-९/५५	आश्लेषा ९/४६ **26** सिंह ९/४६ कार्तिक वद १०-२९/२८	**अमृत सिद्धि योग** 24 अक्टूबर, गुरुवार, पुष्य नक्षत्र, सूर्योदय से अहोरात्रि तक

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

अक्टूबर	1	6	11	16	21	26	31
सूर्योदय	5.59	5.59	5.59	6.00	6.01	6.02	6.03
सूर्यास्त	5.59	5.55	5.52	5.49	5.47	5.44	5.43
नवकारसी	6.47	6.47	6.47	6.48	6.49	6.50	6.51
पोरसी	8.59	8.58	8.57	8.57	8.57	8.57	8.58

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

2. अरिष्टनेमि जिन केवल, 9. ओली तप प्रारम्भ, 13. आचार्य श्री भूधरजी म. सा. का जन्म-स्मृति दिवस, 16. शरद पूर्णिमा, 17. ओली तप समाप्त, नेमि जिन च्यवन, 21. सम्भव जिन केवल, 23. स्वाती नक्षत्र प्रारम्भ (गाज-बीज होने पर अस्वाध्याय), 29. अरिष्टनेमि जिन च्यवन, पद्मप्रभ जिन जन्म, 30. पद्मप्रभ जिन दीक्षा।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

2. गांधी जयंती, सर्वपितृ श्राद्ध, वलयाकार सूर्य ग्रहण (भारत में नहीं), 3. नवरात्रारम्भ, घटस्थापना, अग्रसेन जयंती, 9. सरस्वती आह्वान, 10. सरस्वती पूजन, 11. महाष्टमी, शस्त्रादि पूजा, 12. सरस्वती विसर्जन, विजया दशमी, 13. पंचक प्रारम्भ, पापांकुशा एकादशी व्रत, 15. प्रदोष, 16. शरद पूर्णिमा, 17. पंचक समाप्ति, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, तुला संक्रान्ति, 20. करवा चौथ, 28. रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी, 29. धनतेरस, धनवंतरी जयंती, प्रदोष, 30. काली चौदस, 31. दीपदान, रूप चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी।

अवकाश

2. गांधी जयंती, 3. अग्रसेन जयंती (ऐं), 12. द्वितीय शनिवार, विजया दशमी, 26. चतुर्थ शनिवार, 29. धनतेरस, 31. दीपदान, रूप चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

2. पाक्षिक पर्व, 17. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रातः											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रातः											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30	31		
प्रातः											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

कुशल–हर्ष–भगवान–सूर्य–राज–नथमल्लजी। चौथ–बख्तर रावत चाँद, नव स्वामी नामी नमूँ।।

दीपावली पूजन की विधि

दुकान की स्वच्छता करके शारीरिक शुद्धि के साथ पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठें। सामने एक साफ या नया बाजोट (पाटा) रखें जिसके चारों पायों के मोली बाँधें तथा उसके ऊपर एक नया वस्त्र बिछाकर साफ या नयी थाली लेवें जिसमें दस दिक्पालों की स्थापना निम्न यंत्र को कुंकुम से लिखते हुए करें। तत्पश्चात् स्वच्छ जल से भरा कलश (लोटा) थाली में रखें। लोटे के मोली बाँध देवें तथा नयी कलम-दवात के मोली ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप भावनापूर्वक तीन-तीन बार लपेटकर बाँध देवें। थाली में सवा रुपया रोकड़ा, मोली से सात बार लपेटा हुआ श्रीफल (नारियल), अखण्ड सात सुपारी, अक्षत (चावल), मिष्ठान आदि रखें। तीन नवकार मंत्र बोलकर बहियाँ, तिजोरी आदि पर कुंकुम-केसर के छींटे डालें, फिर २१ बार नवकार मंत्र एवं सात बार लोगस्स बोलकर बहीखातों में पूजन के पन्नों पर निम्न प्रकार शिखराकर नव श्री, साकिया आदि लिखें।

ॐ ह्रीँ

ईशान ८	इन्द्र १	अग्नि २
कुबेर ७	ब्रह्म नाग ९ १०	यम ३
वायव्य ६	वरुण ५	नैऋत्य ४

श्रीँ क्लीँ

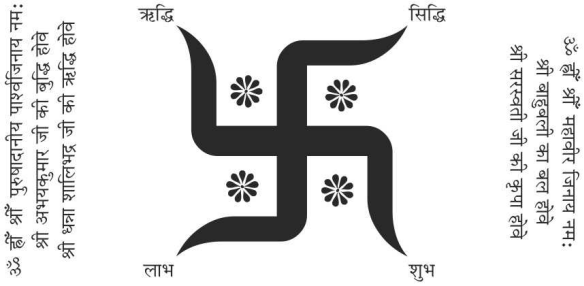

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

ॐ ह्रीँ श्रीँ नमः
ॐ ह्रीँ श्रीँ ऋषभजिनाय नमः
श्री भरत जी चक्रवर्ती की पदवी होवे श्री कयवन्ना जी रो सुख सौभाग्य होवे

ॐ ह्रीँ श्रीँ पुरुषादानीय पार्श्वजिनाय नमः
श्री अभयकुमार जी की बुद्धि होवे
श्री धन्ना शालिभद्र जी की ऋद्धि होवे

ॐ ह्रीँ श्रीँ महावीर जिनाय नमः
श्री बाहुबली का बल होवे
श्री सरस्वती जी की कृपा होवे

ॐ ह्रीँ श्रीँ अनन्त लब्धि निधान गौतम स्वामी जी महाराज की लब्धि होवे।
पूज्य श्री जयमल जी महाराज रो तेज प्रताप होवे, जिनशासन री जय-जयकार होवे।
श्री महालक्ष्मी जी रो अखण्ड धन वर्षा रे साथे भण्डार सदा भरपूर छे।

वीर संवत् ..... विक्रम संवत् ..... शालिवाहन शाके ..... कार्तिक वदी ..... वार ..... सायं ..... बजकर ..... मिनट पर ..... लग्न में ..... के चौघड़िया में श्री शारदा माता श्री महालक्ष्मी माता का जैन पद्धति के अनुसार सहर्ष सपरिवार पूजन किया दिनांक/तारीख ....

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्रीँ	श्रीँ	क्लीँ

इतना होने के बाद एक नवकार मंत्र की माला तथा '**ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हम् गौतमाय नमः**' की माला फेरें। फिर चत्तारि मंगलं का पाठ बोलना तथा अपने से बड़ों को प्रणाम करना। इति समाप्तम्।

सामर्थ्य के अनुसार दीपावली के दिन तेले का तप या उपवास करके शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य-पालन करते हुए अर्द्ध-रात्रि तक नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स की माला फेरें और अर्द्ध-रात्रि के पश्चात् सूर्योदय तक '**ॐ नमो भगवओ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण-महाणस्स**' का जप करें अथवा गौतम रास का पाठ करें।

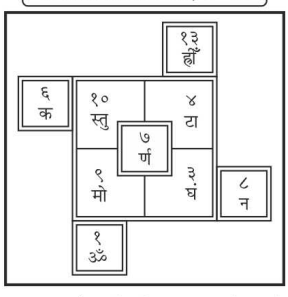

मध्य-रात्रि या सूर्योदय के समय केसर या अष्टगन्ध से उक्त यंत्र लिखकर तिजोरी में या अपने पास में रखें। लक्ष्मी की प्राप्ति होवे, सब प्रकार से आनन्द मंगल रहे। फिर अर्द्ध-रात्रि में केसर से सफेद कागज पर निम्न यंत्र बनाकर तिजोरी में रखें, तस्वीर बनाकर लगा देवें, धन प्राप्त होवे।

सर्वसिद्धिदाता लक्ष्मी यंत्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर से शुद्धतापूर्वक लिखें, लिखते समय शुभ मुहूर्त्त हो, यंत्र को तस्वीर में भद्रवाकर रखें, घण्टाकर्ण मूल के चार श्लोकों का नित्य पाठ करें, तो अवश्य लक्ष्मी का लाभ होता है। घर में लक्ष्मी स्थिर होती है।

व्यापार-वृद्धि यंत्र

ॐ	ह्रीँ	श्रीँ	क्लीँ
९९	१०६	२	७
६	३	१०३	१०२
१०५	१००	८	१
४	५	१०१	१०४

इस यंत्र को दुकान की दीवाल के ऊपर घी, सिन्दूर से लिखें तो व्यापार में बहुत लाभ होता है।

J.J.P.P. FOUNDATION, CHENNAI®

फाउंडर ट्रस्टी

- ✦ श्री भंवरलाल जी लोढ़ा, चेन्नई
- ✦ श्री रिखबचन्द जी बोहरा, चेन्नई
- ✦ श्री नरेन्द्रकुमार जी मरलेचा, चेन्नई
- ✦ श्री शांतिलाल जी चौपड़ा, चेन्नई
- ✦ श्री निर्मल जी कांकरिया, जोधपुर
- ✦ श्री शांतिलाल जी बोहरा, चेन्नई
- ✦ श्री ए. एन. प्रकाशचंद जी बोहरा, चेन्नई
- ✦ श्री ज्ञानचंद जी मुणोत, चेन्नई
- ✦ श्री अमरचंद जी बोकड़िया, चेन्नई

।। श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त्त।।

सूर्योदय 6.47 IST, सूर्यास्त 5.54 IST (जोधपुर समयानुसार)

1. **बहीखाता निर्माण व लाने का मुहूर्त्त :**

- **दिनांक 24 अक्टूबर, 2024, गुरुवार, कार्तिक कृष्णा अष्टमी, पुष्य नक्षत्र, सूर्योदय से अहोरात्र।**
- **चौघड़िया मुहूर्त्त—अभिजित** पूर्वाह्न 11.58 बजे से 12.43 बजे तक, **लाभ व अमृत** मध्याह्न 12.21 बजे से 3.10 बजे तक, **शुभ** मध्याह्न 4.36 बजे से 6.00 बजे तक।

2. **श्री धन कुबेर—शमी पूजन मुहूर्त्त : यमदीप दान, कलम दवात धोने का मुहूर्त्त :**

दिनांक 29 अक्टूबर, 2024, मंगलवार, कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (प्रात: 10.38 बजे के पश्चात्)।

- **चौघड़िया मुहूर्त्त—लाभ अमृत** प्रात: 10.56 बजे से मध्याह्न 1.44 बजे तक, **शुभ** मध्याह्न 3.08 बजे से 4.32 बजे तक, **लाभ** रात्रि 7.32 बजे से 9.08 बजे तक। **शुभ अमृत** रात्रि 10.44 बजे से अर्धरात्रि उपरान्त 1.57 बजे तक, **अभिजित** पूर्वाह्न 11.58 बजे से 12.43 बजे तक।
- **होरा मुहूर्त्त**—प्रात: 9.32 बजे से 11.24 बजे तक, मध्याह्न 12.20 बजे से 1.16 बजे तक, सायं 4.04 बजे से 5.56 बजे तक, सायं 6.59 बजे से रात्रि 8.03 बजे तक, रात्रि 11.16 बजे से अर्धरात्रि उपरान्त 1.25 बजे तक, अर्धरात्रि उपरान्त 2.29 बजे से 3.33 बजे तक।

3. **गादी बिछाने का मुहूर्त्त :**

- **दिनांक 31 अक्टूबर, 2024, गुरुवार, कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी।**
- **चौघड़िया मुहूर्त्त—शुभ** प्रात: 6.46 बजे से 8.09 बजे तक, **लाभ अमृत** मध्याह्न 12.20 बजे से 3.07 बजे तक, **शुभ** सायं 4.31 बजे से 5.54 बजे तक, **अभिजित** पूर्वाह्न 11.58 बजे से 12.43 बजे तक।
- **होरा मुहूर्त्त**—प्रात: 6.46 बजे से 7.41 बजे तक, प्रात: 10.29 बजे से मध्याह्न 12.20 बजे तक, मध्याह्न 1.16 बजे से 2.12 बजे तक।

4-A श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त्त :

- **दिनांक 31 अक्टूबर, 2024, गुरुवार, कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी/अमावस्या।**
- **चौघड़िया मुहूर्त्त—शुभ** प्रात: 6.46 बजे से 8.09 बजे तक, **लाभ अमृत** मध्याह्न 12.20 बजे से 3.07 बजे तक, **शुभ** सायं 4.31 बजे से 5.54 बजे तक, **अमृत** सायं 5.54 बजे से 7.31 बजे तक, **लाभ** मध्यरात्रि 12.20 बजे से 1.57 बजे तक, **शुभ अमृत** अर्धरात्रि उपरान्त 3.33 बजे से प्रात: 6.46 बजे तक।
- **होरा मुहूर्त्त**—प्रात: 6.48 बजे से 7.43 बजे तक, प्रात: 10.30 बजे से मध्याह्न 12.21 बजे तक, मध्याह्न 1.17 बजे से 2.13 बजे तक, सायं 4.59 बजे से 6.59 बजे तक, रात्रि 8.04 बजे से 9.08 बजे तक, मध्यरात्रि 12.22 बजे से 2.30 बजे तक, अर्धरात्रि उपरान्त 3.35 बजे से 4.39 बजे तक।

	लग्नानुसार लक्ष्मी पूजन मुहूर्त्त :	वर्गोत्तम नवमांश काल :
तुला	प्रात: 5.46 बजे से 8.03 बजे तक	प्रात: 5.46 बजे से 5.51 बजे तक
वृश्चिक	प्रात: 8.03 बजे से 10.21 बजे तक	प्रात: 9.03 बजे से 9.18 बजे तक
धनु	प्रात: 10.21 बजे से मध्याह्न 12.26 बजे तक	मध्याह्न 12.12 बजे से 12.26 बजे तक
मकर	मध्याह्न 12.26 से 2.10 बजे तक	मध्याह्न 12.26 बजे से 12.38 बजे तक
कुम्भ	मध्याह्न 2.10 बजे से 3.40 बजे तक	अपराह्न 2.50 बजे से 3.00 बजे तक
मीन	अपराह्न 3.40 बजे से 5.08 बजे तक	सायं 4.58 बजे से 5.08 बजे तक
मेष	सायं 5.08 बजे से 6.46 बजे तक	सायं 5.08 बजे से 5.19 बजे तक
वृषभ	सायं 6.46 बजे से रात्रि 8.43 बजे तक	सायं 7.38 बजे से 7.41 बजे तक
मिथुन	रात्रि 8.43 बजे से 10.57 बजे तक	रात्रि 10.24 बजे से 10.37 बजे तक
कर्क	रात्रि 10.57 बजे से 1.16 बजे तक	रात्रि 10.57 बजे से 11.10 बजे तक
सिंह	अर्धरात्रि उपरान्त 1.16 बजे से 3.31 बजे तक	अर्धरात्रि उपरान्त 2.16 बजे से 2.31 बजे तक
कन्या	अर्धरात्रि उपरांत 3.31 बजे से आगामी प्रात: 5.46 बजे तक	आगामी प्रात: 5.31 बजे से 5.46 बजे तक

4-B श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त्त : दिनांक 1 नवम्बर, 2024, शुक्रवार, कार्तिक कृष्णा अमावस्या।

- **चौघड़िया मुहूर्त्त—लाभ अमृत** प्रात: 8.11 बजे से 10.58 बजे तक, **शुभ** मध्याह्न 12.21 बजे से 1.45 बजे तक।
- **होरा मुहूर्त्त**—प्रात: 7.44 बजे से 9.35 बजे तक, प्रात: 10.30 बजे से 11.26 बजे तक, मध्याह्न 2.12 बजे से 4.03 बजे तक, सायं 4.59 बजे से 5.54 बजे तक।

5. **उत्थापन मुहूर्त्त :** दिन के शुभ चौघडिया मुहूर्त्त देखकर विधि-विधान कर लेवें।

विशेष—उपरोक्त समय जोधपुर (राज.) स्थान स्टैण्डर्ड समय से दिये हैं। इष्ट स्थान के लिए समय संशोधन करें।

जय–गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय–जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम
जैन कैलेण्डर

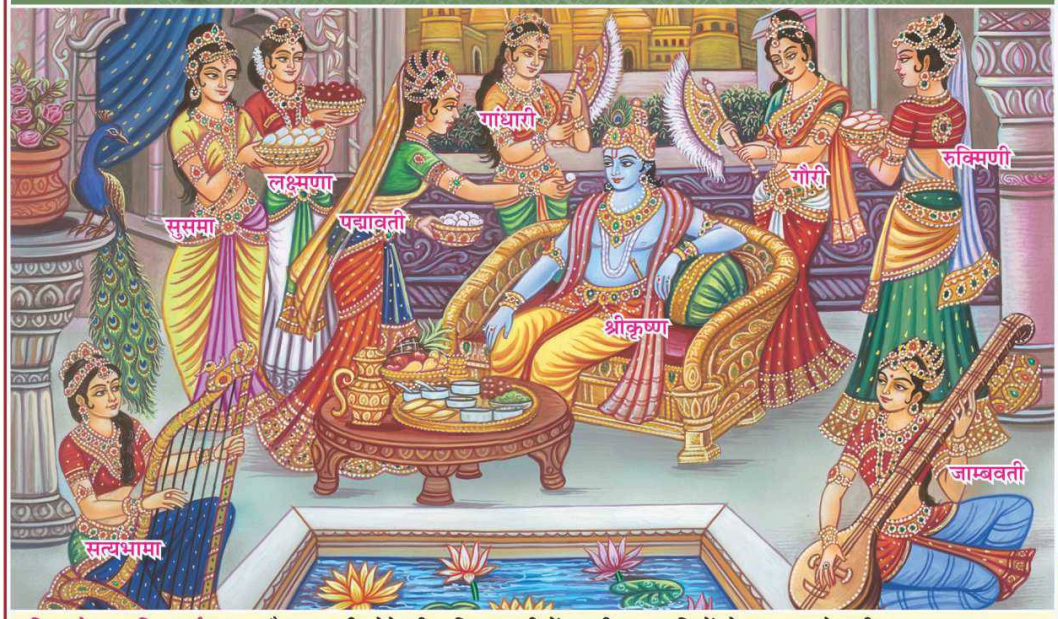

2024

नवम्बर
NOVEMBER

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY,
CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

चित्र केवल परिचयार्थ : भव्य वैभव वाली सोने की द्वारिका नगरी में अपनी आठ रानियों के साथ वासुदेव श्रीकृष्ण।

विक्रम संवत्: 2081	वीर निर्वाण संवत्: 2550-51	जय संवत्: 229	जैन पंचमारक संवत्: 2547

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 20 नवंबर, बुधवार, मध्याह्न 2.49 बजे से 21 नवंबर, गुरुवार, मध्याह्न 3.34 बजे तक	अनुराधा वृश्चिक **3** चन्द्र दर्शन कार्तिक सुद २-२२/०४	धनिष्ठा १०/५९ कुम्भ **10** कार्तिक सुद ९-२१/०३	रोहिणी १७/२५ मिथुन २८/३३ **17** मार्गशीर्ष वद २-२१/११	पूर्वा फाल्गुनी २२/१७ कन्या २१/०३ **24** मार्गशीर्ष वद ९-२२/२३
सोम MON प्रात: 7.30 से 9.00 बजे	**पंचक** 9 नवंबर, शनिवार, रात्रि 11.28 बजे से 13 नवंबर, बुधवार, अर्धरात्रि उपरान्त 3.13 बजे तक	अनुराधा ८/०२ वृश्चिक **4** कार्तिक सुद ३-२३/२५	शतभिषा ९/४० मीन २६/२२ **11** कार्तिक सुद १०-१८/४८	मृगसिरा १५/५० मिथुन **18** मार्गशीर्ष वद ३-१८/५९	उत्तरा फाल्गुनी २५/२५ कन्या **25** मार्गशीर्ष वद १०-२५/०६
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	**शुभ दिन** 4, 8, 9, 12, 13, 16, 18, 20, 21, 27, 30 **अशुभ दिन** 1, 14, 22, 26	ज्येष्ठा ९/४५ धनु ९/४५ **5** कार्तिक सुद ४-२४/२०	पूर्वा भाद्रपद ७/५२ मीन **12** उत्तरा भाद्रपद २९/४१ कार्तिक सुद ११-१६/०७	आर्द्रा १४/५६ मिथुन **19** मार्गशीर्ष वद ४-१७/३०	हस्त २८/३६ कन्या **26** मार्गशीर्ष वद ११-२७/५२
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	**अमृत सिद्धि योग** 16 नवंबर, शनिवार, रोहिणी नक्षत्र, सायं 7.31 बजे से आगामी सूर्योदय तक; 18 नवंबर, सोमवार, मृगसिरा नक्षत्र, सूर्योदय से अपराह्न 3.50 बजे तक	मूल ११/०२ धनु **6** कार्तिक सुद ५-२४/४५	रेवती २७/१३ मेष २७/१३ **13** कार्तिक सुद १२-१३/०५	पुनर्वसु १४/४९ कर्क ८/४६ **20** मार्गशीर्ष वद ५-१६/५१	चित्रा तुला १८/०८ **27** मार्गशीर्ष वद १२-३०/२७
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	**अमृत सिद्धि योग** 21 नवंबर, गुरुवार, पुष्य नक्षत्र, सूर्योदय से अपराह्न 3.34 बजे तक	पूर्वाषाढ़ा ११/४९ मकर १७/५५ **7** कार्तिक सुद ६-२४/३८	अश्विनी २४/३६ मेष **14** कार्तिक सुद १३/१४-९/४८,३०/२५	पुष्य १५/३४ कर्क **21** मार्गशीर्ष वद ६-१७/०४	चित्रा ७/३६ तुला **28** मार्गशीर्ष वद १३
शुक्र FRI प्रात: 10.30 से 12.00 बजे	स्वाती २७/२८ तुला **1** अमावस्या पाक्षिक पर्व कार्तिक वद ३०-१८/१६	उत्तराषाढ़ा १२/०५ मकर **8** कार्तिक सुद ७-२३/५९	भरणी २१/५८ वृषभ २७/२० **15** पूर्णिमा चातुर्मासिक पर्व कार्तिक सुद १५-२७/०४	आश्लेषा १७/०८ सिंह १७/०८ **22** मार्गशीर्ष वद ७-१८/०९	स्वाती १०/१७ वृश्चिक ३०/०९ **29** मार्गशीर्ष वद १३-८/४२
शनि SAT प्रात: 9.00 से 10.30 बजे	विशाखा २९/५५ वृश्चिक २३/२० **2** कार्तिक सुद १-२०/२०	श्रवण ११/४८ कुम्भ २३/२८ **9** कार्तिक सुद ८-२२/४७	कृतिका १९/३१ वृषभ **16** मार्गशीर्ष वद १-२३/५६	मघा १९/२७ सिंह **23** मार्गशीर्ष वद ८-१९/५९	विशाखा १२/३३ वृश्चिक **30** पाक्षिक पर्व मार्गशीर्ष वद १४-१०/३०

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

नवम्बर	1	6	11	16	21	26	30
सूर्योदय	6.03	6.05	6.06	6.09	6.11	6.13	6.15
सूर्यास्त	5.42	5.41	5.40	5.39	5.39	5.39	5.40
नवकारसी	6.51	6.53	6.54	6.57	6.59	7.01	7.03
पोरसी	8.57	8.59	8.59	9.01	9.03	9.04	9.06

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

1. महावीर जिन मोक्ष, 2. वीर निर्वाण संवत् 2551 प्रारम्भ, 4. सुविधि जिन केवल, 6. ज्ञान पंचमी, 9. स्वामी चाँद गुरु स्मृति दिवस, 10. स्वामी हरक गुरु जन्म दिवस, 13. अरह जिन केवल, 15. वीर लोकाशाह जयंती, चातुर्मास समाप्त, 17. एकभवावतारी आचार्य श्री जयमलजी म. सा. की 293वीं दीक्षा जयंती, 20. सुविधि जिन जन्म, 21. सुविधि जिन दीक्षा, 25. महावीर जिन दीक्षा, 26. पद्मप्रभ जिन मोक्ष।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. महालक्ष्मी पूजा, दीपावली, कुबेर पूजा, भगवान महावीर निर्वाण दिवस, 2. गोवर्धन पूजा, नूतन वर्षारम्भ, 3. भाई दूज, 5. दूर्वा गणपति व्रत, 9. पंचक प्रारम्भ, गोपाष्टमी, 12. तुलसी विवाह, देवोत्थापन, प्रबोधिनी एकादशी व्रत, 13. पंचक समाप्ति, प्रदोष, 14. नेहरू जयंती (बाल-दिवस), 15. पुष्कर यात्रा, कार्तिक स्नान पूर्ति, गुरु नानक जयंती, 16. वृश्चिक संक्रान्ति, 18. सौभाग्य सुंदरी व्रत, 23. काल भैरवाष्टमी, 26. उत्पत्ति एकादशी व्रत, 28. प्रदोष।

अवकाश

1. महालक्ष्मी पूजा, दीपावली, भगवान महावीर निर्वाण दिवस, 2. गोवर्धन पूजा, 3. भाई दूज, 9. द्वितीय शनिवार, 14. नेहरू जयंती (बाल दिवस), 15. गुरु नानक जयंती, 23. चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

1. पाक्षिक पर्व, 15. चातुर्मासिक पर्व, 30. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रात:											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रात:											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30			
प्रात:											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

☆☆☆ प्रमुख नगरों का प्रत्याख्यान यंत्र ☆☆☆

BANGALORE

माह	ता.	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1	6.40	6.05	7.28	9.30
	16	6.44	6.11	7.32	9.40
फरवरी	1	6.44	6.21	7.32	9.40
	16	6.40	6.27	7.28	9.35
मार्च	1	6.34	6.28	7.22	9.35
	16	6.26	6.30	7.24	9.30
अप्रैल	1	6.16	6.31	7.04	9.20
	16	6.07	6.32	6.55	9.15
मई	1	5.59	6.34	6.47	9.10
	16	5.55	6.38	6.43	9.05
जून	1	5.54	6.42	6.42	9.05
	16	5.55	6.47	6.43	9.05
जुलाई	1	5.59	6.49	6.47	9.10
	16	6.00	6.49	6.48	9.10
अगस्त	1	6.01	6.46	6.49	9.10
	16	6.08	6.39	6.56	9.20
सितम्बर	1	6.09	6.29	6.57	9.20
	16	6.09	6.19	6.57	9.20
अक्टूबर	1	6.09	6.09	6.57	9.20
	16	6.10	5.59	6.58	9.20
नवम्बर	1	6.15	5.52	7.03	9.20
	16	6.19	5.49	7.07	9.20
दिसम्बर	1	6.27	5.51	7.15	9.20
	16	6.35	5.53	7.23	9.25

RAICHUR

माह	ता.	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1	6.58	6.00	7.46	9.45
	16	7.02	6.09	7.50	9.49
फरवरी	1	7.01	6.19	7.49	9.51
	16	6.55	6.26	7.45	9.48
मार्च	1	6.46	6.31	7.35	9.41
	16	6.36	6.34	7.24	9.46
अप्रैल	1	6.23	6.38	7.15	9.27
	16	6.12	6.41	7.00	9.20
मई	1	6.02	6.45	6.50	9.13
	16	5.56	6.49	6.44	9.09
जून	1	5.53	6.55	6.41	9.09
	16	5.53	7.00	6.41	9.10
जुलाई	1	5.57	7.03	6.45	9.14
	16	6.01	7.03	6.49	9.17
अगस्त	1	6.06	6.58	6.54	9.19
	16	6.10	6.51	6.58	9.21
सितम्बर	1	6.14	6.39	7.02	9.21
	16	6.16	6.28	7.04	9.19
अक्टूबर	1	6.18	6.14	7.06	9.17
	16	6.21	6.04	7.09	9.17
नवम्बर	1	6.27	5.54	7.15	9.19
	16	6.34	5.39	7.22	9.20
दिसम्बर	1	6.42	5.48	7.30	9.29
	16	6.50	5.52	7.38	9.36

DELHI

माह	ता.	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1	7.19	5.31	8.03	9.50
	16	7.18	5.43	8.04	9.53
फरवरी	1	7.11	5.59	7.59	9.53
	16	7.04	6.07	7.48	9.48
मार्च	1	6.49	6.18	7.36	9.41
	16	6.33	6.27	7.20	9.31
अप्रैल	1	6.15	6.34	7.01	9.19
	16	5.58	6.42	7.45	9.09
मई	1	5.44	6.52	6.31	9.00
	16	5.34	7.01	6.20	8.55
जून	1	5.28	7.11	6.14	8.52
	16	5.27	7.15	6.13	8.53
जुलाई	1	5.32	7.17	6.17	8.57
	16	5.38	7.16	6.23	9.01
अगस्त	1	5.47	7.04	6.32	9.06
	16	5.54	6.55	6.40	9.09
सितम्बर	1	6.03	6.39	6.48	6.11
	16	6.10	6.21	6.55	6.12
अक्टूबर	1	6.18	5.02	7.03	9.13
	16	6.27	5.46	7.11	9.15
नवम्बर	1	6.37	5.33	7.22	9.19
	16	6.48	5.23	7.23	9.25
दिसम्बर	1	7.01	5.20	7.45	9.33
	16	7.11	5.22	7.56	9.42

JODHPUR

माह	ता.	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1	7.26	5.57	8.14	10.04
	16	7.27	6.09	8.15	10.08
फरवरी	1	7.23	6.20	8.11	10.08
	16	7.10	6.31	8.00	10.02
मार्च	1	7.01	6.40	7.49	9.55
	16	6.47	6.48	7.35	9.46
अप्रैल	1	6.29	6.56	7.17	9.36
	16	6.14	7.03	7.02	9.26
मई	1	6.01	7.10	6.49	9.18
	16	5.51	7.18	6.39	9.13
जून	1	5.45	7.29	6.33	9.11
	16	5.46	7.33	6.35	9.14
जुलाई	1	5.50	7.35	6.38	9.16
	16	5.56	7.32	6.44	9.21
अगस्त	1	6.04	7.26	6.52	9.25
	16	6.10	7.13	6.59	9.28
सितम्बर	1	6.18	6.59	7.06	9.29
	16	6.24	6.43	7.12	9.29
अक्टूबर	1	6.31	6.25	7.19	9.29
	16	6.39	6.10	7.26	9.32
नवम्बर	1	6.48	5.53	7.36	9.35
	16	7.00	5.49	7.46	9.40
दिसम्बर	1	7.10	5.45	8.00	9.49
	16	7.19	5.48	8.08	9.57

HYDERABAD

माह	तारीख	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1	6.46	5.53	7.34	9.32
	16	6.50	6.02	7.38	9.38
फरवरी	1	6.49	6.11	7.37	9.42
	16	6.42	6.18	7.30	9.36
मार्च	1	6.35	6.23	7.23	9.32
	16	6.24	6.26	7.12	9.25
अप्रैल	1	6.11	6.29	6.59	9.16
	16	6.00	6.32	6.48	9.08
मई	1	5.50	6.36	6.38	9.01
	16	5.44	6.41	6.32	8.58
जून	1	5.41	6.47	6.29	8.57
	16	5.41	6.51	6.29	8.58
जुलाई	1	5.45	6.54	6.33	9.02
	16	5.49	6.55	6.37	9.05
अगस्त	1	5.55	6.50	6.44	9.08
	16	5.59	6.42	6.47	9.09
सितम्बर	1	6.02	6.30	6.50	9.09
	16	6.05	6.18	6.53	9.07
अक्टूबर	1	6.06	6.06	6.54	9.06
	16	6.09	5.55	6.57	9.05
नवम्बर	1	6.14	5.45	7.02	9.06
	16	6.21	5.40	7.09	9.10
दिसम्बर	1	6.30	5.39	7.18	9.17
	16	6.38	5.44	7.26	9.25

JALGAON (Maharashtra)

माह	तारीख	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1	7.06	5.56	7.54	9.49
	16	7.09	6.06	7.57	9.53
फरवरी	1	7.06	6.17	7.54	9.54
	16	6.59	6.25	7.47	9.51
मार्च	1	6.50	6.31	7.38	9.45
	16	6.38	6.36	7.26	9.38
अप्रैल	1	6.23	6.41	7.11	9.28
	16	6.10	6.45	6.58	9.19
मई	1	6.00	6.50	6.48	9.13
	16	5.52	6.56	6.40	9.08
जून	1	5.48	7.03	6.36	9.07
	16	5.49	7.08	6.37	9.08
जुलाई	1	5.52	7.11	6.40	9.12
	16	5.57	7.10	6.45	9.16
अगस्त	1	6.04	7.05	6.52	9.19
	16	6.09	6.56	6.57	9.21
सितम्बर	1	6.13	6.43	7.01	9.21
	16	6.17	6.29	7.05	9.20
अक्टूबर	1	6.20	6.15	7.08	9.19
	16	6.24	6.03	7.12	9.19
नवम्बर	1	6.31	5.52	7.19	9.21
	16	6.40	5.46	7.28	9.26
दिसम्बर	1	6.49	5.44	7.37	9.33
	16	6.59	5.48	7.47	9.41

BOMBAY

माह	तारीख	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1	7.16	6.08	8.04	9.58
	16	7.19	6.18	8.07	10.03
फरवरी	1	7.17	6.28	8.05	10.03
	16	7.10	6.35	7.58	10.00
मार्च	1	7.02	6.40	7.50	9.56
	16	6.50	6.45	7.38	9.48
अप्रैल	1	6.37	6.48	7.25	9.39
	16	6.25	6.52	7.13	9.31
मई	1	6.15	6.56	7.03	9.24
	16	6.08	7.02	6.56	9.20
जून	1	6.05	7.08	6.53	9.18
	16	6.05	7.13	6.53	9.21
जुलाई	1	6.08	7.16	6.56	9.24
	16	6.13	7.15	7.01	9.27
अगस्त	1	6.19	7.11	7.07	9.31
	16	6.23	7.02	7.11	9.32
सितम्बर	1	6.27	6.50	7.15	9.32
	16	6.30	6.38	7.18	9.30
अक्टूबर	1	6.33	6.24	7.21	9.29
	16	6.36	6.12	7.24	9.29
नवम्बर	1	6.42	6.02	7.30	9.31
	16	6.50	5.57	7.38	9.35
दिसम्बर	1	6.59	5.56	7.47	9.42
	16	7.08	6.00	7.56	9.50

नोट— निम्नलिखित गाँव वालों को हैदराबाद वाले कोष्ठक में निम्नलिखित मिनट अधिक मिलाकर पच्चक्खाण का पालन करना।

11 मिनट = अकोला
10 मिनट = शोलापुर
18 मिनट = नासिक
11 मिनट = बीजापुर
3 मिनट = नागपुर

नोट— पच्चक्खाण के समय के 5 मिनट पश्चात् पच्चक्खाण पारना चाहिए।

नवकारसी

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि।

पोरसी

उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

डेढ़ पोरसी

उग्गए सूरे साड्ढपोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

दो पोरसी

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

पच्चक्खाण पारने का पाठ

सम्मं काएण न फासियं, न पालियं, न तीरियं, न किट्टियं, न सोहियं, न आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

आयंबिल

उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि तिविहं-चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ-संसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

उपवास

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहं-चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

एकासन

उग्गए सूरे एगासणं, विआसणं पच्चक्खामि तिविहं-चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं, परिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

संवर (दया)

करेमि भंते। संवरं पंचासवदारं पच्चक्खामि जाव न पालेमि ताव पज्जुवासामि दुविहं-तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा-वयसा-कायसा (अथवा एगविहं-एगविहेणं न करेमि कायसा) तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

सागारी संथारा करने का हिन्दी पाठ

आहार, शरीर, उपधि पच्छखूं पाप अठार।
मरण पाऊं तो वोसिरे, जीऊं तो आगार॥

सूचना—जब अचानक कोई संकट आ जाये या बीमारी आदि की भयंकर स्थिति हो तो सागारी संथारा ऊपर छपे पाठ से किया जाता है। वैसे भी प्रतिदिन साधक को रात को सोने के समय से लेकर अगली प्रातः तक नहीं पालूँ, नहीं चिताऊँ तक सागारी संथारा ग्रहण कर लेना चाहिए, ताकि इस दौरान यदि प्राणान्त हो जाये तो साधक को संथारे का लाभ प्राप्त होगा-सागारी संथारा तीन बार नवकार मन्त्र पढ़कर पारना चाहिए।

ओली तप करने की विधि

क्र.	माला	नमोत्थुणं	वंदना	लोगस्स	माला	भोजन
1.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो अरिहंताणं	12	12	12	12	चावल
2.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो सिद्धाणं	8	8	8	8	गेहूँ
3.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो आयरियाणं	36	36	36	36	चना
4.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो उवज्झायाणं	25	25	25	25	मूँग
5.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो लोए सव्व साहूणं	27	27	27	27	उड़द
6.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो दंसणस्स	67	67	67	67	चावल
7.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो नाणस्स	51	51	51	51	चावल
8.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो चरित्तस्स	17	17	17	17	चावल
9.	ॐ ह्रीँ श्रीँ नमो तवस्स	12	12	12	12	चावल

ओली तप का समय

आसोज सुदी सातम से पूनम एवं चैत्र सुदी सातम से पूनम तक इस प्रकार एक वर्ष में दो बार इस तप की आराधना की जाती है। साढ़े चार वर्ष में कुल नव ओलियाँ एवं इक्यासी आयंबिल के साथ इस तप की पूर्णाहुति होती है। इससे शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शान्ति की अनुभूति होती है। कर्म क्षय होते हैं।

कुशल—हर्ष—भगवान—सूर्य—राज—नथमल्लजी। चौथ—बख्त रावत चाँद, नव स्वामी नामी नमूँ।।

जय—गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय—जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम **जैन कैलेण्डर**

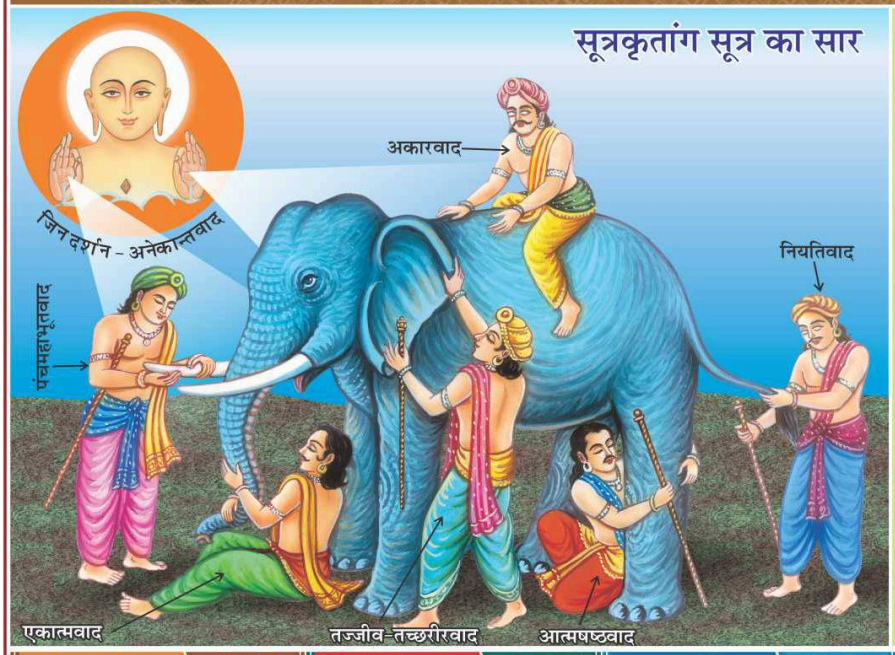

2024

दिसम्बर DECEMBER

सूत्रकृतांग सूत्र का सार

एकान्तवादी मतों के अनुयायी धर्म रूपी हस्ती की अलग-अलग व्याख्या करते हैं। जैन दर्शन का अनेकान्तवाद धर्म रूपी हस्ती की सम्पूर्ण व्याख्या करने में समर्थ है।

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

JAY PARSHVA PADMODAYA JAIN PRAKASHAN
3A, VEPERY CHURCH ROAD, VEPERY, CHENNAI-600 007
www.jppjaingroups.com

विक्रम संवत: 2081 | वीर निर्वाण संवत: 2551 | जय संवत: 229 | जैन पंचमारक संवत: 2547

वार					
रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	अनुराधा १४/२२ वृश्चिक **1** अमावस्या मार्गशीर्ष वद ३०-११/५१	शतभिषा १६/०३ कुंभ **8** मार्गशीर्ष सुद ७-९/४६	मृगसिरा २६/१९ मिथुन १५/०४ **15** पाक्षिक पर्व, पूर्णिमा मार्गशीर्ष सुद १५-१४/३३	उत्तरा फाल्गुनी कन्या १२/५३ **22** पौष वद ७-१४/३२	ज्येष्ठा २३/२१ धनु २३/२१ **29** पौष वद १४-२८/०३
सोम MON प्रात: 7.30 से 9.00 बजे	ज्येष्ठा १५/४५ धनु १५/४५ **2** चन्द्र दर्शन मार्गशीर्ष सुद १-१२/४५	पूर्वा भाद्रपद १४/५६ मीन ९/१५ **9** मार्गशीर्ष सुद ८/९-८/०५,३०/०४	आर्द्रा २५/१३ मिथुन **16** पौष वद १-१२/२९	उत्तरा फाल्गुनी ९/०७ कन्या **23** पौष वद ८-१७/०९	मूल २३/५६ धनु **30** पाक्षिक पर्व, अमावस्या पौष वद ३०-२७/५८
मंगल TUE अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे	मूल १६/४२ धनु **3** मार्गशीर्ष सुद २-१३/१२	उत्तरा भाद्रपद १३/३१ मीन **10** मार्गशीर्ष सुद १०-२७/४५	पुनर्वसु २४/४३ कर्क १८/४७ **17** पौष वद २-१०/५८	हस्त १२/१६ तुला २५/५० **24** पौष वद ९-१९/५४	पूर्वाषाढ़ा २४/०३ मकर ३०/०० **31** पौष सुद १-२७/२४
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे	पूर्वाषाढ़ा १७/१६ मकर २३/२१ **4** मार्गशीर्ष सुद ३-१३/१४	रेवती ११/४८ मेष ११/४८ **11** मार्गशीर्ष सुद ११-२५/१२	पुष्य २४/५७ कर्क **18** पौष वद ३-१०/०८	चित्रा १५/२१ तुला **25** पौष वद १०-२२/३२	**पुष्य नक्षत्र** 18 दिसंबर, बुधवार, सूर्योदय से मध्यरात्रि 12.57 बजे तक
गुरु THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे	उत्तराषाढ़ा १७/२८ मकर **5** मार्गशीर्ष सुद ४-१२/५३	अश्विनी ९/५३ मेष **12** मार्गशीर्ष सुद १२-२२/२९	आश्लेषा २५/५८ सिंह २५/५८ **19** पौष वद ४-१०/०४	स्वाती १८/०९ तुला **26** पौष वद ११- २४/४६	**पंचक** 7 दिसंबर, शनिवार, प्रात: 5.08 बजे से 11 दिसंबर, बुधवार, पूर्वाह्न 11.48 बजे तक
शुक्र FRI प्रात: 10.30 से 12.00 बजे	श्रवण १७/१९ कुम्भ २१/०८ **6** मार्गशीर्ष सुद ५-१२/११	भरणी ७/५१ वृषभ १३/२० **13** कृत्तिका २९/१२ मार्गशीर्ष सुद १३-१९/४३	मघा २७/४५ सिंह **20** पौष वद ५-१०/४९	विशाखा २०/२८ वृश्चिक १३/५६ **27** पौष वद १२-२६/२९	**शुभ दिन** 6, 10, 12, 14, 18, 22 **अशुभ दिन** 1, 4, 9, 23, 30, 31
शनि SAT प्रात: 9.00 से 10.30 बजे	धनिष्ठा १६/५१ कुम्भ **7** मार्गशीर्ष सुद ६-११/०९	रोहिणी २७/५४ वृषभ **14** मार्गशीर्ष सुद १४-१७/०१	पूर्वा फाल्गुनी ३०/११ सिंह **21** पौष वद ६-१२/२१	अनुराधा २२/१२ वृश्चिक **28** पौष वद १३-२७/३४	**अमृत सिद्धि योग** 14 दिसंबर, शनिवार, रोहिणी नक्षत्र, सूर्योदय से अर्धरात्रि उपरान्त 3.54 बजे तक

पच्चक्खाण यंत्र (चेन्नई समयानुसार)

दिसम्बर	1	6	11	16	21	26	31
सूर्योदय	6.16	6.19	6.21	6.24	6.27	6.29	6.31
सूर्यास्त	5.40	5.42	5.43	5.45	5.48	5.50	5.53
नवकारसी	7.04	7.07	7.09	7.12	7.15	7.17	7.19
पोरसी	9.07	9.09	9.11	9.14	9.17	9.19	9.21

जैन पर्व (तिथि के अनुसार)

10. अरह जिन जन्म, अरह जिन मोक्ष, 11. अरह जिन दीक्षा, मल्ली जिन जन्म, मल्ली जिन दीक्षा, मल्ली जिन केवल, नेमि जिन केवल, मौन ग्यारस, 14. सम्भव जिन जन्म, 15. सम्भव जिन दीक्षा, 25. पार्श्व जिन जन्म, 26. पार्श्व जिन दीक्षा, 27. चन्द्रप्रभ जिन जन्म, 28. चन्द्रप्रभ जिन दीक्षा, 29. शीतल जिन केवल।

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

6. पंचक प्रारम्भ, 11. पंचक समाप्ति, मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती, 13. प्रदोष, अनंग त्रयोदशी व्रत, 14. श्रीदत्त जयंती, 15. धनु संक्रान्ति, 21. सूर्य उत्तरायण प्रारम्भ, 25. बड़ा दिन (क्रिसमस डे), 26. सफला एकादशी व्रत, 28. प्रदोष, 30. सोमवती अमावस्या।

अवकाश

14. द्वितीय शनिवार, 25. बड़ा दिन (क्रिसमस डे), 28. चतुर्थ शनिवार।

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

15. पाक्षिक पर्व, 30. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
प्रात:											
सायं											
ता.	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
प्रात:											
सायं											
ता.	23	24	25	26	27	28	29	30	31		
प्रात:											
सायं											

नोट : तिथि-नक्षत्र का घण्टा-मिनट में समय दिया गया है, वह समाप्ति काल है।

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store and visit our website : www.jppjaingroups.com

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

पद्मोदय यात्रा विचार

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मि.	प्रहर 1	प्रहर 2	प्रहर 3	प्रहर 4	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	लाभ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	लाभ
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	भय	क्लेश	सुख	लाभ	शून्य	नाश	दु:ख	संकट
3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	लाभ	सुख	सुख	मरण	लाभ	दु:ख	लाभ	लाभ
4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	क्लेश	कल्याण	क्लेश	संकट	क्लेश	दु:ख	लाभ	सुख
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	संकट	क्लेश	भाग्य	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	संकट	क्लेश	लाभ	लाभ	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	विलंब	लाभ	सुख	लाभ	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	—	—	—	—	—	—	—	—
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	लाभ	भय	लाभ	सुख	सुख	लाभ	लाभ	कष्ट
10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	लाभ	लाभ	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	लाभ	लाभ
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	मरण	लाभ	लाभ	मरण	लाभ	कष्ट	—	लाभ
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	मरण	लाभ	सुख	लाभ	—	सुख	मरण	कष्ट

नोट

तीज-तेरस, चौथ-चतुर्दशी, पंचमी-पूर्णिमा इनका फल समान है। वदी चौदस व अमावस को यात्रा में निषिद्ध है।

नोट—इन मुहूर्त्त पर गमन करने वालों को दिशाशूल आदि का विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

चन्द्र विचार

दिशा	राशि	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
पूर्व	मेष, सिंह, धन	अर्थ लाभ	धन नाश	घात	सुख सम्पत्ति
दक्षिण	वृषभ, कन्या, मकर	सुख सम्पत्ति	अर्थ लाभ	धन नाश	घात
पश्चिम	मिथुन, तुला, कुंभ	घात	सुख सम्पत्ति	अर्थ लाभ	धन नाश
उत्तर	कर्क, मीन, वृश्चिक	धन नाश	घात	सुख सम्पत्ति	अर्थ लाभ

काल राहु विचार

दिशा	वार	शुभ दिशा	निषिद्ध दिशा
उत्तर	रवि	दक्षिण	उत्तर
वायव्य	सोम	अग्नि	वायव्य
पश्चिम	मंगल	पूर्व	पश्चिम
नैऋत्य	बुध	ईशान	नैऋत्य
दक्षिण	गुरु	उत्तर	दक्षिण
अग्नि	शुक्र	वायव्य	अग्नि
पूर्व	शनि	पश्चिम	पूर्व
ईशान	रवि	नैऋत्य	ईशान

नोट

यात्रा में यह काल राहु पीछे का उत्तम माना गया है। प्रस्तुत तालिका में इसी नियम के अनुसार प्रत्येक वार की यात्रा में शुभ व वर्जित दिशा दर्शाई गई है।

शुभाशुभ समय ज्ञान

	गुलिककाल (शुभ)		यमगंडकाल (अशुभ)		राहुकाल (अशुभ)	
वार	प्रारम्भ	समाप्त	प्रारम्भ	समाप्त	प्रारम्भ	समाप्त
रवि	3.00	4.30	12.00	1.30	4.30	6.00
सोम	1.30	3.00	10.30	12.00	7.30	9.00
मंगल	12.00	1.30	9.00	10.30	3.00	4.30
बुध	10.30	12.00	7.30	9.00	12.00	1.30
गुरु	9.00	10.30	6.00	7.30	1.30	3.00
शुक्र	7.30	9.00	3.00	4.30	10.30	12.00
शनि	6.00	7.30	1.30	3.00	9.00	10.30

दिन का चौघड़िया

सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग

रात का चौघड़िया

सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ

नोट

दिन में 8 तथा रात में 8 चौघड़िया होते हैं। औसतन एक चौघड़िया 1 घंटा 30 मिनट का होता है। शुद्ध मान निकालने के लिये दिनमान में 8 का भाग दें तथा प्राप्त समय को सूर्योदय में उत्तरोत्तर जोड़ने से दिन के चौघड़िया प्राप्त होते हैं। रात्रि के मान में 8 का भाग देकर प्राप्त को सूर्योदय में जोड़ने से उत्तरोत्तर रात्रि के चौघड़िया प्राप्त होते हैं। लाभ, अमृत और शुभ श्रेष्ठ; चंचल सम तथा उद्वेग, काल व रोग अशुभ होते हैं।

पद्मोदय जैन कैलेण्डर के मुख्य प्राप्ति-स्थान

1. पी. एम. बोहरा
जय परिसर,
3-ए, चर्च रोड,
वेपेरी, चैन्नई-600 007
मो. 98844 97000

2. श्रुताचार्य चौथ भवन
39, विनोद नगर,
ब्यावर-350 901 (राज.)
मो. 9887670271

3. श्री देवराज जी बोहरा
C/o, श्री श्रुताचार्य चौथ स्मृति भवन,
महिला बाग,
जोधपुर-342 001 (राज.)
मो. 9414127331

4. Manak Mewa Stores
19, Huriopet,
B.V.K. Iyengar Road Cross,
Bangalore-560 053
Ph. : 22252232

5. विष्णु बुक एण्ड जनरल स्टोर
गुलाब सागर,
जोधपुर-342 002 (राज.)
फोन : 2556120
मो. : 09414754307

जैन कैलेण्डर प्रारम्भकर्त्ता

श्री पदमचन्द जी कांकरिया

वर्तमान पर्यायि

डॉ. श्री पदमचन्द्र जी म. सा. (एम. ए., पी-एच. डी.)

: मुद्रक :
सौरव बुक एजेन्सी
ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड,
अंजना सिनेमा के सामने, आगरा-282 002
मो. : 9319203291, 8979260780

प्रकाशक
J.P.P. JAIN PRAKASHAN, CHENNAI®
3A, Vepery Church Road, Vepery, Chennai - 600 007. (M) 98844 97000

अब से नियमित कैलेण्डर J.P.P. JAIN PRAKASHAN, CHENNAI® से ही प्रकाशित होंगे। कैलेण्डर की सामग्री सर्वाधिकार सुरक्षित है। इसकी नकल करने के कार्य को कानूनी अपराध माना जायेगा, दु:साहस करने वाले के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायेगी। समस्त विवादों में न्याय क्षेत्र चेन्नई रहेगा।
J.P.P. JAIN PRAKASHAN, CHENNAI®

विश्व के सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर "पद्मोदय जैन कैलेण्डर" का इतिहास

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, जैन-जैनेतर दर्शनों के ज्ञाता, मधुर-ओजस्वी वाणी के धारक, सांसारिक अवस्था में ही जिन्होंने योग-निमित्तादि ज्ञान को साधना की कसौटी पर कसा ऐसे जोधपुर निवासी श्री पदमचन्द जी कांकरिया ने सन् 1984 में सर्वप्रथम अपने चिन्तन को लिपिबद्ध कर एकभवावतारी आचार्यसम्राट् श्री 1008 श्री जयमल जी म. सा. के नवम् पट्टधर जैनागम मर्मज्ञ आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री जीतमल जी म. सा. पण्डितप्रवर आगम व्याख्याता अनेकानेक विद्याओं के सिद्ध पुरुष आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री लालचन्द्र जी म. सा. का मांगलिक श्रवण कर अनंत श्रद्धा के केन्द्र गुरुदेव आचार्यप्रवर 1008 श्री पार्श्वचन्द्र जी म. सा. का कृपारूपी वरदहस्त प्राप्त करके जैन कैलेण्डर के नाम से विश्व का प्रथम जैन कैलेण्डर प्रारम्भ किया। इस कैलेण्डर में अनेकानेक जन एवं व्यवहार उपयोगी सामग्री के साथ-साथ आध्यात्मिक जानकारियाँ भी संकलित की गईं। पाँच वर्ष में कैलेण्डर अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। इसी अन्तराल में 1988 में श्री पदमचन्द जी कांकरिया ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करके डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा. के रूप में जय संघ में जिनशासन की अनुमोदना स्व-पर कल्याण रूप करने लगे। दीक्षा से पूर्व कांकरिया जी ने कैलेण्डर के पीछे के अनेक वर्षों तक छपने योग्य नवीनतम जन-उपयोगी लेख लिखे थे।

श्री पदमचंद जी कांकरिया के द्वारा प्रारम्भ किया गया विश्व का यह प्रथम जैन कैलेण्डर प्रारम्भ में भूधर जैन कला मंच के अध्यक्ष श्री पदमचन्द जी कांकरिया के दिशा-निर्देश में ही प्रकाशित किया गया। कांकरिया जी के दीक्षा लेने के पश्चात् 1988 में इसके प्रकाशन हेतु भूधर जैन कैलेण्डर प्रकाशन समिति बनाई गई जिस समिति ने करीबन छह वर्षों तक श्री निर्मलचंद जी कांकरिया के दिशा-निर्देश में कैलेण्डर प्रकाशन का कार्य किया एवं कैलेण्डर अर्द्ध-मूल्य में बिक्री हेतु उपलब्ध करवाये। तत्पश्चात् कैलेण्डर के प्रकाशन का कार्य श्री जयमल जैन मेमोरियल ट्रस्ट, चेन्नई (श्रीमान् सुगनचन्द जी गुगलिया परिवार की निजी ट्रस्ट) को सौंपा गया। ट्रस्ट ने नौ वर्ष तक प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। कैलेण्डर प्रकाशन के कार्य को गति प्रदान करने वाली सभी संस्थाओं को बहुत-बहुत धन्यवाद।

सन् 2005 से स्वाध्याय संगम, कैलेण्डर, पॉकेट कैलेण्डर, प्रवचन साहित्य आदि के प्रकाशन हेतु श्री अ. भा. जयमल जैन श्रावक संघ से सम्बन्धित श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई नामक संस्था स्थापित की गई। अब सन् 2019 से पद्मोदय जैन कैलेण्डर आदि के प्रकाशन का कार्य **J.P.P. JAIN PRAKASHAN, CHENNAI®** द्वारा किया जायेगा।

सर्वाधिकार सुरक्षित—J.P.P. JAIN PRAKASHAN, CHENNAI®

कुशल-हर्ष-भगवान-सूर्य-राज-नथमल्लजी। चौथ-बख्त रावत चाँद, नव स्वामी नामी नमूँ।।
जय-गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय-जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।